ahid Mehrani

Tola

राज पॉकेट बुक्स
३१३, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

७१२०६०५

चौधरी प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

तीसरी क्रान्ति

सुपर रघुनाथ की पत्नी रैना दरअसल गुलशनगढ़ नामक एक नन्हे-से आज़ाद देश की राजकुमारी होती है। बिना किसी बैक ग्राउण्ड के वह गुलशनगढ़ में नजर आती है। भूल से वह विजय के पिता ठाकुर साहब को गोली मार देती है। यह रहस्य भी सामने आता है कि विजय के पिता ठाकुर साहब दरअसल रैना के ताऊजी हैं, अर्थात् ठाकुर साहब गुलशनगढ़ के महाराजा ठाकुर अभयसिंह के बड़े भाई हैं और रैना अभयसिंह की बेटी। विजय के पिता का पूरा नाम ठाकुर निर्भयसिंह था। यह रहस्य केवल वही जानते थे कि रैना एक इस्टेट की राजकुमारी है परन्तु किसी ख़ास वजह से वे लगभग पच्चीस वर्षों से इस रहस्य को अपने सीने में दफन किए थे।

वास्तविकता यह थी कि ठाकुर साहब अपने पिता की नाजायज सन्तान थे। इनके पिता का नाम भानुप्रतापसिंह था और जवानी के बहाव में वहकर भानुप्रताप ने पारो नामक एक युवती से प्रेम किया। उसी प्रेम की निशानी ठाकुर निर्भयसिंह थे। पारो का एक भाई होता है—जब्बरसिंह। जब उसे पता

लगता है तो वह अपनी बहन को इंसाफ दिलाने महल में पहुंचता है किन्तु यहां का सम्राट भानुप्रताप का पिता राणा प्रतापसिंह एक बेहद क्रूर शासक है। वह पारो और जब्बर पर भानुप्रताप की अनुपस्थिति में अत्याचार करता है। उन्हें कैद में डाल देता है। कैद में ही निर्भयसिंह पैदा होता है। राणाप्रतापसिंह अपने प्लान के मुताबिक बच्चे को पैदा होते ही मार देना चाहता है लेकिन एक रहस्यमय लड़की की मदद से जब्बरसिंह निर्भय को लेकर कैद से भाग जाता है। पारो को बुरी तरह टॉर्चर करके राणाप्रताप बोरे में बन्द कर देता है और समुद्र में डलवा देता है। उधर राणाप्रताप पारो और जब्बर के बूढ़े बाप की निर्मम हत्या करवा देता है। जब्बर जंगासिंह नामक दस्यु का दोस्त बन जाता है। वहीं निर्भय का पालन-पोषण होता है। एक शेरनी खुद उसे दूध पिला-पिलाकर बड़ा करती है। वक्त गुजर जाता है।

उधर भानुप्रताप की शादी में जब्बर और जंगा गड़बड़ करने का असफल प्रयास करते हैं। इस मुठभेड़ में जंगा मारा जाता है लेकिन जब्बर से वह यह वचन ले जाता है कि वह उस समय तक राजमहल से नहीं टकराएगा जब तक कि निर्भय बड़ा नहीं हो जाता। इधर भानुप्रताप की शादी राधारमणी नामक एक राजकुमारी से होती है और उसकी कोख से अभयसिंह नामक शिशु का जन्म होता है। उधर निर्भयसिंह भयानक दस्यु बनता जा रहा है।

यह सारी कहानी विकास को अभयसिंह सुनाता है। एक घटना में सुपर रघुनाथ एक कमरे में एकसाथ दो रैनाओं को लड़ते देखकर चकित रह जाता है। बाद में इस कमरे में आग लग जाती है और रघुनाथ वहां बेहोश होकर गिर पड़ता है। दोनों रैनाएं एक-दूसरे के पीछे भागती हैं। इस टकराव में अलफांसे

एक रैना को न पहचानकर चाकू मार देता है परन्तु वह घायल अवस्था में भाग जाती है। सफेद लिबास वाली रैना अलफांसे से 'भैया-भैया' कहकर लिपट जाती है। उधर रघुनाथ को एक काले कपड़े और सफेद नकाब वाला इंसान आग से बचाने की चेष्टा करता है परन्तु जब्बरसिंह उसके मार्ग में बाधक बन जाता है। वह जब्बर को बेहोश करके रघुनाथ को ले जाता है। जब रघुनाथ को होश आता है तो सामने बैठा इंसान अपना नाम जब्बरसिंह बताता है। साथ ही यह भी कहता है कि उसे यहां लाने वाला क्रांति का देवता है।

विकास अभयसिंह को निर्भयसिंह समझता है क्योंकि उन दोनों की शक्ल एक है। वह जेम्स बाण्ड के पंजे से उन्हें एक काले नकाबपोश की मदद से छुड़ाता है। एक गुप्त तहखाने में पहुंच-कर अभयसिंह विकास को उपर्युक्त कहानी सुनाता है परन्तु अभी कहानी आधी ही हो पाई है कि विदेशी लोग उस स्थान को घेर लेते हैं। यहां अचानक पारो प्रकट होकर उन्हें बचाती है। पारो को यहां देखकर वे अवाक् रह जाते हैं क्योंकि अभयसिंह के बताए अनुसार पारो मर चुकी थी। न केवल पारो ही बल्कि राधारमणी और भानुप्रताप भी नजर आते हैं। जिस स्टीमर में ये थे, उस स्टीमर को दुश्मन एक हैण्ड ग्रेनेड द्वारा उड़ा देता है।

इधर विजय को राजनगर में अलफांसे का पत्र मिलता है। वह ब्लैक ब्वॉय और गुलफाम को लेकर गुलशनगढ़ पहुंचता है। इस्टेट की धरती पर कदम रखते ही दुश्मन गोलियों की बौछार से उसका स्वागत करता है। यहां रैना उन्हें मिलती है। यह वही रैना होती है जिसे अलफांसे चाकू मार देता है। इस रैना के गले में पड़े एक लॉकेट को देखकर ब्लैक ब्वॉय चौंक पड़ता है और कहता है कि ऐसा ही एक लॉकेट बचपन से उसके गले में है।

(यह आपने पहली क्रान्ति में पढ़ा।)

असली चक्कर यह है कि विश्व के तीन बड़े देश अमेरिका, ब्रिटेन और चीन किसी खास वजह से इस इस्टेट यानी गुलशनगढ़ पर कब्जा करना चाहते हैं। रैना और ब्लैक ब्वॉय के गले में पड़े हुए उस लॉकेट द्वारा यह रहस्य खुलता है कि ब्लैक ब्वॉय रैना का सगा भाई है। उसका असली नाम अजय है और वह गुलशनगढ़ के महाराजा अभयसिंह का पुत्र है। इस रहस्य को विस्तारपूर्वक खोलती हुई रैना बताती है कि उधर डाकुओं में जब्बर निर्भय को बड़ा कर चुका था। निर्भय के दिल में राजमहल के प्रति प्रतिशोध की भावना धधक रही होती है। एक रात को वह अकेला ही दस्युओं से भी छिपकर राजमहल में पहुंच जाता है और वहां से भानुप्रताप के बूढ़े पिता राणाप्रताप को उठाकर अड्डे पर ले आता है। यहां लाकर वह उनकी निर्मम हत्या कर देता है। साथ ही भानुप्रताप को चैलेंज भी देता है कि वह उसके सारे खानदान को समाप्त कर देगा। अभयसिंह की शादी के समय वह अपने चैलेंज के मुताबिक प्रतिशोध लेने आता है किन्तु तभी वहां आश्चर्यचकित कर देने वाले ढंग से पारो प्रकट होती है। वह निर्भय को रोकती है और उसे बताती है कि उसे और जब्बर को कैद से भगा देने वाली लड़की अभय की मां और भानु की पत्नी राधारमणी ही है। वहीं भानु भी अपनी वह मजबूरी बताता है जिसकी बेड़ियों में जकड़कर वह पारो को न अपना सका। निर्भयसिंह अपनी मां पारो की बातों से प्रभावित होता है और भानु इत्यादि को क्षमा कर देता है परन्तु जब्बर माफ नहीं करता। वह वहां से भी यही कहकर भाग जाता है कि वह प्रतिशोध लेगा।

निर्भय, अभय और भानु इत्यादि में सन्धि हो जाती है।

अभय की शादी सविता नामक राजकुमारी से हो जाती है। निर्भय और अभय में बेहद प्यार हो जाता है। परन्तु अचानक ही जब भानुप्रताप कहता है कि अब वह गद्दी निर्भय को सौंपना चाहता है तो पारो वहां से गायब हो ज.ती है तथा भानु को पत्र में सौगन्ध देकर यह कहती है कि वह गद्दी निर्भय को नहीं, बल्कि अभय को सौंपे और निर्भय को हमेशा के लिए गुलशनगढ़ से कहीं बाहर भेज दे। वह यह भी लिखती है कि उनके यह सब लिखने के पीछे एक जबरदस्त कारण है। ऐसा ही एकपत्र वह निर्भय के लिए भी छोड़ जाती है जिसमें उसने लिखा था कि वह गुलशन-गढ़ में न रहे।

पारो की कसम भानु तोड़ नहीं सके, इसलिए वे निर्भयसिंह को भारत में भेज देते हैं और अपनी सोर्स से पुलिस में भर्ती करा देते हैं। यही निर्भयसिंह अपनी प्रतिभा से आज राजनगर के इंस्पेक्टर जनरल हैं।

उधर अभयसिंह के यहां सबसे पहले एक पुत्र का जन्म होता है जिसे इस्टेट के कुछ दुश्मन गायब कर देते हैं। दरअसल वही खोया हुआ बच्चा ब्लैक ब्वॉय होता है। उसके पश्चात् अभय-सिंह के यहां एक कन्या का जन्म होता है लेकिन राज-ज्योतिषी बताता है कि यह कन्या बड़ी होकर अभयसिंह का वध करदेगी। अभयसिंह और उसके नवरत्न यह फैसला करते हैं कि कन्या को कहीं और पाला जाए और उसे कभी नहीं बताया जाए कि वह वास्तव में किसकी पुत्री है। इस काम में सहायता के लिए अभय-सिंह निर्भयसिंह को याद करते हैं जो राजनगर के आई० जी० बन चुके थे। कन्या की सारी परिस्थिति बताकर उन्हें सौंप दी जाती है। ठाकुर निर्भयसिंह इस कन्या को एक निर्धन परिवार को सौंप देते हैं तथा गुप्त रूप से धन देकर निर्धन जोड़े द्वारा

इस कन्या को पालते हैं। यही कन्या बड़ी होकर रैना बनती है। ठाकुर साहब खुद विजय के दोस्त रघुनाथ से जाकर रैना का विवाह उससे करवा देते हैं। वे यह रहस्य किसी पर भी नहीं खोलते कि रैना किसकी बेटी है। रैना और विजय तक ने भी कभी इन रहस्यों की कल्पना नहीं की है।

यह रहस्य उस समय खुलता है जब जेम्स बाण्ड रैना की एक हमशक्ल लड़की क्रीमिया को गुलशनगढ़ में राजकुमारी रैना बनाकर ले आता है। अभयसिंह तुरन्त समझ जाते हैं कि उनके गुलशनगढ़ में विदेशी लोग कुछ षड्यंत्र रच रहे हैं। दरअसल यह षड्यंत्र अमेरिका, चीन और ब्रिटेन तीन देशों का संयुक्त षड्यंत्र होता है। जब इस षड्यन्त्र की भनक अभयसिंह के कानों में पड़ती है तो वे बौखला जाते हैं और अपने मन्त्री गनपतसिंह द्वारा निर्भयसिंह के पास एक पत्र भेजते हैं जिसमें लिखा होता है कि वे रैना पर सारे रहस्य खोल दें और उसे लेकर फौरन गुलशनगढ़ चले आएं। परिस्थितियों में जकड़े ठाकुर निर्भयसिंह को यही करना पड़ता है। उधर जेम्स बाण्ड और क्रीमिया को अभयसिंह ने अपनी कैद में डाल दिया था। जैसे ही ठाकुर और रैना इस्टेट पर पहुंचते हैं---वहां तीनों देशों का संयुक्त आक्रमण होता है और इस नरसंहार में सब बिछुड़ जाते हैं। रैना के दो छोटे भाई-बहन मुन्ना और गुड़िया उसी के सामने मारे जाते हैं जिसके कारणवश रैना खूनी हो जाती है और दुश्मनों से बदला लेने के लिए रणक्षेत्र में कूद पड़ती है।

गनपतसिंह का एक लड़का है—शेरासिंह। इस नरसंहार में उसकी मां और बहन पर जो भयानक अत्याचार होते हैं, वे उसे यह कसम खाने पर विवश कर देते हैं कि वह विदेशियों से बदला लेगा।

असली थीम यही है—इसके बाद अलग-अलग पात्रों के साथ अलग-अलग घटनाएं घटती हैं। एक क्रान्ति दल सामने आता है। क्रान्ति का देवता बड़ा रहस्यमय है। रघुनाथ क्रान्तिकारी बन जाता है। उसका नम्बर सैंतीस है। एक घटना में वह निर्भय और पारो को सैंतीस नम्बर के रूप में माइक से बचाता है। उधर ग्रीफित विजय और गुलफाम को गिरफ्तार कर लेता है। ब्लैक ब्वॉय और रैना वहां से भाग निकलने में सफल हो जाते हैं। एक भूत-प्रेत विशेषज्ञ बताता है कि विजय राणाप्रतापसिंह का पुनर्जन्म है। इधर जेम्स बाण्ड जब्बरसिंह द्वारा अभयसिंह को यातना देता है। वह अभयसिंह से कोई रहस्य जानना चाहता है। क्रान्ति का देवता की मदद से यहां विकास पहुंचता है लेकिन यहां एक काले लिबास और सफेद नकाब वाला इन्सान विकास की सहायता करता है। यहां से भागने में क्रान्ति का देवता भी उनकी मदद करता है। अन्त में वह काले लिबास और सफेद नकाब वाला इन्सान मारा जाता है।

उधर जेम्स बाण्ड और फूचिंग मिलकर क्रान्तिकारियों को धोखा देने की एक योजना तैयार करते हैं। इस योजना के अनुसार फूचिंग को भानुप्रताप का मेकअप करना था और बाण्ड को यह अफवाह उड़ा देनी थी कि भानुप्रताप उनकी कैद से भाग गया है जैसा कि उनका विचार था—क्रान्तिकारियों ने तुरन्त भानुप्रताप से सम्बन्ध किया। विकास भानुप्रताप बने फूचिंग को अपने साथ ले गया। लेकिन जब एक गुफा में जाकर विकास ने फूचिंग को सफेद नकाबपोश की लाश दिखाई तो फूचिंग उछल पड़ा। यह लाश भानुप्रतापसिंह की थी। फूचिंग का रहस्य खुल गया और उसके बाद विकास ने फूचिंग का जो हाल किया—उनका अनुमान आप किताब पढ़कर ही लगा सकेंगे।

उधर सफेद नकाबपोश पुनः देखा गया। वह क्रान्ति के देवता से मिला। अपने अड्डे पर क्रान्ति के देवता ने सबको अलग-अलग कार्य सौंपे। इसके बाद सामने आता है एक कैदी। यह कैदी गनपतसिंह था। गनपतसिंह को अलफांसे ने कैद कर रखा था। अलफांसे एक नकाबपोश के रूप में उसके पास जाकर मिला। उसने गनपतसिंह को बताया कि इस समय जब्बरसिंह उसके पास कैद है और वह असली गनपत को नकली गनपत बनाकर दुश्मनों के बीच भेजना चाहता है।

इधर ब्लैक ब्वॉय और रैना भागते हुए गुलशनगढ़ शहर में पहुंच जाते हैं। यहां उनका टकराव सैनिकों से होता है। इस टकराव के बीच उन्हें विकास मिलता है। बाद में धनुषटंकार भी उन्हें लेकर अलफांसे के पास पहुंचता है। रैना, ब्लैक ब्वॉय, विकास, धनुषटंकार क्रीमिया को देखते ही भड़क उठते हैं, जो इस समय अलफांसे की कैद में थी। क्रीमिया क्योंकि बाण्ड की प्रेमिका और रैना की सूरत की है। अपनी इसी सूरत का लाभ उठाकर वह गुलशनगढ़ में राजकुमारी बनकर आ गई थी। रैना उसे मारने दौड़ती है। विकास क्रीमिया को मार देना चाहता है लेकिन अलफांसे रोक देता है। अलफांसे उन सबको बताता है कि बाण्ड ने गनपत को क्रीमिया की खोज में भेजा और अब वह असली गनपत को क्रीमिया के साथ महल में भेज रहा है लेकिन क्रीमिया अपने देश इंग्लैंड और बाण्ड से इतना प्यार करती है कि बाण्ड के पास जाते ही वह अलफांसे की सारी योजना उसे बता देती है और गनपत को बाण्ड की कैद में डलवा देती है।

किन्तु अगले ही दिन क्रान्ति का देवता खुद गनपत को बाण्ड की कैद से फरार कर देता है। क्रान्ति का देवता के प्लान के अनुसार गनपत को बीस नम्बर क्रान्तिकारी से मिलना था। वह

मिला भी—लेकिन दुर्भाग्य की बात यह हुई कि बीस नम्बर गनपत का लड़का शेरसिंह था। शेरा एक गजब का देशभक्त साबित होता है और वह अपने पिता को गद्दार समझकर मार डालता है।

उधर अलफांसे विकास, धनुषटंकार को यह बताता है कि उन्हें गुलशनगढ़ में लाने वाला वह स्वयं है। उसने बताया कि उनके साथ-साथ उसने रघुनाथ को भी राजनगर में स्थित अपने किराये के आदमियों द्वारा बेहोश करके हैलीकॉप्टर के जरिये यहां बुलवा लिया था। विकास के यह पूछने पर कि वह यह क्या कह रहा है तो अलफांसे बताता है कि चीन सरकार ने उससे सौदा किया था कि किसी तरह गुलशनगढ़ पर चीन का कब्जा करा दे। चीन सरकार उसे उस काम के बदले में काफी मोटी रकम देने को तैयार थी। आधी रकम अलफांसे ने ले भी ली थी, परन्तु जब उसे गुलशनगढ़ आकर पता लगा कि वास्तव में गुलशनगढ़ विजय, विकास और रैना इत्यादि की इस्टेट है तो उसने चीन सरकार को धोखा दे दिया। अभी यह उनकी यहां वार्ता चल ही रही थी कि माइक ने सैनिकों के साथ आकर उन सबको गिरफ्तार कर लिया।

इधर भूत-प्रेत विशेषज्ञ बताता है कि विजय स्वर्गवासी राजा-राणाप्रतापसिंह का दूसरा जन्म है। अपनी विद्या से वह विजय को राणाप्रताप बना देता है। अब विजय राणाप्रताप बन जाता है और वह निर्भयसिंह, पारो इत्यादि से बदला लेना चाहता है। अभी गुलशनगढ़ की स्थिति सामान्य हो भी नहीं पाई थी कि महल के ठीक सामने वाले वृक्ष पर फूचिंग का लटका हुआ जिस्म पाया गया। उसके नाक-कान गायब थे। उसकी जेब से विकास का एक पत्र निकला। उस समय तो सब बुरी तरह चौंक पड़े जब फूचिंग

के नाक-कान कीमिया की साड़ी के पल्लू में पाए गए। कीमिया तो भयभीत होकर बाण्ड से लिपट गई। विकास ने इस पत्र में बाण्ड को धमकी दी थी कि वह कीमिया को उठाकर ले जाएगा। पत्र में साफ चैलेंज था कि अगर बाण्ड रोक सके तो रोक ले। बाण्ड विकास का यह चैलेंज मन-ही-मन स्वीकार कर लेता है।

(विस्तृत हाल जानने के लिए पढ़ें, राज पॉकेट बुक्स, ३१३, दरीबा कलां, दिल्ली-६, द्वारा प्रकाशित 'पहली क्रांति व दूसरी क्रांति')

अब आगे का कथानक आप प्रस्तुत उपन्यास 'तीसरी क्रांति' में पढ़ें।

A W M

□□
□□

जिस सड़क पर मोटरसाइकल दौड़ रही थी, वह एकदम सूनी थी। अकेली मोटरसाइकल ही उस सड़क का सीना रौंद रही थी। उसकी गति अस्सी मील प्रति घण्टा की गति से किसी भी प्रकार कम नहीं थी। उसकी गद्दी पर केवल एक ही सवार था जो उसका संचालन कर रहा था। चालक के सारे जिस्म पर एकदम स्याह लिबास था। चेहरे पर एकदम काला नकाब था। नकाब में से उसकी लाल आंखें झांक रही थीं। मोटरसाइकल को वह घुमावदार पहाड़ी सड़क पर बड़ी दक्षता के साथ संचालित कर रहा था। उसके चारों ओर काजल-सा अन्धकार था। इस अन्धकार को अगर तोड़ रही थी तो वह थी मोटरसाइकल की लाइट, जो मोटरसाइकल का मार्ग-दर्शन कर रही थी।

इस अंधेरे के बावजूद भी उस इंसान के स्याह लिबास के

सीने वाले भाग पर लिखा हुआ नम्बर स्पष्ट चमक रहा था। सफेद चमचमाते अंकों में लिखा था—पैंतालीस।

मोटरसाइकल इस प्रकार दौड़ रही थी मानो चालक को लक्ष्य का ज्ञान हो। घुमावदार सड़कों पर वह बराबर घूमती जा रही थी। मोड़ पर काफी हद तक मोटरसाइकल लेट जाती थी। आज की रात उसे एक विशेष कार्य सौंपा गया था।

किन्हीं विचारों में गुम वह उड़ा चला जा रहा था।

अचानक—

एक मोड़ पर मुड़ते ही वह बुरी तरह चौंक पड़ा। एक मिनट के लिए तो उसका हैण्डिल डगमगा-सा गया। हेड-लाइट का प्रकाश मोड़ पर घूमते ही—दूर—सड़क के बीचोबीच खड़े किसी भिखारी पर पड़ा। उसे यहां सुनसान सड़क पर भिखारी के तो क्या—चिड़िया के बच्चे तक की आशा नहीं थी। उसने एक ही झलक में देख लिया था कि भिखारी की हालत बेहद खराब थी। लम्बी-लम्बी दाढ़ी···सफेद और काले बालों की खिचड़ी पकाते हुए बाल···जिस्म पर चीथड़ों के रूप में लटका लिबास···और एक फटा-पुराना कम्बल···दहकती हुई लाल आंखें।

मोटरसाइकल का हैंडिल केवल एक क्षण के लिए डगमगाया था—अगले ही पल संयत हो गया। अलबत्ता नम्बर पैंतालीस ने उसकी गति अवश्य कुछ कम कर दी थी। भिखारी के करीब पहुंचती जा रही मोटरसाइकल की हैडलाइट सीधी उसी पर पड़ रही थी···। मिचमिचाती-सी आंखों से भिखारी ने एक बार लाइट को घूरा और अगले ही पल काला नकाबपोश उछल पड़ा।

सामने खड़ा हुआ भिखारी दायें हाथ की दो उंगलियों से बायें पैर का घुटना खुजाने में व्यस्त था। इस बार मोटरसाइकल

का हैंडिल बुरी तरह लड़खड़ा-सा गया। एकदम ब्रेक चरमरा गए और मोटरसाइकल अपने स्थान पर जाम हो गई। प्रकाश सीधा भिखारी पर पड़ रहा था। वह लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ा···साथ ही उसने नकाबपोश को मोटरसाइकल की लाइट ऑफ करने का भी आदेश दे दिया था। पैंतालिस नम्बर ने तुरन्त मोटरसाइकल का इंजन वन्द कर दिया—लाइट ऑफ हो गई।

सामने काजल-सा अंधकार छा गया।

उसके सामने भिखारी की ओर से एक शक्तिशाली टॉर्च रोशनी हुई। प्रकाश सीधा पैंतालिस नम्बर के नकाब पर पड़ा, उसके बाद टॉर्च का प्रकाश-दायरा उसके नकाब से रेंगकर सड़क पर आया और धीरे-धीरे वह दायरा सड़क के एक तरफ को बढ़ने लगा।

नकाबपोश की आंखें उस दायरे का पीछा कर रही थीं।

सब कुछ बड़ा रहस्यमय-सा लग रहा था। चारों ओर एकदम मौत जैसा सन्नाटा था। वहां कोई ध्वनि अथवा आहट नहीं थी। कोई कुछ बोल नहीं रहा था। टॉर्च का प्रकाश-दायरा एक ओर बढ़ता जा रहा था···पैंतालिस नम्बर की आंखें निरन्तर उसका पीछा कर रही थीं।

सड़क को पार करके दायरा सड़क पर रेंगने लगा। फिर जल्दी ही दो पत्थरों पर जाकर स्थिर हो गया। इनमें एक पत्थर बड़ा था और दूसरा छोटा। छोटा पत्थर बड़े वाले पत्थर के ऊपर रखा था परन्तु इन दोनों के बीच से एक काला कागज झांक रहा था। पैंतालिस नम्बर की आंखें उसी कागज पर स्थिर हो गईं। टॉर्च का प्रकाश-दायरा स्वयं वहां स्थिर हो गया था।

पूरे एक मिनट दायरा स्थिर रहा।

इस बीच भी वहां मौत जैसा सन्नाटा ही छाया था। अचा-

तक एक मिनट के बाद टॉर्च बुझ गई। उस ओर भी अंधेरा छा गया। पैंतालिस नम्बर नकाबपोश हल्के से चौंका। उसके मस्तिष्क को हल्के से एक झटका लगा। कुछ पल वह ठगा-सा अपने स्थान पर खड़ा रहा, फिर अपने स्याह लिबास से एक पेंसिल टॉर्च निकाली और उसे रोशन करके आगे बढ़ा। शीघ्र ही वह उन पत्थरों के क़रीब पहुंच गया और पत्थरों के बीच से वह काला कागज निकाल लिया। कागज खोलकर पेंसिल टॉर्च के प्रकाश में उसने पढ़ा। सफेद पेंसिल से उसमें लिखा था—

'नम्बर पैंतालिस !

जो काम तुम्हें सौंपा गया है, वह काम पूरा नहीं होगा। जहां तुम जा रहे हो, स्थान बदल दिया गया है। पहले तुम्हें इसी सड़क पर आगे जाना था परन्तु अब यहां से दो फर्लांग दूर जाते ही दायीं ओर मुड़ने वाली एक रोड पर तुम्हें मुड़ जाना होगा। तुम जानते हो कि वहां से पांच मील आगे 'सन फैंटस' नामक एक स्थान है। तुम्हारा काम वहीं होगा। तुम्हारा शिकार 'बी बारह' में होगा। इस कार्य को तुम किस ढंग से करते हो, यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर करता है।

—क्रान्ति का देवता'

पैंतालिस नम्बर ने पढ़ा, होंठों पर एक मुस्कान उभरी। अपने चीफ की इस रहस्यमय कार्य-प्रणाली पर वह दंग रह गया, परन्तु सोचने-विचारने में उसने अपना अधिक समय व्यर्थ नहीं किया। तेजी के साथ मोटरसाइकल की ओर बढ़ा, स्टार्ट की और आगे बढ़ गया।

भिखारी दुबारा उसे कहीं नजर नहीं आया।

पैंतालिस नम्बर ने इस विषय पर दुबारा सोचने की चेष्टा नहीं की। अब वह अपना ध्यान 'क्रान्ति का देवता' से हटाकर

यह सोचने में लगा रहा था कि अपना कार्य उसे किस प्रकार पूर्ण करना है। वह उस काले कागज में लिखे अनुसार ही आगे बढ़ता रहा।

शीघ्र ही वह मंजिल पर पहुंच गया।

'सन फैंटम' नामक स्थान से थोड़ा पहले ही उसने मोटर-साइकल रोकी और उसे एक बड़े से पत्थर की बैक में छुपाकर आगे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गया। इस समय वह एक पहाड़ी पर चढ़ रहा था। वह भली भांति जानता था कि इस पहाड़ी के पीछे 'सन फैंटम' नामक स्थान है। लगभग एक घण्टे के कठिन परिश्रम के पश्चात् वह पहाड़ी के शीर्ष पर पहुंच गया। उसने देखा—

सामने—पहाड़ी के नीचे।

ऐसा लगता था, जैसे कोई कारवां वहां आकर ठहरा हो। अनेक मशालें जल रही थीं। दूर से ही सब चमक रहा था। थोड़े-से हिस्से में अनेक झोंपड़ियां बनी हुई थीं। झोंपड़ियों में अन्धकार था। मैदान जैसे स्थान में सैनिक मुस्तैदी के साथ टहल रहे थे। उस मैदान में ही वे झोंपड़ियां थीं और मैदान के चारों ओर करेण्टयुक्त कटीले तारों की ऊंची दीवार थी। इतनी दूर से जो झोंपड़ियां चमक रही थीं, दरअसल वे झोंपड़ियां नहीं बल्कि बैरक थे—मजबूत बैरक।

इन बैरकों में गुलशनगढ़ की नई सरकार के कैदी थे। नम्बर पैंतालिस का लक्ष्य 'बी बारह' यानी बैरक नम्बर बारह था। ठंड कुछ अधिक ही बढ़ गई थी कदाचित इसीलिए सैनिकों ने मैदान में एक स्थान पर आग जला ली और हाथ तापने लगे।

नम्बर पैंतालिस ने समय व्यर्थ करना उचित नहीं समझा और उसने अपने काले लिबास से एक कटार खींच ली। कटार

संभालकर वह धीरे-धीरे पहाड़ी के नीचे 'सन फैंटम' की ओर उतरने लगा। बहुत जल्दी ही वह मैदान के चारों ओर खिंची कांटों की ऊंची दीवार के समीप अंधेरे में पड़ा था। इसके पश्चात उसने अपने रेंगने का क्रम जारी किया।

कोहनियों और घुटनों के बल रेंगता हुआ वह बैरकों के पिछले भाग में पहुंच गया, परन्तु यहां पहुंचकर भी उसके हाथ निराशा ही लगी। जिस हिस्से को वह पिछला हिस्सा समझ रहा था...वह अगले भाग से भी अधिक खतरनाक था...क्योंकि इधर सैनिकों के डेरे इत्यादि थे। अतः इधर सैनिकों की संख्या बहुत अधिक थी इसलिए वह पुनः घूमा और उसी प्रकार रेंगकर सामने पहुंच गया। एक पल वह अंधेरे में पड़ा हुआ कुछ सोचता रहा...परन्तु उसे कोई ऐसी तरकीब नजर नहीं आ रही थी जिसके जरिये वह इन सैनिकों से नजर बचाकर बैरक नम्बर बारह तक पहुंच सके।

अभी वह सोच ही रहा था कि सन्नाटा किसी वाहन के इंजन की आवाज ने भंग किया। इस आवाज को सुनते ही हाथ तापते सैनिक भी एक साथ उछलकर खड़े हो गए। नम्बर पैंतालिस ने गर्दन घुमाकर उस ओर देखा---दूर पहाड़ी के नीचे वाली सड़क पर से होती हुई एक जीप इधर ही आ रही थी।

नम्बर पैंतालिस के दिमाग में तेजी से एक बात आई और यह विचार दिमाग में आते ही वह खुद को अंधेरे में रखकर सड़क की ओर भागने लगा। निसन्देह वह काफी तेजी के साथ दौड़ रहा था परन्तु सतर्कता का दामन उसने एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा था। भागते समय उसने कटार वापस अपने लिबास में छुपा ली थी। कदाचित उसने यह सोचा था कि अभी कटार का कोई विशेष काम नहीं है। जल्द ही वह सड़क पर

पहुंच गया। यह सड़क चौड़ाई की दृष्टि से बहुत छोटी थी। एक बार सड़क पर से होता हुआ केवल एक ही वाहन गुजर सकता था। पैंतालिस नम्बर एक ऐसे पत्थर की बैक में हो गया जो सड़क के काफी नजदीक पड़ा था। अभी जीप को यहां आने में दो-तीन मोड़ पार करने थे। जीप बार-बार नजर आती थी और मोड़ पर घूम जाती थी।

पैंतालिस नम्बर ने इस खाली समय का लाभ उठाया। एक झाड़ी पर चढ़कर उसने काफी शक्ति लगाने के बाद एक पत्थर सड़क पर लुढ़का दिया। पर्याप्त आवाज की उत्पत्ति करता हुआ वह सड़क के ठीक बीच में जाकर गिरा। तभी अन्तिम मोड़ से घूमकर जीप सामने आ गई। पैंतालिस नम्बर फुर्ती के साथ समीप पड़े पत्थर की बैक में हो गया।

कुछ ही देर बाद जीप की हैडलाइटों का प्रकाश सड़क के बीचोबीच पड़े पत्थर पर पड़ा जो अब तक हिल रहा था। जीप एक झटके के साथ रुक गई। तभी जीप के अन्दर से अंधेरे में एक आवाज गूंजी—

—"इस सड़क पर आए दिन पत्थर गिरते रहते हैं।" यह आवाज जेम्स बाण्ड की थी।

—"इसे हटवाओ न बाण्ड !" निसन्देह यह क्रीमिया थी।

—"तुम चिन्ता मत करो।" बाण्ड ने थोड़े मजाक के मूड में क्रीमिया से कहा—"हमारी जीप इस पत्थर के ऊपर से होकर नहीं जाएगी। जावेगा, जरा इस पत्थर को हटाओ।"

जावेगा नामक एक सैनिक अपने कुछ साथियों के साथ जीप से बाहर आया और वे सब मिलकर उस भारी पत्थर को हटाने लगे। इधर जीप में बैठे जेम्स बाण्ड ने इस खाली अवसर का लाभ उठाया··यानी उसने एक झटके के साथ अपने होंठ

क्रीमिया के होंठों से चिपका दिए···क्रीमिया ने दूने जोश के साथ इस क्रिया में बाण्ड का साथ दिया। वे दोनों अथवा पत्थर उठाते हुए सैनिकों में से कोई क्या जानता था कि पैंतालिस नम्बर रेंगता हुआ जीप के नीचे आ गया और जब सैनिकों ने जीप स्टार्ट की तो पैंतालिस नम्बर नीचे लटककर जीप के साथ ही चल दिया। कंटीले तारों का द्वार खोलदिया गया और जीप मैदानमें प्रविष्ट हो गई। बैरकों के करीब जाकर रुकी। जेम्स बाण्ड, क्रीमिया तथा अन्य सैनिक उतर गए।

पैंतालिस नम्बर अपने स्थान पर चिपका हुआ था।

वह जीप के नीचे से जेम्स बाण्ड, क्रीमिया और अन्य सैनिकों के पैर और टांगों का कुछ भाग देख सकता था। उस समय वह हल्के से चौंका जब उसने देखा कि कुछ सैनिक उस जीप के चारों ओर फैलते जा रहे हैं। एक पल बाद ही वह समझ गया कि वास्तव में इस जीप को चारों ओर से घेर लिया गया है। अभी वह सोच ही रहा था कि वह क्या करने की स्थिति में है कि—

—"हम जानते हैं मिस्टर कि तुम जीप के नीचे हो।" एका-एक वहां जेम्स बाण्ड की आवाज गूंजी—"जीप चारों ओर से घिर चुकी है···निकलकर बाहर आ जाओ।"

क्रीमिया तक जेम्सबांड की इस हरकत पर आश्चर्यचकित-सी रह गई। उसने तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि जीप के नीचे कोई छुप चुका है। बाण्ड के चेहरे से भी कुछ जाहिर नहीं हुआ था।

इधर पैंतालिस नम्बर ने यह चेतावनी सुनी—एक पल उसने सोचा, कटार उसके हाथ में आ चुकी थी। परन्तु इससे पूर्व कि वह कुछ कर पाए, बाण्ड की चेतावनी पुनः गूंजी।

तीसरी चेतावनी पर नम्बर पैंतालिस आखिर विवश होकर

बाहर आ ही गया। उसे सैनिकों ने चारों ओर से कवर कर लिया था। जेम्स बाण्ड ठीक सामने खड़ा था।

—"जब सड़क पर पड़े पत्थर पर जीप की हैडलाइट पड़ी तो पत्थर हिल रहा था···" जेम्स बाण्ड ने बड़े आराम से कहा —"जो इस बात का प्रतीक था कि पत्थर हमारी जीप के वहां पहुंचने से कुछ ही देर पहले गिरा था और कम-से-कम मुझ जैसा जासूस इसघटना को इत्तफाक नहीं मानसकता था, अतः मैं सतर्क हो गया। उसके बाद मैंने खुद को कीमिया के चुम्बन में व्यस्त दिखाया। लेकिन तुमने जेम्स बाण्ड के विषय में एक बात अवश्य सुनी होगी और वहयह कि बाण्ड प्यार तो करता है लेकिनप्यार के कारण कभी मार नहीं खाता। चुम्बन तो मैं निसंदेह ले रहा था लेकिन मेरी नजर बराबर उस इंसान पर थी जिसने पत्थर सड़क पर डालकर हमारा रास्ता रोका था और वह तुम निकले —तुम्हें जीप के नीचे प्रविष्ट होते हुए मैं देख चुका था।"

पैंतालिस नम्बर शांत खड़ा रहा। बाण्ड पुनः बोला—

—"मैं जानता हूं कि तुम यहां विजय और गुलफाम को निकालने आए थे।"

पैंतालिस नम्बर फिर भी शान्त रहा।

—"अब तुम अपना नकाब उतारने से पहले बता दो कि तुम कौन हो?"

—"गुलशनका बेटा।" पैंतालिसनम्बर ने छोटा-सा उत्तर दिया।"

—"जावेगा!" जेम्स बाण्ड ने सैनिक को आदेश दिया— "इसका नकाब नोंच लो।"

आदेश प्राप्त होते ही जावेगा बढ़ा। पैंतालिस नम्बर कुछ भी करने की स्थिति में नहीं था। वह शांत खड़ा रहा। जावेगा

उसके करीब पहुंचा और एक झटके के साथ पैंतालिस नम्बर का स्याह नकाब नोंच लिया। जेम्स बाण्ड और कीसिया चौंक पड़ें। दोनों के मुंह से अलग-अलग शब्द निकले—

—"अभय"'निर्भय'''"

□ □

□ □

राजमहल का दरबारी विशाल हॉल'''!

आज यह हॉल विशेष रूप से सजाया गया था। सारा हॉल ट्यूबलाइटों से जगमगा रहा था। राजसी कुर्सियां बिछी हुई थीं''' ऊपर सम्राट का सिंहासन सुशोभित था। बिल्लौरी कांच के फानूस लटक रहे थे। हीरों से सिंहासन चमक रहा था। सारे हॉल में तेज प्रकाश था। यह महल का दीवान-ए-खास था। अनेक राजसैनिक हॉल की दीवारों से लगे खड़े थे। आज गुलशनगढ़ के सम्राट के सामने गुलशनगढ़ इस्टेट के कुछ अपराधियों को पेश किया जाना था। हॉल में राजसैनिकों की वर्दी जिस्म पर डाटे चीनी, अमेरिकन और ब्रिटेनी सैनिक खड़े थे। तीनों देशों के अनेक उच्चाधिकारी दरबार की सम्मानित कुर्सियों पर बैठे थे। राजमहल के इस हॉल के बीच बने अलग-अलग खम्भों से रैना, ब्लैक ब्वॉय, विकास, अलफांसे और ठाकुर निर्भयसिंह बंधे हुए थे। मोटी-मोटी जंजीरों से उन्हें बांधा गया था।

तब जबकि आज के इस दरबार की कार्यवाही शुरू की गई।

सबसे पहले थोड़े से ऊंचे मंच पर जेम्स बाण्ड आया। बाण्ड के जिस्म पर इस समय सम्राट के मंत्री का लिबास था। वह

मंच पर आया और ऊंची आवाज में बोला—

—"कुछ ही देर में जहांपनाह तशरीफ ला रहे हैं। आज वे रियासत के कुछ गद्दारों को बतायेंगे कि उनकी सजा क्या है। ''जहांपनाह आ रहे हैं।"

उसके इन शब्दों के बाद वहां एकदम सन्नाटा छा गया। फिर अचानक सारे हॉल में संगीत गूंजने लगा। सबके जिस्म एकदम तन गए। यह संगीत राजसी शहनाइयों का था जो सम्राट के आगमन का प्रतीक था। सबकी निगाह हॉल के एक ओर बनी बारादरी की ओर घूम गई।

बारादरी के फर्श पर कीमती गद्देदार कालीन बिछा हुआ था।

अचानक संगीत की लहरों में झनाके होने लगे। बारादरी में एक इंसान नजर आया। उसके गोरे-चिट्टे जिस्म पर सम्राट का लिबास था। धीरे-धीरे परन्तु सम्राट की भांति एक विशेष अकड़ के साथ वह बारादरी में चलता हुआ हॉल की ओर आ रहा था। संगीतकी लहरें उसके कदमों का साथदे रही थीं। सम्राट के साथही महारानी के लिबासमें एक सुन्दर नारी थी।

विकास, ब्लैक ब्वॉय, रैना, अलफांसे और निर्भय इत्यादि ने बारादरी की ओर देखा।

वे सभी बुरी तरह चौंके।

वह सम्राट विजयके अतिरिक्त कोई नहीं था। उसके बराबर में चलती हुई महारानी के लिबास में क्रीमिया के अतिरिक्त कोई नहीं थी। विजय को इस रूप में देखते ही सारे कैदी बुरी तरह चौंके। विजय का चेहरा किसी भट्ठी की भांति तपकर लाल हो रहा था। आंखें अंगारों से मुकाबला कर रही थीं। शून्य में टिकी हुई आंखें''ऐसा लगता था जैसे विजय नींद में

चल रहा हो।

उसकी चाल में राजसी अकड़ थी।

बारादरी पार करके वह जैसे ही हॉल में आया—अनेक सैनिकों की एड़ियां फैलीं और फैलाकर तीव्र झटकों के साथ सम्मान दर्शाती हुई जुड़ते हुए बज उठीं। सम्मानित कुर्सियों पर बैठे लोग आदर के साथ खड़े हो गए। दरबार में आकर विजय ने अपनी जलती हुई आंखों से अपने पिता ठाकुर निर्भयसिंह, विकास, अलफांसे, रैना और ब्लैक ब्वॉय इत्यादि को देखा—

—"गुरु !" विकास के मुंह से निकल पड़ा।

—"विजय भैया !" रैना ने भी पुकारा।

परन्तु विजय ने उनकी ओर लेशमात्र भी ध्यान नहीं दिया और उन्हीं स्थिर कदमों से आगे बढ़ गया। तभी उनके मंत्री के रूप में जेम्स बाण्ड सामने आया और सम्मान दर्शाता हुआ गर्दन झुकाकर बोला—

—"आइए सम्राट'''अपना स्थान ग्रहण कीजिए।"

बड़ी अदा के साथ विजय ने अपना दायां हाथ फैला दिया। उसके साथ चलती हुई क्रीमिया ने तुरन्त उसका हाथ अपनी गोरी-गोरी हथेलियों के बीच ले लिया और फिर वे सिंहासन की ओर बढ़ गए। विजय सिंहासन पर बैठ गया—क्रीमिया उसके बायें पक्ष पर बैठी थी।

सारे दरबार में मौत जैसा सन्नाटा था—संगीत की लहरें भी अपना मुखड़ा छुपा चुकी थीं।

—"दरबार की कार्यवाही शुरू की जाए।" विजय ने आदेश दिया।

तुरन्त जेम्स बाण्ड अपने स्थान से खड़ा हुआ और बोला—"आज आलमपनाह की अदालत में उस मुजरिम को पेश किए

गया है जिसने कुंवर भानुप्रताप की एक रखैल पारो की कोख से जन्म लिया था। आलमपनाह उस गुस्ताख को अच्छी तरह जानते हैं कि वह मुजरिम कौन है क्योंकि एक बार वह आलम-पनाह की जान लेने की असफल कोशिश कर चुका है।"

जेम्स बाण्ड का कहना था कि विजय ने बड़ी खूंखार दृष्टि से खम्बे से बंधे अपने पिता ठाकुर निर्भयसिंह को घूरा। ठाकुर की समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है? उन्होंने भी विजय की आंखों में आंखें डाल दीं। जो विजय आज तक अपने पिता ठाकुर निर्भयसिंह से कभी आंख नहीं मिला सका था आज उसने जलते हुए नेत्रों से ठाकुर को घूरा—उसकी आंखों में ऐसे भयानक भाव थे कि खुद ठाकुर भी आज उससे आंख नहीं मिला सके। उन्होंने नजरें झुका लीं।

विजय की आंखों में उन्हें मौत नजर आई थी।

—"गर्दन क्यों झुका ली हरामी की औलाद?" बड़े भयंकर स्वर में विजय गुर्रा उठा—"सम्राट महाराजा राणाप्रताप से आंख मिला—आज हमारी अदालत तेरा फैसला करेगी।"

निर्भयसिंह चौंक पड़े—विकास उछल पड़ा। अलफांसे, रैना और ब्लैक ब्वॉय दंग रह गए। सबने चौंककर एक बार विजय को देखा परन्तु विजय उन सबकी स्थिति से लापरवाह होकर गरजा—

—"इस कुत्ते को खोल दिया जाए। हम खुद इसे सजा देंगे।

—"गुरु! यह क्या कह रहे हो?" चकित-सा विकास चीख पड़ा।

—"चुप रहो लड़के!" विजय गुर्रा उठा—"अपनी शान में गुस्ताखी करने वालों को हम सजा-ए-मौत देते हैं—पहले हम

नाजायज संतान को बताएंगे कि सम्राट राणा प्रतापसिंह से दुश्मनी लेना कितना महंगा पड़ता है—बीच में बोलकर अगर तुमने हमारी शान में गुस्ताखी की तो दहकती भट्ठी तुम्हारी मौत होगी।"

—"विजय !" अलफांसे चीखा—"होश में आओ।"

—"मन्त्री !" चीख पड़ा विजय—"यह गुस्ताख कौन है —इसे बता दो कि हमारा नाम विजय नहीं, सम्राट महाराजा राणाप्रतापसिंह है।"

—"यह एक गुस्ताख है जहांपनाह !" जेम्स बाण्ड एकदम अपने स्थान से खड़ा होता हुआ बोला—"अगर हुक्म हो तो इसकी चमड़ी जिस्म से अलग करके इसे गुस्ताखी की सजा दूं ?"

—"इन गुस्ताखों को सजा हम देंगे।" विजय बोला—"हमारा हण्टर लाया जाए।"

—"जैसा आदेश सम्राट !" कहने के साथ ही एक कांटेदार हण्टर लेकर जेम्स बाण्ड सिंहासन पर चढ़ता चला गया। इधर एक सैनिक ने ठाकुर निर्भयसिंह को आजाद कर दिया।

विजय ने हण्टर संभाला और स्थिर कदमों से सिंहासन से उतरकर नीचे आया। ठीक निर्भयसिंह के सामने आकर वह गर्जा—"बोल सूअर के पिल्ले, तेरा मामा कहां है ?"

—"विजय !" चीख पड़े ठाकुर साहब—"यह क्या पागलपन है ?"

लेकिन विजय ने जवाब जुबान से नहीं, हण्टर से दिया। उसका हाथ तेज़ी के साथ उठा और हण्टर हवा में लहराकर तड़ाक से ठाकुर के जिस्म पर पड़ा।

ठाकुर साहब के कंठ से एक चीख निकल गई।

उसके बाद—

जैसे पागल हो गया विजय। बिजली की-सी गति से उसका हाथ चलने लगा। बड़ी बेरहमी के साथ वह ठाकुर निर्भयसिंह के जिस्म पर हण्टर बरसाने लगा। ठाकुर की चीखों से सारा दरबार कांप उठा···यह भयानक दृश्य देखते-देखते विकास का चेहरा सुर्ख होता चला गया···। वह होश गंवा बैठा और चीखा—

—"बन्द करो गुरु···गुरु, बन्द कर दो यह जलालत··· वरना···वरना···!"

—"हा···हा···हा···!"

विजय के भयानक कहकहे से सारा दरबार दहल उठा। पलटकर उसने जलते हुए नेत्रों से विकास की ओर देखा और एक भी क्षण खोए बिना उसने तड़ाक से हण्टर उसके जिस्म पर मारा और गुर्राया—

—"वरना क्या करेगा लड़के···?"

—"गुरु···!" भड़क गया विकास—"कसम तुम्हारे चरणों की···बन्द कर दो यह जलालत वरना चीर-फाड़कर सुखा दूंगा। उस गुरु की इज्जत नहीं करूंगा गुरु, जिसके हाथ पिता पर उठें···।"

—"हा···हा···हा!" एक बार पुनः विजय ने किसी राक्षस की भांति अट्टहास लगाता—"यह लड़का सम्राट राणाप्रताप को चीर-फाड़कर सुखाएगा···हा···हा···हा···! मन्त्री, इस लड़के को खोल दो।"

—"यह लड़का बड़ा खतरनाक है जहांपनाह!" जेम्स बाण्ड ने कहा।

—"मन्त्री!" बुरी तरह गुर्रा उठा विजय—"जो आदेश दिया है, उसका पालन करो वरना चमड़ी उधेड़ दी जाएगी।

लड़के को खोलो—हम भी तो देखें—राणाप्रताप को कैसे चीरा जाता है ?"

—"विजय ! विजय, तुम पागल हो गए हो ।" फर्श पर पड़े हुए ठाकुर निर्भयसिंह चीखे ।

लेकिन विजय ने तेजी से पलटकर एक हण्टर उनके जिस्म पर मारा और गुर्राया—"बता हरामी की औलाद—बोल, कहां है तेरा मामा ? कहां है वो जब्बरसिंह जिसने हमारी शान से मजाक किया है ?"

उसके बाद वह ठाकुर साहब के जिस्म पर बेइन्तहा हण्टर बजाता ही चला गया । इधर विकास को खोल दियागया । खुलते ही वह दौड़कर विजय के सामने पहुंचा और चीखा—

—"रुक जाओ···रुक जाओ गुरु, वरना चेले का हाथ उठ जाएगा ।"

पुनः विजय ने बड़े जोर से कहकहा लगाया । फिर एक हण्टर विकास को मारा !

चीखकर विकास फर्श पर जा गिरा ।

यह देखकर रैना जैसे पागल हो गई । वह चीख पड़ी—

—"रुक जाओ भैया ! बन्द कर दो ये दरिन्दगी···रुक जाओ !"

लेकिन बिजय पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ना था और न ही पड़ा । वह उसी प्रकार कहकहे लगाता रहा और बेइन्तहा निर्भयसिंह और विकास के जिस्म पर कोड़े बरसाता रहा ।

अलफांसे और ब्लैक ब्वॉय आश्चर्यजनक रूप से चुप थे ।

विकास हण्टर खा रहा था लेकिन चीख रहा था । रह-रहकर वह गुरु से यह जलालत बन्द करने के लिए कह रहा था ।

लेकिन जब विजय नहीं रुका तो अचानक विकास किसी शेर की भांति गुर्रा उठा। उसका सम्पूर्ण चेहरा सुर्ख और आंखें लाल थीं। फर्श से उछलकर वह विजय के सामने खड़ा होकर चीखा—

—"रुक जाओ गुरु—रुक जाओ—वरना लिहाज की दीवार टूटने वाली है।"

लेकिन विजय ने एक अट्टहास लगाया और उसका हण्टर वाला हाथ पुन: विकास पर उठा परन्तु इस बार विकास ने जो कुछ किया उसे सारा राजमहल देखता ही रह गया। बन्दर की-सी फुर्ती से उसने खुद को हण्टर से बचाया और चीते जैसी भयानकता के साथ विजय पर जम्प लगा दी। कदाचित विजय को विकास से ऐसी आशा नहीं थी इसीलिए वह खुद को सम्हाल नहीं सका और फर्श पर गिर गया। उसी समय ठाकुर निर्भय-सिंह चीखे—

—"मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा विजय !" साथ ही उन्होंने विजय पर जम्प लगा दी।

तभी कुछ सैनिक और जेम्स बॉण्ड इत्यादि उधर झपटे परन्तु—

—"ठहरो—ऽ—!" विजय चीख पड़ा—"सम्राट महा-राणा प्रताप अपने इन दुश्मनों की ताकत अकेले देखेंगे।"

सब एकदम ठिठक गए।

तब तक विजय ने अपने पिता ठाकुर निर्भयसिंह को दोनों टांगों पर रखकर हवा में उछाल दिया। हवा में लहराकर ठाकुर साहब दूर फर्श पर जा गिरे परन्तु तब तक विकास विजय पर जम्प लगा चुका था। विजय ने उसे अपने दोनों हाथों पर रोका···लेकिन विकास भी पूरा था···उसने एक जबरदस्त घूंसा विजय के जबड़े पर रसीद कर दिया···। परन्तु विजय वास्तव

में उसका गुरु था'''न जाने उसने कौन-सा दांव मारा कि लड़के के कंठ से एक चीख निकल गई और हवा में लहराता हुआ वह ठाकुर साहब के ऊपर जा गिरा जो खड़े होने का प्रयास कर रहे थे।

एक-दूसरे से उलझकर ठाकुर साहब और विकास फर्श पर गिर गए।

जिस तेजी से विजय खड़ा हुआ था उसी तेजी से विकास भी खड़ा हो गया। ठाकुर निर्भयसिंह उनके मुकाबले कुछ लेट खड़े हुए लेकिन देर उन्होंने भी नहीं लगाई थी ''। इस समय एक तरफ विजय खड़ा था और उसके सामने निर्भयसिंह और विकास थे।

समस्त दरबार इस दिलचस्प मल्लयुद्ध को देख रहा था। रैना पागलों की भांति चीख रही थी। अलफांसे और ब्लैक ब्वॉय शांत थे। विकास विजय की ओर बढ़ता हुआ गुर्राया—

—"बहुत हो लिया'''अब शर्म नहीं होगी।" और कहने के साथ ही लड़के का जिस्म वायु में लहराया और उसकी लम्बी-लम्बी टांगें फ्लाइंग किक के रूप में विजय के सीने तक पहुंची लेकिन विजय ने उसकी दोनों टांगें बेहद खूबसूरती के पकड़ी और हवा में दो बार चकराकर उसने विकास का जिस्म ठाकुर निर्भयसिंह पर फेंक दिया। एक बार पुनः दोनों उलझकर गिरे।

विजय इस समय बला की शक्ति का प्रदर्शन कर रहा था।

इस बार उसने विकास अथवा निर्भयसिंह को संभलने का अवसर देना उपयुक्त नहीं समझा और उसने फर्श पर पड़े विकास पर जम्प लगा दी। इस बार विजय ने उसे हाथों पर रोका और जबरदस्त ठोकर उसके चेहरे पर रसीद कर दी। विकास

उछलकर उससे लिपट गया···दोनों एक-दूसरे को लेकर फर्श पर गिर गए। विकास पर खून सवार हो रहा था। वह भूल चुका था कि विजय उसका गुरु है। उसने सोच लिया था कि अब वह विजय की शर्म नहीं करेगा। अभी वह कुछ करने ही जा रहा था कि एकदम बुरी तरह चौंक पड़ा।

चौंकने की बात भी थी।

लड़ते-ही-लड़ते उसके गुरु ने बहुत धीमे से उसके कान में कहा था—"मेरे दो-चार हाथ खाकर तुम्हें बेहोश हो जाना चाहिए बेटे दिलजले!"

मन-ही-मन चौंक उठा विकास।

परन्तु विजय ने उसे चौंकने का अवसर भी नहीं दिया। यह कहते ही उसने एक जोरदार घूंसा विकास के चेहरे पर जड़ दिया। विकास उछलकर जा गिरा उधर। विजय से निर्भयसिंह उलझ गए। इधर विकास का दिमाग बड़ी तेजी से कार्य कर रहा था। वह विजय गुरु के उस वाक्य का अर्थ निकालने की चेष्टा कर रहा था। ये विजय गुरु क्या कह रहे हैं। क्या विजय गुरु कोई चाल चल रहे हैं? विकास को ऐसा लगा लेकिन क्या चाल हो सकती है, यह विकास की समझ में नहीं आया—परन्तु इतना तय था कि विजय गुरु कोई चाल चल रहे थे और विकास को गुरु की चाल कामयाब बनानी थी। यह सोचते ही उसने उधर ध्यान दिया। उधर विजय ने ठाकुर साहब को उछालकर उसकी ओर फेंक दिया।

विकास ने गजब की फुर्ती का प्रदर्शन करके खुद को बचा लिया और एक जम्प विजय पर लगाई।

इसके बाद—

विजय और विकास लिपट गए। विकास अधिक-से-अधिक

विजय गुरु के हाथों को चलाने का अवसर दे रहा था परन्तु वह किसी पर यह जाहिर नहीं होने दे रहा था कि विजय को जीताने की कोशिश वह खुद कर रहा है। एक समय ऐसा आया जब विजय ने विकास की गुद्दी पर एक जोरदार कैरेट मारा—

एक चीख के साथ विकास फर्श पर गिरा।

उसके बाद वह उठा नहीं, कदाचित वह बेहोश हो चुका था अथवा प्लानिंग के अनुसार यह बेहोशी नकली थी।

विकास को बेहोश होता देखते ही ठाकुर साहब के जिस्म में बला का तनाव आ गया। उनके जिस्म में बहता शेरनी का दूध उबल पड़ा। पागलों की भांति उन्होंने विजय पर जम्प लगा दी।

सम्भव था कि ठाकुर साहब विजय से कुछ अधिक शक्तिशाली रहे हों लेकिन अब उनकी उम्र ढल गई थी। जवानी जैसी शक्ति उनमें नहीं थी। यह भी ठीक है कि उन्होंने डाकुओं और पुलिस में रहकर काफी दांव सीखे थे; परन्तु उनका लड़का विजय भारतीय सीक्रेट सर्विस का चीफ था।

न केवल भारत का बल्कि विश्व का सबसे बड़ा जासूस था।

लड़ने के जो तरीके वह जानता था वो तो ठाकुर साहब ने स्वप्न में भी नहीं सोचे थे। मल्लयुद्ध के जितने भी ढंग विजय जानता था, उनकी तो ठाकुर ने कभी कल्पना नहीं की थी। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि विजय से लड़ते-लड़ते उसके पिता निर्भयसिंह लहूलुहान हो गए और अन्त में बुरी तरह थककर फर्श पर गिर गए।

ठाकुर साहब वास्तव में बेहोश हो चुके थे।

रैना बुरी तरह चीख-चीखकर विजय को बुरा-भला कह

रही थी लेकिन विजय उसकी ओर से पूरी तरह लापरवाह राजमहल के बीचोबीच टांगें फैलाए, कूल्हों पर हाथ रखे इस प्रकार खड़ा था मानो इन दोनों को बेहोश करके उसने न जाने कितना बड़ा किला जीत लिया हो ! उसकी सांस तेजी के साथ चल रही थी।

इस युद्ध की समाप्ति के एक पल तक तो सन्नाटा रहा और फिर एकाएक सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। तालियों की आवाज सुनकर विजय सीना अकड़ा करके खड़ा हो गया। निर्भयसिंह और विकास के जिस्म उसके दायें-बायें पड़े थे। एकाएक दरबार सम्राट महाराजा राणाप्रताप की जय के नारों से गूंज उठा। कुछ पल तो विजय शान्त खड़ा रहा और ऐसा मुंह बनाया मानो ये नारे कुनैन की गोली बन-बनकर उसके कंठ से नीचे उतर रहे हों। मानो उसे प्रशंसा पसन्द न हो।

उसने अपने दोनों हाथ उठा दिए।

दरबार में एकदम सन्नाटा छा गया। विजय ने पूरे दरबार पर एक नजर डाली। रैना, अलफांसे और ब्लैक ब्वॉय को भी देखा। रैना ने उससे आंखें मिलते ही नफरत के साथ थूक दिया। विजय की आंखें लाल हो गईं। चेहरे पर भयानक क्रोध का तूफान नजर आने लगा। वह संतुलित कदमों से आगे बढ़ा और उसके करीब जाकर उसके बाल पकड़े और तेज झटका देकर गुर्राया—

—"है तो तू मेरे अभयसिंह की लड़की—लेकिन मिल गई है गुस्ताखों से।" कहने के साथ ही उसने एक जोरदार थप्पड़ रैना के गाल पर रसीद कर दिया। रैना की आंखों के सामने पहले रंग-बिरंगे तारे नाचे और फिर गाढ़ा अंधकार छाता चला गया। उसकी गर्दन एक ओर को लुढ़क गई। वह बेहोश हो चुकी

। थी

विजय ने अलफांसे और ब्लैक ब्वॉय की आंखों में झांका—उधर मन्त्री बने जेम्स बाण्ड ने महारानी बनी क्रीमिया को कुछ संकेत किया। संकेत पाते ही क्रीमिया अपने सिंहासन ने उठी और विजय के करीब पहुंचकर बड़े प्यार से उसके कंधे पर हाथ रखा और बोली—"अब नृत्य का समय हो गया है महाराज !"

विजय ने पलटकर एक बार क्रीमिया को देखा। क्रीमिया मोहकता के साथ मुस्करा रही थी। अगले ही पल विजय भी मोहकता के साथ मुस्कराया और जोर से बोला—

—"मंत्री, इन्हें कैद में डाल दिया जाए। नृत्य के बाद हम इनसे फिर मिलेंगे।"

—"जो हुक्म महाराज !" आदर के साथ झुककर जेम्स बाण्ड ने कहा।

उसके बाद विजय ने क्रीमिया की बांहों से बांहें फसाईं और बारादरी की ओर चल दिया। इस समय सारा दरबार नतमस्तक होकर आदर के साथ खड़ा हो गया था। फिर वही संगीत लहरें बज उठीं। विजय किसी के अभिवादन का जवाब न देता हुआ—जिधर से आया था उसी बारादरी में गायब हो गया।

ब्लैक ब्वॉय और अलफांसे के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे। लेकिन अलफांसे के चेहरे पर उभरने वाले आश्चर्य में वास्तविकता की झलक न थी।

▭ ▭

▭ ▭

एक सैनिक विकास को कन्धे पर डाले जा रहा था। वास्तव में विकास बेहोश नहीं हुआ था। उसके कंधे पर पड़ा हुआ विकास

अधखुली आंखों से वह रास्ता देख रहा था जिससे सैनिक गुजर रहा था। विजय और क्रीमिया के दरबार से चले जाने के बाद जेम्स बाण्ड के आदेश पर यह सैनिक उसे किसी कैद में डालने ले जा रहा था। उसके कंधे पर पड़ा हुआ वह सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिए? यह तो वह समझ गया था कि विजय गुरु कोई चाल चल रहे थे। इस चाल को कामयाब बनाने के लिए उसने बेहोशी का नाटक भी किया था परन्तु अब उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए? इस एक सैनिक को वह बड़े आराम से ठिकाने लगाकर यहां से भाग निकलने में सफल हो सकता था परन्तु वह यह सोच रहा था कि क्या यह सब उचित होगा? कहीं उसका भागना विजय गुरु की चाल में बाधक न बन जाए?

बस—इसी कारण से वह शान्त था।

लेकिन—

अचानक वह सैनिक की हरकत पर बुरी तरह चौंक पड़ा। सैनिक ने ऐसा वाक्य कहा था जिसे उसने सुना तो था परन्तु उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसे लगा कि जो वह सुन रहा है वह मात्र उसका भ्रम है लेकिन सैनिक अपने कहे के जवाब में विकास का कोई उत्तर न पाकर पुनः बोला—

—"क्या आपने सुना नहीं मिस्टर विकास! मैं यह कह रहा था कि मुझे मालूम है कि तुम बेहोश नहीं हो। मिस्टर विजय का आदेश है कि आप एक घूंसा मेरे चेहरे पर मारें और तुरन्त यहां से फरार हो जाएं।"

विकास को विश्वास करना पड़ा कि उसने जो सुना है, वह गलत नहीं है। ये वाक्य चलते-चलते ही सैनिक ने बड़े रहस्य-मय ढंग से कहे थे। वह भी धीरे से बुदबुदाया—

—"भागने का रास्ता किधर है ?"

—"हमारे सामने ही एक फाटक है।" सैनिक बुदबुदाया —"फाटक की दायीं ओर एक लाल बटन है—आप एक घूंसा मेरे चेहरे पर मारें और झपटकर वह बटन दबा दें। फाटक खुल जाएगा। आगे खुली सड़क आपके सामने होगी। मिस्टर विजय को विश्वास है कि उससे आगे आप अपनी प्रतिभा से फरार हो जाएंगे।"

"लेकिन..."

—"अगर अधिक बात करोगे तो समय निकल जाएगा।" सैनिक उसकी बात बीच में ही काटकर बुदबुदाया।

उसके बाद—

विकास ने जो फुर्ती दिखाई उसकी कल्पना उस सैनिकने भी नहीं की थी। विकास के एक शक्तिशाली घूंसे ने उसे एक चीख के साथ उछलने और फर्श चाटने पर विवश कर दिया। वह फर्श पर गिरा लेकिन विकास ने उसकी कोई चिन्ता न करके दरवाजे की ओर जम्प लगा दी। बटन दबाते ही दरवाजा खुल गया। एक जम्प के साथवह दरवाजे से बाहर था। सड़क पर एक-दूसरे के आगे-पीछे कारें खड़ी थीं। एक कार से पीठ टिकाए तीन सैनिक खड़े थे। आहट सुनकर वे तेजी के साथ पलटे लेकिन विकास उनके सिर पर पहुंच चुका था। उसने उछलकर एक साथ दो सैनिकों के गलों में कैंची फंसा दी और तीसरे के गले में उसकी बांहें लिपट गई थीं। इस समय वह तीनों के ऊपर लदा हुआ था। एक क्षण का भी विलम्ब किए बिना उसने अपनी कैंची को एक तेज झटका दिया।

'कड़...कड़...!'

दो बार आवाज हुई और दोनों सैनिकों के गले की हड्डी

टूट गईं। उनके कंठ से चीखें निकली और वहीं गिर पड़े। तीसरे को उसने बांहों में लपेटा, हवा में उठाया और एक कार की छत पर दे मारा। यह सब करके वह खुद एक पल भी वहां नहीं ठहरा। उसने एक जम्प लगाई और कारों के बीच में से होकर एक ओर को भाग लिया। दूर उसे एक मोटरसाइकल नजर आई। मोटरसाइकल में चाबी उपस्थित थी। विकास ने एक ही किक में उसे स्टार्ट किया और अगले ही पल मोटरसाइकल सड़क पर वायु के वेग से दौड़ रही थी। तभी उसकी दृष्टि हैण्डिल पर पड़ी—वहां एक गत्ता लटका हुआ था। गत्ते पर लिखे शब्द को देखते ही वह चौंका—'क्रांति का देवता।'

पढ़ते ही वह चौंक पड़ा। एक बार फिर उसे क्रांति का देवता की कार्य-प्रणाली से प्रभावित होना पड़ा। लेकिन बिना सोचे-समझे वह सूनी सड़क पर मोटरसाइकल को उड़ाता ले गया।

सड़क पर रोड लैम्पों का प्रकाश था। लेकिन दूर-दूर तक उसकी मोटरसाइकल के अतिरिक्त अन्य कोई वाहन नजर नहीं आ रहा था। न जाने विकास के दिमाग में क्या प्रश्न उठ रहे थे। एकाएक वह चौंक पड़ा।

उसके कानों में एक आवाज पड़ रही थी। उसने ध्यान से सुनी, कोई उससे कह रहा था—

—"मिस्टर विकास! एक मील बाद बायीं ओर एक मोड़ आएगा, आप उसी पर मुड़ जाना।"

विकास का चौंकना स्वाभाविक था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह आवाज कहां से आ रही है? परन्तु फिर भी वह बोला—"आप कौन हैं?"

—"अगर सामने होता तो बायें हाथ से दाय पैर का

घुटना खुजाता।" उसके कानों से आवाज टकराई।

—"क्रान्ति का देवता।" विकास बुदबुदा उठा।

—"तुम्हें घेरने की कोशिश की जा रही है।" क्रान्ति का देवता की आवाज गूंजी—"रफ्तार बढ़ाकर जल्दी से उस मोड़ पर मुड़ जाओ और मैं जिन रास्तों पर बताता हूं उन पर होते हुए वहां पहुंचो जहां मैं कहता हूं।"

इस प्रकार—

क्रान्ति का देवता रहस्यमय ढंग से उसे निर्देश देता रहा। उसी के निर्देश पर मोटरसाइकल जंगल में पहुंच गई। घने जंगल से उसे क्रान्ति का देवता का आदेश मिला कि मोटरसाइकल को वहीं छोड़ दे। उसने आदेश का पालन किया। मोटरसाइकल छोड़कर अभी वह कठिनता से दस कदम घने जंगल में घुसा था कि अचानक उसके समीप का ही एक मोटा पेड़ थोड़ा-सा हिला—उसकी जड़ में एक आवाज के साथ दरवाजा बन गया। वह तेजी से उस तरफ घूमा—उसी क्षण उस दरवाजे से सुनहरे नकाब और लिबास में लिपटा क्रान्ति का देवता प्रकट हुआ—उसे देखते ही विकास एकदम सावधान होकर खड़ा हो गया।

—"मेरे साथ आओ।" क्रान्ति का देवता ने कहा। उसके बाद वे दोनों उस पेड़ के द्वार में दाखिल हो गए। नीचे तक सीढ़ियों के जरिये गए। पेड़ का द्वार खुद बन्द हो गया था। इस समय वे जंगल के नीचे बने एक तहखाने में थे। उस जगह मशालें जल रही थीं जिनका प्रर्याप्त प्रकाश वहां फैला हुआ था।

एक हॉल जैसे स्थान पर जाकर क्रान्ति का देवता विकास की ओर घूमा तथा अपनी लाल आंखें उसकी आंखों में डालकर बोला—"अब तुम बिल्कुल सुरक्षित हो।"

—"लेकिन ये चक्कर क्या है?" विकास उससे नजर

मिलाकर बोला—"विजय गुरु क्या चाल चल रहे हैं ?"

—"गुरु तुम्हारे हैं, मैं भला क्या जानूं।" क्रान्ति का देवता बोला—"वैसे मैं पता लगाने की चेष्टा कर रहा हूं, जब पता लग जाएगा, बता दूंगा। वैसे यह समय किसी बात को समझने का नहीं है बल्कि तेजी के साथ कुछ करने का है। यह मानना होगा कि तुम्हारे विजय गुरु—सबके गुरु हैं—मुझे लगता है कि वे सबसे अलग ही ऐसी साजिश रच रहे हैं जिससे विदेशियों का तख्ता उलट जाए।"

—"अब मेरे लिए क्या काम है ?"

—"इस समय सबसे महत्वपूर्ण काम तुम्हारे लिए ही है।" क्रान्ति का देवता ने कहा—"तुम जानते हो कि विदेशियों के विरुद्ध अपनी इस क्रान्ति को सफल बनाने के लिए हमें शस्त्रों की आवश्यकता है जबकि हमारे पास पर्याप्त शस्त्र नहीं हैं।"

—"आप समस्या बताइए।"

—"क्या हमें भारतीय सरकार से सहायता मिल सकती है ?"

—"आपका मतलब शायद भारत से शस्त्र मंगाने से है ?" विकास बोला।

—"बिलकुल ठीक समझे।"

—"ये बात मैं गारण्टी से नहीं कह सकता।" विकास ने कहा—"केवल कोशिश की जा सकती है—परन्तु उसके लिए भी साधन की आवश्यकता है।"

—"साधन मेरे पास है।" क्रान्ति का देवता ने कहा—"मेरे पास एक काफी शक्तिशाली ट्रांसमीटर है, जिसके जरिये सरलता से हम भारतीय सरकार से सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं।"

इस प्रकार उन दोनों ने निश्चय किया कि भारतीय सरकार

से शस्त्रों की सहायता ली जाए। क्रान्ति का देवता उसे ट्रांसमीटर तक ले गया। ट्रांसमीटर पर भारतीय सरकार से सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की जाने लगी। पन्द्रह मिनट के निरन्तर और कठोर परिश्रम के पश्चात् विकास को भारतीय मिलिटरी के जनरल से सम्बन्ध स्थापित करने में सफलता मिल गई। दूसरी ओर से जनरल का स्वर उभरा—

—"हैलो ··हैलो···यस···आप कौन हैं—ओवर!"

—"कृपया हमारा सम्बन्ध माननीय राष्ट्रपति से स्थापित किया जाए—ओवर।" विकास के मुंह से सीक्रेट सर्विस के चीफ पवन जैसी भर्राई हुई आवाज निकली।

इस आवाज से प्रत्येक बड़ा अधिकारी परिचित था। सब अच्छी तरह जानते थे कि यह आवाज सीक्रेट सर्विस के चीफ की की है और हर हालत में इस आवाज के आदेश का पालन किया जाता है। इस आवाज को सुनते ही दूसरी ओर से बोलने वाला जनरल चौंक पड़ा और एकदम आदरात्मक स्वर में बोला—"ओह··आप!"

—"यस!" विकास ने पवन जैसे स्वर में कहा—"समय कम है—जल्दी सम्बन्ध दिया जाए।"

"ओ० के० सर!" जनरल का स्वर उभरा—"जैसा आदेश—ओवर।"

इसके पश्चात—

दस मिनट बाद ही ट्रांसमीटर पर भारत के राष्ट्रपति का स्वर उभरा—"हैलो··हैलो··राष्ट्रपति हीयर ओवर!"

—"माननीय राष्ट्रपति को मेरा प्रणाम!" विकास ने पवन के स्वर में कहा।

"बोलिए।" राष्ट्रपति ने कहा—"आज सीधा मुझसे संबंध

स्थापित करने की क्या आवश्यकता आ पड़ी ?"

—"सीक्रेट सर्विस को आपसे कुछ सहायता की आवश्यकता है—ओवर !" विकास बोला।

—"क्या—ओवर ?"

—"हमें कुछ शस्त्रों की आवश्यकता है।" विकास ने कहा —"कदाचित आपको विदित होगा कि हमारे देश के पड़ोस में एक आजाद इस्टेट गुलशनगढ़ है जिसे आजकल तीन देशों ने वियतनाम बना रखा है। ये तीनों देश यहां के शासक बन गए हैं। भारतीय सीक्रेट सर्विस का इस इस्टेट और अभियान से बड़ा गहरा सम्बन्ध है। सीक्रेट सर्विस के अधिकांश सदस्य आजकल यहीं हैं। हम गुलशनगढ़ की युवा क्रान्तिकारी पार्टी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। विदेशियों का तख्ता पलटने के लिए हमें शस्त्रों की आवश्यकता है और हमें आपकी सहायता की आवश्यकता है—ओवर।"

—"हम खुद भी इस छोटे देश की मदद करना चाहते थे।" दूसरी ओर से माननीय राष्ट्रपति का स्वर उभरा—"लेकिन दिक्कत यह है कि अगर हम किसी प्रकार की सहायता करेंगे तो वे तीनों देश विश्व-अदालत में हम पर दावा कर सकते हैं— जिससे हमारी राजनैतिक स्थिति खराब हो सकती है।"

—"आप इस देश की सहायता कीजिए। भारत का नाम कहीं नहीं आएगा।"

—"यही हम भी चाहते हैं।" राष्ट्रपति ने कहा—"हमने रूस से शस्त्र खरीदे हैं—इन्हीं शास्त्रों को वहां भेज सकते हैं— उन पर भारत के स्थान पर रूस की मोहर होगी।"

—"मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि गुलशनगढ हमेशा भारत के प्रति वफादार रहेगा।"

और इस प्रकार राष्ट्रपति को उसने शस्त्र-सहायता के लिए तैयार कर लिया। राष्ट्रपति ने बताया कि शस्त्र कल रात एक जहाज के जरिये सागर के रास्ते से भेज दिए जाएंगे। सारा प्लान तय हो गया। उसके बाद सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया गया। क्रान्ति का देवता उसे अन्य कुछ आवश्यक आदेश देकर चला गया। विकास वहीं बैठा हुआ घटनाओं के विषय में सोच रहा था।

□ □

□ □

—"तुम बहुत बड़ी गलती कर गए हो शेरा !" उसके सामने खड़ा क्रान्ति का देवता कह रहा था—"तुम्हारे पिता गनपतसिंह बहुत बड़े देशभक्त थे लेकिन तुमने उनकी कोई भी बात सुने बिना उन्हें मौत के घाट उतार दिया।"

—"क्या ?' चौंक पड़ा शेरा—"आप यह क्या कह रहे हैं ?"

—"मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं।" क्रान्ति का देवता ने कहा—"जो गनपतसिंह विदेशियों से मिल गया था—वह तुम्हारे पिता नहीं थे, उनके मेकअप में कोई अन्य था। उनकी हत्या में मैं तुम्हें भी दोषी नहीं ठहरा सकता क्योंकि उनकी हत्या करके तुमने एक बहुत बड़े देशभक्त होने का सबूत दिया है।"

इस प्रकार क्रान्ति का देवता ने शेरा को सब कुछ बता दिया। सुनते-सुनते उत्तेजना से शेरा का सारा चेहरा सुर्ख हो गया। आंखों में आंसू छलछला गए। उसके कण्ठ से भर्राया हुआ स्वर निकला—"ये मैंने क्या कर दिया ! इस गुनाह के लिए मैं कभी खुद को माफ नहीं कर सकता।"

—"अब दुःखी होने से कुछ नहीं होगा शेरा ! देशभक्त तो

हंसते हैं।" क्रान्ति का देवता ने कहा—"तुम तो इतने बड़े देश-भक्त हो कि देश के लिए अपने पिता की हत्या करने में एक सेकण्ड के लिए भी तुम्हारे हाथ नहीं कांपे। भूल जाओ इस बात को कि तुमने देशभक्ति में चूर होकर अपने पिता की हत्या कर दी—आओ, अपने पिता जैसे महान देशभक्त के शव की कसम लो कि विदेशियों से बदला लोगे।"

—"मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहता हूं।" शेरा ने आदर के साथ कहा।

—"बोलो।"

—"मुझे अपने पिता की लाश को यहां लाने की इजाजत दी जाये।"

—"मेरे साथ आओ।" क्रान्ति के देवता ने उससे कहा और उसे साथ लेकर अन्दर के एक कमरे में पहुंच गया। वहां एक ताबूत रखा था। उसने ताबूत खोल दिया, ताबूत खुलते ही शेरा अवाक्-सा रह गया। ताबूत में उसके प्यारे पिता की लाश थी। अवाक्-सा वह उस लाश को देखता रह गया। देखते ही उसकी आंखें छलछला गईं और दो आंसू उसके गाल से ढलककर नीचे गिर ग..। बड़ी हसरत-भरी निगाहों से वह अपने पिता की लाश को देखता रह गया। उसे लग रहा था जैसे अब भी उसके पिता बुदबुदा रहे हों—

—'आदमी का जिस्म क्या है...'

और अन्तिम दृश्य याद करते-करते शेरा फफक-फफककर रो पड़ा। वह झुका—अपने पिता के मृत शरीर पर हाथ फेरा और फिर बड़ी श्रद्धा के साथ उसने अपने पिता के चरणों की धूल अपने मस्तक पर लगा ली।

"आओ शेरा...!" क्रान्ति का देवता बोला—"इस शहीद

का अन्तिम संस्कार कर दें।"

शेरा ने शीघ्र ही अपने आंसुओं पर काबू पाया। उसके बाद जंगल में उस ताबूत को ले जाया गया। वहां एक चिता तैयार थी। क्रान्ति का देवता ने कफन के रूप में एक सफेद कपड़ा गनपत की लाश पर ढक दिया। शेरा ने पढ़ा--सफेद कफन पर लहू से लिखा था---

—'देशभक्त बेटे के हाथों शहीद होने वाला—

एक आजादी की राहों में खून बहा देने वाला दीवाना।'

पढ़कर शेरा एक बार फिर सिसक पड़ा। उसके बाद शेरा ने शव चिता पर रखकर अपने हाथों से अपने पिता को अग्नि दी। चिता जलने लगी। शेरा आंसुओं से भीगे चेहरे के साथ चिता को देख रहा था। क्रान्ति के देवता का सुनहरा नकाब भी आंसुओं से भीग गया। चिता को देखता हुआ वह बुदबुदाया—

—"तू इंकलाब की आमद का इन्तजार ना देख।

जो हो सके तो अभी इंकलाब पैदा कर॥"

मजाज की लिखी ये पंक्तियां क्रान्ति का देवता के मुख से निकलीं। शेरा ने एक नजर क्रांति के देवता को देखा और अपने पिता की चिता देखता हुआ बोला—

—"कुछ इस तरह खो गया देश के ख्यालों में।"

मालूम नहीं कुछ अपनी खबर मुझे।"

देशभक्ति में डूबी ये पंक्तियां गूंज रही थीं। तभी शेरा को ऐसा लगा जैसे चिता से आवाज आई हो --

—'पत्थर का है तकिया, मिट्टी का बिछौना।

कसम है तुम्हें मेरी लाश पे ना रोना॥'

चौंककर शेरा ने अपने पिता की चिता को देखा—चिता से निकलकर एकआवाज फिर शेरा के कानों से टकराई। उसे लगा

जैसे उसके पिता कह रहे हैं—

—'खुला-सा है ये जोश-इस दास्तां का।
कि जौहर हूं और जौहरी चाहता हूं।'

खून खौल उठा शेरा का। चेहरा सुर्ख हो गया। जिस्म की समस्त नसें तन गईं। मन-ही-मन उसने अपने पिता की जलती चिता की कसम खाई। उसके पश्चात् क्रान्ति का देवता उसे पुनः वहीं ले गया।

कुछ समय तक शेरा का मन उदास-सा रहा। वातावरण सामान्य हो गया तो क्रान्ति का देवता बोला—

—"कल तुम्हारे लिए एक विशेष काम है।"

—"हुक्म कीजिए।" शेरा ने कहा।

—"कल रात एक जलपोत की मदद से भारतीय सरकार यहां हमारी सहायता के लिए कुछ शस्त्र भेज रही है। हमें वे शस्त्र सुरक्षित यहां पहुंचाने हैं। तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूं कि इस्टेट के चारों ओर के सागर में विदेशी नेवी सेना लगी हुई है। हमेशा पांच पनडुब्बियां और सात स्टीमर सागर की निगरानी करते हैं।"

—"दुनिया की कोई भी ताकत हमें वे शस्त्र यहां पहुंचाने से नहीं रोक सकती।" शेरा ने कहा। कहते-कहते उसका चेहरा सुर्ख हो गया था।

मानो मौत का कफन उसने सिर से बांध लिया हो।

▭ ▭

▭ ▭

रात काजल की तरह स्याह थी।

चारों ओर अन्धकार ने अपना प्रभुत्व जमा लिया था।

सागर भी एकदम शान्त था मानो अपने किसी प्रिय के विरह में उदास हो। परन्तु इस शान्त सागर की छाती को सात स्टीमर और गर्भ को पांच पनडुब्बिया बेध रही थीं। यह उनका नियम था और इस नियम का पालन बखूबी किया जाता था। जल सेना की ये कमाण्ड अमेरिकी जल सेना के जनरल मिस्टर मैनसन के हाथों में थी। इस समय वे अपनी आधुनिक विशाल पनडुब्बी में पड़े एक नारी के जिस्म के साथ रंगरेलियां मना रहे थे। जब से मैनसन ने यह कार्य सम्हाला था तब से उनका टकराव किसी से नहीं हुआ था। हर रात यूं ही शान्ति के साथ गुजर जाती थी। आज की रात भी उन्हें कुछ होने की उम्मीद नहीं थी। कदाचित इसीलिए वे एक नारी जिस्म को भोगने का आनन्द ले रहे थे। वे क्या जानते थे कि आज सिरों पर कफन बांधे आजादी के दीवाने उन्हीं से टकराने आ रहे हैं?

इधर वे रंगरेलियों में व्यस्त थे और—

उधर—

सागर के तट पर स्वतन्त्रता सेनानी कोहनियों के बल पड़े हुए थे—वे सागर को दूर तक देख रहे थे। उनमें से एक के जिस्म पर ढीला स्याह लिबास और चेहरे पर दूध जैसे सफेद कपड़े का नकाब था। हाथों में भी सफेद दस्ताने थे। उसके समीप ही स्याह लिबास में बीस नम्बर पड़ा था। सफेद लिबास वाला ये नहीं जानता था कि यह बीस नम्बर शेरासिंह है। शेरा के समीप ही सैंतीस नम्बर था। सैंतीस के करीब पन्द्रह और पन्द्रह के समीप ही पड़ा था—दस नम्बर।

वे सब एक-दूसरे के साथी थे। एक-दूसरे की जान पर अपनी जान न्योछावर कर सकते थे जबकि आपस में वे ये भी नहीं जानते थे कि नकाब के पीछे कौन-सा चेहरा छुपा है। इस

समय इन सबका सरदार यह सफेद नकाब वाला था—सबको उसी के आदेशों का पालन करना था।

दस नम्बर के रूप में शेरा और सैंतीस नम्बर के रूप में सुपर रघुनाथथा। दस और पन्द्रह नम्बर के पीछे कौन-सा चेहरा छुपा है, यह अभी हम भी नहीं जानते। खैर...आगे बढ़ते हैं—शायद कुछ पता लग जाए? कुछ देर तक यूं ही शान्त पड़े रहे।

—"सबसे पहले हमें दुश्मन के किसी स्टीमर अथवा पनडुब्बी पर कब्जा करना है।" सफेद नकाबपोश बोला—"मेरे साथ दस और सैंतीस नम्बर आएं—पन्द्रह, बीस फिलहाल यहीं रहेंगे। या तो हम जलपोत के चमकने से पहले स्टीमर अथवा पनडुब्बी लेकर पहुंचेंगे अन्यथा हमारी चिन्ता न करके आपलोग जलपोत को सुरक्षित ले जाने की चेष्टा करेंगे।"

पन्द्रह और बीस केवल गरदन हिलाकर रह गए।

सफेद नकाबपोश दस नम्बर और सैंतीस धीरे-धीरे रेंगकर सागर में उतर गए। उसके बाद सागर के गर्भ को चीरते हुए वे धीरे-धीरे बढ़ते रहे। तैरते-तैरते उन्हें बीस मिनट हो गए परन्तु कोई भी सफलता उन्हें हासिल नहीं हो सकी। न जाने सफेद नकाबपोश के दिमाग में क्या आया कि उसने दोनों को अपने पीछे आने का संकेत किया और सागर के गर्भ में डूबी चट्टानों के पीछे पहुंच गया। वहां पहुंचने के पश्चात् उसने तैरने इत्यादि का कोई प्रयास नहीं किया और वे तीनों आराम से चट्टानों के पीछे पहुंच गए।

उसकी पीठ पर ऑक्सीजन गैस के सिलेण्डर थे जिसके कारण उन्हें सांस इत्यादि लेने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं थी। इस स्थान पर शान्ति के साथ बैठे हुए उन्हें बीस मिनट हुए थे और सेकेण्ड की सुई अभी इक्कीसवें मिनट की घोषणा करने जा

रही थी कि वे तीनों चौंक पड़े।

उस पहाड़ी के सामने थोड़ा-सा नीचे पनडुब्बी किसी सर्प की भांति बलखाती हुई इधर ही आ रही थी। सफेद नकाबपोश के साथ-साथ दस और सैंतीस नम्बर की आंखें भी चमक उठीं। सफेद नकाबपोश तेजी के साथ बोला—"नम्बर सैंतीस! तुम मेरे साथ आओ। दस नम्बर, तुम पनडुब्बी के दायीं ओर से बढ़ोगे।" यहकहने के पश्चात् उसने एकक्षणभी व्यर्थ नहीं किया, उनके साथ सबसे बड़ी दिक्कत यह थी कि जल में चलने वाली कोई भी गन इत्यादि उसके पास नहीं थी। उन्हें एक प्रकार से निहत्थे ही उसपनडुब्बी पर कब्जा करना था। सफेद नकाबपोश और सैंतीस नम्बर एक तरफ से पनडुब्बी के करीब बढ़ रहे थे और दूसरी ओर से दस नम्बर बढ़ रहा था। अभी सफेद नकाबपोश और सैंतीस नम्बर पनडुब्बी से कुछ ही दूर थे कि अचानक पनडुब्बी की ओर से एक तारपीडो सागर का सीना चीरकर उनकी ओर लपका।

सफेद नकाबपोश ने गजब की फुर्ती का प्रदर्शन करके सैंतीस नम्बर को पानी में एक ओर धक्का दे दिया और खुद भी एक डुबकी लगा गया लेकिन इतनी फुर्ती का प्रदर्शन करने के बाद भी लहराता हुआ तारपीडो सफेद नकाबपोश की बांह को स्पर्श करता हुआ निकल गया। न चाहते हुए भी सफेद नकाबपोश के कंठ से एक चीख निकल गई। हालांकि तारपीडो पूरी तरह उसकी बांह में घुसा नहीं था केवल स्पर्श करता निकल गया था परन्तु फिर भी उसकी बांह से किसी बांध टूटी नदी की भांति खून बह निकला।

एक क्षण के लिए उसका जिस्म पानी में लहरा गया। सैंतीस नम्बर ने झपटकर उसे पकड़ा और अभी वह उसकी कुछ

सहायता करना चाहता ही था कि कि सफेद नकाबपोश एकदम संभलकर बोला---"चिन्ता मत करो—कोई खास बात नहीं है —पनडुब्बी की ओर बढ़ो।"

इन शब्दों के साथ घायल नकाबपोश तेजी के साथ पनडुब्बी की ओर बढ़ा। नम्बर सैंतीस यानी सुपर रघुनाथ उसकी इस दिलेरी पर चकित रह गया। परन्तु यह समय आश्चर्य में डूबकर खोने का नहीं था बल्कि काम करने का था। वह भी उसके साथ तेजी से आगे बढ़ा। इस बार सफेद नकाबपोश की नजर पनडुब्बी के कण-कण पर जमी हुई थी। लेकिन उसके बाद उधर से किसी प्रकार का हमला नहीं हुआ। उस समय वे दोनों चौंक पड़े जब पनडुब्बी से तीन सैनिक पानी में कूदे।

सफेद नकाबपोश समझ गया कि इन लोगों का इरादा बदल गया है। ये उन्हें मारना नहीं केवल गिरफ्तार करना चाहते हैं। उनका यह प्रयास रघुनाथ और सफेद नकाबपोश के पक्ष में ही था। शीघ्र ही तीनों सैनिक उनके करीब पहुंच गए। उन तीनों के हाथों में मशीनगनें थीं। हालांकि सफेद नकाबपोश की बांह में जबरदस्त पीड़ा थी—परन्तु इस बात की चिन्ता किए बिना उसने पानी के अन्दर एक कमाल की डाई ली और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाए वह एक सैनिक से लिपट गया। इधर सुपर रघुनाथ दूसरे सैनिक से लिपट चुका था। तीसरा सैनिक आजाद भी था और उसके हाथ में गन भी थी। लेकिन वह फायर न करने के लिए विवश था क्योंकि सफेद नकाबपोश और सैंतीस नम्बर उसके दोनों सैनिक साथियों से इस प्रकार गुत्थमगुत्था हो रहे थे कि उसे फायर करने में अपने ही साथी को गोली लगने का खतरा था।

वह आराम से तैरता हुआ उन चारों का युद्ध देख रहा था।

इस युद्ध के बीच अचानक नकाबपोश से लड़ने वाले सैनिक ने उसका सफेद नकाब नोंच लिया। लेकिन इतना करने के बीच वह सैनिक अपनी गन खो बैठा—हुआ यूं कि इधर उसने सफेद नकाबपोश का नकाब नोंचा और उधर सफेद नकाबपोश ने एक झटके के साथ उस सैनिक की गन छीन ली। इसके बाद सफेद नकाबपोश ने जो कुछ किया, वह इतनी फुर्ती से किया कि कोई भी कुछ नहीं समझ सका। उसकी मझरगन से पलक झपकते ही दो शोले लपके और उससे लड़ने वाला और आजाद खड़ा सैनिक परलोक सिधार गए। इधर केवल एक सैनिक बचा जो सुपर रघुनाथ से उलझा हुआ था। सफेद नकाबपोश उस पर भी झपटा और एक तेज झटके के साथ उसने उसे रघुनाथ से अलग किया। उसने एक क्षण भी व्यर्थ नहीं किया और अपनी मझरगन से उसे भी सुला दिया।

नम्बर सैंतीस यानी सुपर रघुनाथ ने चीखकर सफेद नकाबपोश की ओर देखा—देखते ही वह बड़ी बुरी तरह उछल पड़ा। उसके होंठ बुदबुदा उठे—

—"विकास ?"

वास्तव में सफेद नकाब के पीछे छुआ चेहरा विकास का ही था। विकास को इस हालत में यहां देखकर वह दंग रह गया। सुपर रघुनाथ के जेहन में एक पिता का दिल मचल रहा था—पुत्र को इस हालत में यहां देखते ही उसका दिल तड़प उठा—उसका दिल चाहा कि वह अपना काला नकाब नोंच दे—विकास को बता दे कि वो उसका पिता है—अपने बेटे को वह सीने से लगा ले—लेकिन नहीं—एकाएक उसके दिल से आवाज उठी—क्रान्ति का देवता के आदेश के मुताबिक किसी को भी अपना रहस्य दूसरे पर प्रकट नहीं करना है। विकास को सामने देखकर

वह आश्चर्य में डूब गया था। उसका दिल उसे गले से लगाने के लिए मचला परन्तु रघुनाथ ने अपनी समस्त भावनाओं का गला घोंट दिया। उसने विकास की ओर देखते हुए संकेत से कहा—

—"आप अपना नकाब पहन लें।"

विकास पानी में तैर गया और अपनी तैरती गीली नकाब चेहरे पर चढ़ा ली। रघुनाथ ऐसी कोई भी हरकत नहीं होने देना चाहता था जिसमें साबित हो कि वह रघुनाथ है।

अभी विकास ने अपने चेहरे पर नकाब चढ़ाया ही था कि अचानक पनडुब्बी की ओर से फायरिंग की आवाज आई। उन दोनों का ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ। उसके बाद वे दोनों पनडुब्बी की ओर तैरते चले गए। इस समय उन दोनों के हाथों में मशीनगनें थीं। अभी वे पनडुब्बी के करीब पहुंचे ही थे कि पनडुब्बी से बाहर एक सफेद झण्डा लहराता हुआ नजर आया। वे समझ गए कि पनडुब्बी ने आत्मसमर्पण कर दिया। बड़े आराम से वे पनडुब्बी के करीब पहुंचे। द्वार खोल दिया गया।

द्वार खोलने वाला नम्बर दस था।

पनडुब्बी पर उसने कब्जा कर लिया था। अब उन्होंने पनडुब्बी का रुख सागर के उस किनारे की ओर किया था जहां उनके अन्य साथी थे।

▭ ▭

▭ ▭

—"हैलो...हैलो...!" मैनसन ट्रान्समीटर पर झुका हुआ जेम्स बाण्ड को सूचित कर रहा था—"दुश्मनों ने हमारी पनडुब्बी नम्बर फाइव पर कब्जा कर लिया है। हम उस पनडुब्बी को सागर में खोजने की बहुत कोशिश कर रहे हैं लेकिन अभी

तक उसका कहीं पता नहीं है...ओवर।"

—"इसका मतलब बागी सागर के युद्ध में भी प्रयत्नशील हो गए हैं।" जेम्स बाण्ड का स्वर उभरा—"अब तुम्हारी बारी है मैनसन ! तुम सतर्क रहो। आज सागर में जरूर कोई घपला होगा।"

—"दरअसल हमें पनडुब्बी नम्बर फाइव से यह सूचना प्राप्त हुई थी कि दो नकाबपोश उन् चमके और उन्होंने उन पर तारपीडो छोड़ा...तब हमने उन्हें आदेश दिया था कि वे उनमें से किसी को मारें नहीं...उन्हें गिरफ्तार किया जाए...मैंने ये भी कहा था कि मैं खुद पनडुब्बी लेकर वहां पहुंच रहा हूं लेकिन जब मैं वहां पहुंचा तो पनडुब्बी गायब थी—खोज में हमें अपने सैनिकों की लाशें मिली हैं।"

इधर वे ये वार्ता कर रहे थे...

उधर...

वह पनडुब्बी एक चट्टान के पीछे दुबकी हुई थी। उसमें उपस्थित सफेद नकाबपोश यानी विकास, नम्बर सैंतीस अर्थात रघुनाथ, नम्बर बीस अर्थात शेरा और पन्द्रह तथा दस नम्बर, सभी सतर्क थे। विकास की बांह के घाव वाले भाग पर एक पट्टी बांध दी गई थी। पनडुब्बियां उन्हें तलाश कर रही थीं। वे चाहते तो इस स्थान से छुपकर उन्हें नष्ट कर सकते थे लेकिन इस समय उनका मुख्य काम उन्हें नष्ट करना नहीं बल्कि शस्त्रों के जहाज को सफलता के साथ ले जाना था। कुछ देर पश्चात् पनडुब्बियां उस इलाके से चली गईं...रास्ता साफ देखकर उन्होंने पनडुब्बी को समुद्री चट्टान से बाहर निकाला और सागर के बीच की ओर चल दिए। बिना किसी प्रकार की बाधा के वे गुलशनगढ़ के किनारे से काफी दूर आ गए। अब वे दुश्मनों

की पनडुब्बी और स्टीमरों की निगाहों से दूर पहुंच चुके थे। वे पनडुब्बी को सागर ने गर्भ से निकालकर छाती पर ले आए। अब वे विदेशियों की नजरों से बिल्कुल बाहर थे। यहां अभी उन्हें कठिनता से तीस मिनट ही गुजरे होंगे कि उन्हें दूर सागर की छाती पर तैरता हुआ एक विशाल काला धब्बा नजर आया। वे समझ गए कि यही भारतीय जलपोत है। उनकी पनडुब्बी तेजी के साथ उस ओर दौड़ने लगी। उधर एक कक्ष में विकास जल-पोत से सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा कर रहा था। कुछ देर पश्चात् वह अपने प्रयास में सफल हो गया। दूसरी तरफ से बोलने वाला भारतीय सेना का कोई कर्नल था। विकास ने उससे सीक्रेट सर्विस के चीफ की आवाज में ही बात की। ट्रांस-मीटर पर उसने यह बता दिया था कि जलपोत की ओर बढ़ने वाली पनडुब्बी उनकी है। इस प्रकार पनडुब्बी जब जलपोत के करीब पहुंची तो जलपोत में उपस्थित कर्नल ने उनका स्वागत किया। विकास ने कर्नल को सारी स्थिति समझा दी। उसने बता दिया कि गुलशनगढ़ की सरहदों पर दुश्मन दल का जाल बिछा हुआ है। इन सब परिस्थितियों को देखते हुए विकास ने एक योजना तैयार की। उसने कहा—

—"दस और बीस नम्बर मेरे साथ आएं। हम दोनों अपनी पनडुब्बी लेकर जलपोत की सुरक्षा हेतु आगे-आगे चलेंगे···जल-पोत हमारे पीछे होगा।"

काम इसी योजना पर किया गया। नम्बर सैंतीस और पन्द्रह जलपोत पर ही रह गए और विकास दस और बीस को लेकर पनडुब्बी पर पहुंच गया। इस प्रकार पनडुब्बी जलपोत से आगे लेकिन सागर के गर्भ में छुपकर आगे बढ़ने लगी।

विकास ने जलपोत से युद्ध के लिए कुछ विशेष शस्त्र ले

लिए थे। यह तो निश्चित था कि बिना युद्ध के शस्त्रों से भरा जलपोत सुरक्षित स्थान पर नहीं पहुंच सकता था। जलपोत के अन्दर उपस्थित भारतीय सैनिकों को भी उसने युद्ध के लिए सतर्क कर दिया था। अभी पनडुब्बी और जलपोत गुलशनगढ़ के सागरीय तट से थोड़े दूर ही थे कि विकास ने सामने से एक पनडुब्बी आती हुई देखी। पनडुब्बी सागर के गर्भ में लहराती हुई उनकी ओर बढ़ रही थी। विकास तेजी के साथ घूमा और बोला—

—"सतर्क हो जाओ—सामने दुश्मन की पनडुब्बी है।"

दस और बीस नम्बर ने एकदम तारपीडो छोड़ने का यन्त्र संभाल लिया। विकास पनडुब्बी का संचालन कर रहा था। वह बड़ी दक्षता के साथ पनडुब्बी चला रहा था। उन्होंने अधिक अवसर नहीं दिया। विकास ने पनडुब्बी को नब्बे डिग्री के कोण पर मोड़ दिया। सामने वाली पनडुब्बी उनकी रेंज में आ गई। उसी समय एकदम चीखा विकास—

—"फायर···ऽ···ऽ···!"

उनके इन शब्दों के साथ ही दस और बीस नम्बर की गनें गर्ज उठीं। जल को चीरते हुए तारपीडो सीधे सामने वाली पनडुब्बी से टकराए।

पनडुब्बी के परखच्चे उड़ गए। सब कुछ सागर के गर्भ में विलुप्त हो गया। पनडुब्बी के टुकड़े सागर के तह में डूबते चले गए।

तभी ट्रान्समीटर पर भारतीय कर्नल की आवाज गूंजी—

—"हैलो···हैलो···एक स्टीमर हमारी तरफ बढ़ रहा है।"

यह सूचना प्राप्त होते ही विकास ने पनडुब्बी का रुख सागर की छाती की ओर कर दिया! पैरिस्कोप में उसने स्टीमर की स्थिति पूरी तरह देख ली। उसने दस और बीस नम्बर को सतर्क

कर दिया। वे दोनों नीचे से स्टीमर को लक्ष्य बनाकर फायर करने ही जा रहे थे कि अचानक एक जोरदार विस्फोट के साथ उनकी पनडुब्बी कांप उठी। किसी अज्ञात दिशा से चलने वाला तारपीडो उनकी पनडुब्बी से टकराया था। पनडुब्बी के पिछले भाग के परखच्चे उड़ गए। विकास सहित वे दोनों भी बौखला गए। पनडुब्बी नष्ट हो चुकी थी। बड़ी तेजी के साथ विकास ने पनडुब्बी को घुमाया—दुश्मन की एक पनडुब्बी ने यह हमला उनके पीछे से किया था। अभी वे उस तरफ पूरी तरह भी नहीं मुड़ पाए थे कि—दुश्मन की पनडुब्बी एक धमाके के साथ किसी तिनके की भांति उड़ गई। कदाचित यह कार्य जलपोत पर उपस्थित भारतीय सैनिकों का था। उनकी पनडुब्बी का बुरी तरह घिराव हो चुका था, तभी स्टीमर से एक तारपीड़ो लहराता हुआ आया और सीधा उनकी पनडुब्बी से टकराया। इस बार पनडुब्बी पूर्णतया नष्ट हो गई। विकास उछलकर सागर में जा गिरा। पानी में गहरी उथल-पुथल मची हुई थी। तभी सागर एक बार फिर कांप उठा। जलपोत ने उस स्टीमर को उड़ा दिया था।

पानी में गहरी उथल-पुथल मची हुई थी। विकास तेजी के साथ जलपोत की ओर तैरने का प्रयास कर रहा था। तभी उसे पानी में हिचकोले खाता हुआ एक जिस्म नजर आया। विकास तेजी के साथ उसकी ओर बढ़ा। उस जिस्म का चेहरा नीचे की ओर था। वह तैरता हुआ उसके करीब पहुंचा—उसने देखा—वो दस नम्बर था।

नम्बर दस बेहोश हो चुका था।

विकास ने उसे संभाला। नम्बर दस के चेहरे का नकाब न जाने पानी में कहां गुम हो गया था। विकास की दृष्टि नम्बर दस के नकाब रहित चेहरे पर पड़ी—वह बुरी तरह चौंक पड़ा

—वह उस चेहरे को देखता ही रह गया। बरबस ही उसके मुंह से निकला—

—"पारो !"

▭ ▭

▭ ▭

घुर्र···र्र···र्र···घुर्र···!

उस मशीन से एक तेज आवाज निकलकर वहां के तेज वातावरण में फैल रही थी। अभयसिंह के दायें हाथ का अंगूठा एक बटन पर जमा हुआ था। उस समय वह लोहे की बनी एक विशाल मशीन के समीप खड़ा था और इस घुर्र-घुर्र की आवाज के साथ-साथ मशीन के शीर्ष पर लगा शीशे का बना एक जार तेजी के साथ घूम रहा था। शीशे का बना हुआ यह एक गोल जार ठीक ऐसा था मानो विश्व का एक ग्लोब हो।

ग्लोब के अन्दर घूमने के साथ-साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के रंगों का तेजी से आवागमन हो रहा था—कभी लाल, कभी पीला, हरा, नीला, बैंगनी, काला इत्यादि। हर पल उस शीशे के ग्लोब का रंग बदल रहा था। कभी दो-दो, तीन-तीन रंग एक साथ आते।

अभयसिंह बड़े ध्यान से उन रंगों को देख रहा था। उसका अंगूठा बटन पर अपना दबाव बढ़ाता ही जा रहा था। ज्यों-ज्यों दबाव बढ़ रहा था त्यों-त्यों घुर्र-घुर्र की आवाज और ग्लोब के घूमने की गति में भी बड़ी तेजी से अन्तर आता जा रहा था।

अजयसिंह के जिस्म पर इस समय डॉक्टरों जैसा एक सफेद चोगा था। इस समय वह एक विशाल प्रयोगशाला में खड़ा था। उसके समीप ही खड़ा था जैब्रा—उसका विश्वसनीय साथी

और सहयोगी। सारी प्रयोगशाला रासायनिक, भौतिक और वायलॉजी के पदार्थों से भरी पड़ी थी। जगह-जगह मोटे-मोटे बेलजार—विचित्र प्रकार के यन्त्र—मृत जीवों के जिस्म और इंसानी कंकाल लटके हुए थे। ऐसा लगता था, जैसे अभयसिंह इस समय अपने किसी विशेष कार्य में लगा हुआ था। जैब्रा बड़े ध्यान से अपने महाराज को देख रहा था।

एकाएक अभयसिंह ने स्विच से उंगली हटा ली।

उसी पल लेबोरेटरी में गूंजने वाली घुर्र-घुर्र की आवाज बन्द हो गई। समूची प्रयोगशाला में एकदम मौत जैसा सन्नाटा छा गया। तेजी से घूमता हुआ शीशे का ग्लोब भी धीरे-धीरेअपनी गति कम करता गया और कुछ देर में पूरी तरह रुक गया।

अब इस ग्लोब में कोई रंग नहीं था। वह साफ शीशे की भांति चमचमा रहा था। ग्लोब अन्दर से खोखला था। किसी रंग का उस पर लेशमात्र भी चिह्न नहीं था। अभयसिंह ने जैब्रा की ओर देखा—

—"हमें लगता है कि अब हमें सफलता मिल जाएगी।" अभयसिंह ने कहा।

—"इसी पर सब कुछ निर्भर है महाराज!" सम्मान के साथ जैब्रा ने कहा।

जैब्रा का उत्तर सुनकर अभयसिंह कुछ बोला नहीं बल्कि धीमे से मुस्कराकर रह गया। अभयसिंह की आंखों में इस समय एक विशेष चमक थी। वह स्थिर कदमों से आगे बढ़ा और घूमकर उस मशीन के दूसरी ओरपहुंच गया। प्रयोग-सीट पर पहुंचकर उसने अपने फैले हुए सामान को देखा और बोला—

—"अब केवल इसको समझना शेष रह गया है।" कहते हुए अभयसिंह ने अपनी मेज से कागज का एक छोटा-सा पुर्जा उठा

लिया। इस कागज पर एक दोहा लिखा था। मात्र दो पंक्तियों का एक दोहा। परन्तु दोहा कुछ इस विचित्र-सी भाषा में लिखा गया था कि इस भाषा को समझना असम्भव नहीं तो बेहद कठिन अवश्य था। जैंब्रा की ओर देखकर अभयसिंह बोला—

—"इस दोहे की पहली पंक्ति का मतलब तो मैं समझ गया हूं और इसमें लिखे अनुसार मैंने सब कुछ कर भी लिया है लेकिन इस दूसरी पंक्ति का अर्थ अभी नहीं समझ पाया हूं।"

—"मेरे ख्याल से हमें ऐसा आदमी खोजना चाहिए महाराज!" जैंब्रा ने कहा—"जो इस भाषा को समझ सके।"

—"समय बहुत कम है जैंब्रा!" अभयसिंह बोला—"वैसे भी इस भाषा को समझने वाला हमें सरलता से नहीं मिल सकता; बल्कि मैं तो कहता हूं कि इस भाषा को समझने वाला अब इस दुनिया में कोई होगा ही नहीं। यह आज से न जाने कितनी शताब्दियों पूर्व लिखा गया है। भला उस युग का कोई इन्सान अथवा प्राणी अब तक जिन्दा हो सकता है!"

—"लेकिन सम्भव है महाराज, कि कोई भाषा-विशेषज्ञ इसे पढ़ ले।" जैंब्रा बोला।

—"किन्तु इस प्रकार हमारा रहस्य खुल जाएगा।" अभयसिंह ने कहा।

जैंब्रा इस प्रकार चुप हो गया जैसे बस यही वह न चाहता हो। उसकी चुप्पी देखकर अभयसिंह एक बार मुस्कराया, फिर जैंब्रा के कन्धे पर हाथ मारकर बोला—

—"घबराओ मत जैंब्रा! दूसरी पंक्ति का मतलब भी मेरे दिमाग में चकरा रहा है—किन्तु अभी यह नहीं कह सकता कि वह सही है अथवा गलत।"

—"क्या मतलब निकला है महाराज?" उत्सुक होकर

जैन्ना ने प्रश्न किया।

—"तुम्हें मालूम है जैन्ना कि मैं उस समय तक कुछ नहीं कहता जब तक कि मैं किसी प्रयोग में पूरी तरह सफल न हो जाऊं। अतः जब तक कि मुझे अपने शब्दों पर पूर्ण विश्वास न हो…"

—"सॉरी महाराज!" जैन्ना ने क्षमा मांगी।

—"गुड!" अभयसिंह ने कहा—"तुम्हारी घड़ी में क्या बजा है?"

—"छः बजकर बीस मिनट हुए हैं महाराज!" जैन्ना ने सम्मानित स्वर में उत्तर दिया।

—"पांच मिनट पश्चात् मैं उसका परीक्षण करूंगा जो मैं इस दोहे की दूसरी पंक्ति से समझा हूं।" अभयसिंह बोला—"मैं समझता हूं कि दस मिनट बाद मैं यह निर्णय सुना सकूंगा कि मैंने इस दोहे की पंक्ति का सही अर्थ निकाल लिया है अथवा कुछ गलत सोच गया हूं।"

—"पांच मिनट बाद क्यों महाराज?" जैन्ना ने कहा—"अभी क्यों नहीं?"

—"समय की तो सारी बात है जैन्ना!" अभयसिंह रहस्य-मय मुस्कान के साथ बोला—"अगर मैं सही सोच रहा हूं तो दूसरी पंक्ति में समय का ही सर्वाधिक महत्त्व है।"

—"लेकिन…"

—"अब समय नहीं है जैन्ना!" अभयसिंह ने उसकी बात बीच में ही काट दी—"समय तो होने वाला है—शान्ति के साथ सब कुछ देखते रहो। अगर मैं कुछ आदेश दूं तो तुरन्त उसका पालन करो।" अभयसिंह ने कहा, किन्तु यह देखने अथवा जानने का कष्ट नहीं किया कि जैन्ना पर उसके शब्दों की क्या

प्रतिक्रिया हुई। उसकी ओर से पूरी तरह ध्यान हटाकर अजयसिंह पूरी तरह मशीन के पुर्जों से जूझने लगे।

एक मिनट पश्चात् ही मशीन के दायीं ओर रखी स्क्रीन पर एक दृश्य उभर आया। इस दृश्य में कोई विशेषता नहीं थी। केवल प्राकृतिक सौंदर्य का दृश्य था—संध्या का दृश्य किसी कवि के लिए अत्यधिक मनमोहक था। लेकिन सोचने की बात यह थी कि अभयसिंह जैसा वैज्ञानिक प्रवृत्ति का व्यक्ति इस दृश्य से क्या निकाल रहा था ?

किसी प्रेमी जोड़े के लिए भी यह दृश्य सुन्दर हो सकता था किन्तु एक वैज्ञानिक जो प्राकृतिक सौन्दर्य को एक नीरस-सी वस्तु मानता है—वह इस दृश्य को बड़े ध्यान से देख रहा था।

पश्चिम में धरती से गले मिलने का प्रयास करता हुआ सूर्य गगन पर अपनी लालिमा बिखेरे पीले मुखड़े के साथ सिसक रहा था। दृश्य एक पहाड़ी इलाके का था। पहाड़ियों के पीछे सूर्य डूबना चाहता था और दूसरी ओर ठीक उसके सामने पूरब दिशा में चन्द्रमा मुस्करा रहा था—मानो सारे दिन के कठोर परिश्रम के पश्चात् उसने सूर्य को परास्त कर दिया हो और अब इस खुशी में गर्व से मुस्करा रहा हो कि अब वातावरण पर उसका साम्राज्य रहेगा।

इस समय सूर्य और चन्द्रमा ठीक एक-दूसरे के आमने-सामने थे।

अभयसिंह ने तेजी के साथ एक बड़ा-सा लैंस उठाया और स्क्रीन पर उभरने वाले दृश्य को पहले से भी अधिक ध्यान से देखने लगा। इस समय उसने अपनी बायीं आंख बन्द कर रखी थी और केवल दायीं आंख से लैंस के जरिये स्क्रीन पर उभरने वाले दृश्य को देख रहा था।

कमाल यह था कि लैंस के अन्दर से सूर्य और चन्द्रमा की एक-एक किरण स्पष्ट चमक रही थी।

सारे वातावरण पर किरणों का एक लम्बा-चौड़ा जाल फला हुआ था, मानो मकड़ी के जालों का यह एक विशाल रूप हो।" लैंस के जरिये अभयसिंह सूर्य से निकलने वाली एक-एक किरण को स्पष्ट देख रहा था। चन्द्रमा से निकलने वाली भी एक-एक किरण तक को वह गिन सकता था। सूर्य और चन्द्रमा की किरणों के जाल का यह दृश्य बेहद रोमांचकारी था। अभय-सिंह की नजर सूर्य और चन्द्रमा की एक-एक किरण पर फिसल रही थी। दोनों की किरणें एक-दूसरे को क्रॉस करती हुई पहा-ड़ियों में पड़ रही थीं। यह दूसरी बात है कि सूर्य की किरणों के मुकाबले चन्द्रमा की किरणें बहुत ही फीकी थीं—परन्तु फिर भी उन्हें स्पष्ट देखा जा सकता था।

न जाने क्यों अभयसिंह का दिल बुरी तरह धड़क रहा था।

मानो सूर्य और चन्द्रमा की इन किरणों से ही ये कुछ उम्मीद करते हों।

अचानक...

बुरी तरह उछल पड़े अभयसिंह। उनकी दृष्टि सूर्य और चन्द्रमा की सभी किरणों से हटकर दोनों की केवल एक-एक किरण पर जम गई। सूर्य और चन्द्रमा की हर किरण एक-दूसरे को क्रॉस कर रही थी। किन्तु दोनों की केवल एक-एक किरण ही ऐसी थी जो एक-दूसरे को क्रॉस नहीं कर रही थी बल्कि इस समय एक-दूसरे की ओर बढ़ रही थी। ठीक इस प्रकार जैसे दो प्रकाश-किरण एक-दूसरे की ओर बढ़ रही हों।

तेजी के साथ सूर्य और चन्द्रमा की किरण एक-दूसरे की ओर बढ़ रही थीं।

और···और···एक पल ऐसा आया—जब दोनों किरणों के अग्रिम प्वाइंट एक-दूसरे से टकरा गए। ठीक इस प्रकार जैसे सूई की दो नोंक एक-दूसरे से टकराईं।

उनके टकराते ही—एक हल्की-सी चिंगारी उभरी।

—"जैब्रा !" अभयसिंह प्रसन्नता से चीखे—"टाइम ?"

—"छ: पच्चीस।" जैब्रा ने जल्दी से बताया।

—"गुड।" अभयसिंह के मुंह से प्रसन्नता में डूबा स्वर निकला और फिर उन दोनों की दृष्टि उन दोनों किरणों के प्वाइंटों पर जम गई। अगले ही पल वे दोनों किरणें एक-दूसरे से विपरीत दिशा में लौटने लगीं। सूर्य की किरण सूर्य की ओर, चन्द्रमा की किरण चन्द्रमा की ओर। अभयसिंह देखते रहे—उनकी आंखों की चमक हर पल बढ़ती चली गई।

कुछ ही देर में दोनों किरणें अन्य किरणों के जाल में उलझ गईं।

—"मिल गई—मिल गई।" खुशी के कारण बुरी तरह चीख पड़े अभयसिंह—"हमें सफलता मिल गई जैब्रा ! हमें सफलता मिल गई।" कहते हुए अभयसिंह खुशी में नाचने लगे।

जैब्रा उन्हें देखता ही रह गया। उसका दिल बड़ी जोर-जोर से धड़क रहा था। आश्चर्य के साथ वह खुशी से नाचते हुए अभयसिंह को देख रहा था और सोच रहा था—कहीं अभयसिंह पागल तो नहीं हो गए ?

▭▭

▭▭

क्रांति का देवता इस समय बड़ी तेजी के साथ एक सुरंग में से गुजर रहा था। उसके जिस्म पर इस समय जो चमचमाता

हुआ लिबास और चेहरे पर सुनहरा नकाब था। नकाब के अन्दर से उसकी दो चमकीली आंखें झांक रही थीं। लम्बे-लम्बे कदम रखता हुआ वह शीघ्रातिशीघ्र उस सुरंग को पार कर जाना चाहता था।

सुरंग में इस समय अंधकार था लेकिन इसका क्या किया जाए कि क्रांति का देवता के हाथ में इस समय एक टॉर्च थी, जिसे वह बार-बार रोशन करके अपना मार्ग देख लेता था। सतर्कतावश वह अपनी टॉर्च को लगातार रोशन नहीं कर रहा था।

जल्दी ही वह ऐसे स्थान पर पहुंच गया जहां सुरंग बन्द हो गई थी। परन्तु इस तरफ उसने लेशमात्र भी ध्यान नहीं दिया, अलबत्ता कुछ क्षण वह चुपचाप अंधेरे में खड़ा रहा। वह कदाचित यह भांपने की चेष्टा कर रहा था कि सुरंग में उसके इर्द-गिर्द अन्य कोई तो नहीं है। जब उसे विश्वास हो गया कि यहां अन्य कोई नहीं है तो उसने टॉर्च रोशन कर दी। टॉर्च का प्रकाश सीधा पत्थर की बनी एक बगुले की आकृति पर पड़ा। बगुला इस आकार में बना हुआ था मानो पंख फड़फड़ाकर वह उड़ने का प्रयास कर रहा हो। क्रांति के देवता ने आकृति की बनावट पर अधिक ध्यान न देकर अपना समय व्यर्थ नहीं किया बल्कि आगे बढ़कर बगुले की दायीं टांग पकड़कर एक तरफ को घुमा दी। टांग तो निस्संदेह घूम गई परन्तु प्रतिक्रिया कुछ भी नहीं हुई और जो प्रतिक्रिया हुई, वह केवल क्रांति का देवता ही जान पाया क्योंकि उसने तुरन्त टॉर्च का प्रकाश बगुले की एक आंख में डाला—बगुले की एक आंख के बीचोबीच एक बेहद नन्हा-सा छिद्र चमक रहा था। यह छिद्र दरअसल बगुले की टांग घुमाने से ही उत्पन्न हुआ था। साधारणतया देखने पर ऐसा ही लगता था

कि बगुले की टांग केवल घूमकर रह गई है। उसके घूमने से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई थी जबकि वह सर्वथा भ्रम था। बगुले की आकृति में यह सिस्टम कदाचित इसलिए फिक्स किया गया था ताकि अगर कोई अनजान व्यक्ति अनुमान से ही बगुले की टांग घुमा दे तो कोई विशेषता न पा सके, परन्तु क्रांति का देवता को जैसे मालूम था कि उसके टांग घुमाने से प्रतिक्रिया क्या हुई है। उसने तुरन्त अपने लबादे की जेब से सूई जैसी एक वस्तु निकाली। सूई का अग्रिम भाग 'एम' की शक्ल में मुड़ा हुआ था। उसने बिना एक भी क्षण व्यर्थ किए सूई बगुले की आंख में बने छिद्र में डाल दी और तेजी के साथ तीन बार दायीं ओर को घुमाकर तुरन्त बाहर खींच ली।

सूई के छिद्र से बाहर आते ही करिश्मा हुआ। हल्की-सी गड़गड़ के साथ बगुले का पेट फटने लगा। बगुले का पेट इस हद तक फट गया कि एक इंसान सरलता से इसमें प्रविष्ट हो सकता था। क्रांति का देवता इस प्रकार उसमें प्रविष्ट हो गया मानो इस सबका वह पूरी तरह अभ्यस्त रहा हो।

बगुले के पेट से सटी हुई सीढ़ियां थीं।

क्रांति के देवता ने एक बार टॉर्च रोशन की—नीचे सुरंग में जाकर ये सीढ़ियां समाप्त थीं। टॉर्च का प्रकाश इस समय पानी पर नृत्य कर रहा था। नीचे सुरंग में पानी भरा हुआ था और लोहे की ये सीढ़ियां भी पानी में ही जाकर गुम हो गई थीं।

इस बार उसने टॉर्च बुझाने का कोई प्रयास नहीं किया बल्कि टॉर्च उसी प्रकार रोशन किए वह तेजी के साथ नीचे उतरता चला गया। जो सीढ़ी पानी में डूबी हुई थी, उससे ऊपर वाली सीढ़ी पर एक पल के लिए वह ठहरा। एक पल के लिए उसकी टॉर्च के प्रकाश का दायरा पानी पर रेंगता हुआ सुरंग में

काफी दूर तक चला गया।

सुरंग में मौत जैसा गहन सन्नाटा था।

क्रांति के देवता ने बिना लेशमात्र भी चिन्ता किए पानी में कूदकर इस सन्नाटे को भंग किया और उसके बाद तो वहां छाया सन्नाटा जैसे भंग होता ही चला गया। उसके हाथ में रोशन टॉर्च थी और उसका टॉर्च वाला हाथ प्रत्येक पल पानी से ऊपर था। एक हाथ और दो पैरों के जरिये ही वह आराम से तैरता हुआ पानी से भरी हुई सुरंग को पार कर रहा था। उसके तैरने के कारण सुरंग का सन्नाटा पराजित होकर रह गया था।

पानी से भरी सुरंग में इसी प्रकार तैरता हुआ वह काफी दूर तक आ गया। टॉर्च का प्रकाश हर पल उसके सामने पड़ रहा था और उसी के मार्गदर्शन पर वह आगे तैर रहा था। अचानक टॉर्च के प्रकाश में एक विशाल मगरमच्छ नजर आया। इस मगरमच्छ ने अभी-अभी पानी के गर्भ से अपना डरावना चेहरा बाहर निकाला था।

मगरमच्छ पर दृष्टि पड़ते ही एक पल के लिए क्रांति का देवता ठिठका। उधर क्रांति का देवता को देखते ही मगरमच्छ की आंखों का रंग बदला और फिर उसका पूरा जिस्म पानी की सतह पर आ गया। पानी में सरसराकर वह तेजी से क्रांति का देवता की ओर बढ़ा। क्रांति का देवता भी तुरन्त पानी की सतह पर सरसराया और···

अगले ही पल—

सरसराता हुआ क्रांति का देवता सीधा मगरमच्छ के मुंह की ओर बढ़ा। मगरमच्छ का भयानक जबड़ा एक झटके के साथ खुल गया और सरसराकर क्रांति का देवता उसके मुंह में समा

गया। मगरमच्छ का जबड़ा एक झटके के साथ बन्द हो गया।

पांच मिनट पश्चात् ही क्रांति का देवता भीगे लिबास में मगरमच्छ के पेट में बने एक कक्ष में खड़ा अपने बायें हाथ के अंगूठे के पास की दो उंगलियों से दायें पैर का घुटना खुजा रहा था। कक्ष में ठीक उसके सामने एक काला नकाबपोश खड़ा था जिसके लिबास पर 'चालीस' लिखा हुआ था। क्रांति का देवता को देखते ही उसने बड़े आदर के साथ सिर झुकाया था।

—"तेजी से उस तरफ चलो।" क्रांति का देवता प्रभावशाली स्वर में बोला।

बिना कुछ बोले चालीस नम्बर ने सिर झुकाया और तुरन्त उस कक्ष से बाहर निकल गया। उसके बाहर निकलते ही क्रांति का देवता ने कक्ष अन्दर से बोल्ट किया और एक बार कक्ष का निरीक्षण किया। कक्ष पूर्णतया आधुनिक शस्त्रों से लैस था। एक तरफ पैरिस्कोपयुक्त टी० वी० रखा था। आगे बढ़कर उसने टी० वी ऑन कर दिया।

पहले स्क्रीन पर हल्की-सी आड़ी-तिरछी लकीरें खिंची और फिर उस पर एक दृश्य उभर आया। स्क्रीन पर पानी-ही-पानी नजर आ रहा था। यह दृश्य सागर का था। मगरमच्छ इस बीच सुरंग को पार करके सागर के बीच आ चुका था।

यह मगरमच्छ दरअसल एक आधुनिक पनडुब्बी थी। मगरमच्छ के आकार की यह पनडुब्बी किसी को भी सरलता से धोखा देने के लिए पर्याप्त थी।

मगरमच्छनुमा पनडुब्बी इस बीच पानी के गर्भ में समा चुकी थी। सागर के सीने को चीरता हुआ यह मगरमच्छ हर पल तीव्र वेग से आगे बढ़ता जा रहा था। क्रांति के देवता की आंखें स्क्रीन पर जमी हुई थीं। पनडुब्बी के इर्द-गिर्द छोटी-छोटी

मछलियां तैर रही थीं लेकिन क्रांति के देवता को इस प्राकृतिक सौंदर्य से कोई मतलब ही नहीं था।

उसे तो पानी में तैरती किसी दुश्मन की पनडुब्बी की तलाश थी।

लेकिन जितनी दूर तक वह स्क्रीन के जरिये सागर में देख सकता था—वहां केवल पानी-ही-पानी नजर आ रहा था। एकाएक उसने स्क्रीन से दृष्टि हटा ली और पैरिस्कोप ऑन कर दिया।

अब वह सागर की सतह और सागर के ऊपर का गगन साफ देख सकता था।

उसने स्पष्ट देखा—

सागर के ऊपर दुश्मन के दो विमान चकरा रहे थे। इन विमानों को देखकर क्रांति का देवता की आंखों में जहां हल्की-सी चिन्ता के भाव आए, वहां होंठ मुस्करा भी उठे। कुछ देर तक वह विमानों पर दृष्टि जमाये रहा, फिर एक माइक उठाकर उसका स्विच ऑन करके बोला—

—"नम्बर चालीस ! दुश्मन के विमान ऊपर पहुंच चुके हैं—जल्दी से उनके करीब पहुचने की कोशिश करो। रफ्तार बढ़ा दो। अगर हम यहां मात खा गए तो हमारी क्रांति अधूरी रह जाएगी।"

—"ओ० के० सरदार !" दूसरी ओर से नम्बर चालीस की आवाज आई।

बस—क्रांति के देवता ने अधिक वार्तालाप करना उचित नहीं समझा। उसने तुरन्त सम्बन्ध विच्छेद कर दिया और पनडुब्बी की बढ़ती हुई गति के साथ खुद को दुश्मन से टकराने के लिए तैयार करने लगा।

□□
□□

—"विकास !" जब्बरसिंह किसी शेर की भांति दहाड़ा—"कहां है वो कुत्ता ? हरामजादे के जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा···इस स्टेट के एक-एक बच्चे को अपने हाथ से कत्ल करूंगा···अपनी बहन पर बरसाए हुए एक-एक हण्टर का हिसाब लूंगा···हा···हा···हा···!" पागलों की भांति कहकहे लगाता हुआ जब्बरसिंह अपने बिस्तर से उछलकर खड़ा हो गया।

उसकी एक आंख का जख्म, जिसे विकास ने आलपिन से फोड़ दिया था, अभी ताजा था। उस आंख पर सफेद पट्टी बंधी हुई थी। एक आंख अंगारे के समान दहक रही थी। इस समय वह एक अस्पताल के बिस्तर पर था। उसके कहकहों से सारा अस्पताल गूंजने लगा। आंख में होती पीड़ा की चिंता न करके वह बिस्तर से उछला और अपने कमरे के दरवाजे की ओर भागा। सारे अस्पताल वालों के लिए भी यह नई बात नहीं रह गई थी। जब से जब्बरसिंह को होश आया था, तभी से वह चीख रहा था कि वह इस इस्टेट के एक-एक वारिस को जिंदा नहीं छोड़ेगा।

वह सारे वंश को समाप्त कर देगा।

—"इस इस्टेट के खानदान को मैं नेस्तनाबूद कर दूंगा···हर लाश के ऊपर बैठकर कहकहे लगाऊंगा···हा···हा···हा···!" पागलों की भांति कहकहे लगाता हुआ वह दरवाजे की ओर भागा, किन्तु तभी दो अमेरिकी सैनिक उसके सामने आ गए। उन दोनों के हाथों में गनें थीं। परन्तु इस समय तो जब्बर पर जैसे खून सवार हो चुका था। बिना कुछ भी सोचे-समझे उसने

किसी चीते की भांति एक साथ उन दोनों पर जम्प लगा दी।

उन दोनों को जब्बरसिंह से कदापि यह उम्मीद नहीं थी।

अभी वे कुछ समझ भी नहीं पाए थे कि एक के जबड़े पर जब्बरसिंह का फौलादी घूंसा पड़ा और दूसरे की नाक पर उसके सिर की जोरदार टक्कर। दोनों एक साथ चीखकर विपरीत दिशा में जा गिरे। परन्तु जब्बरसिंह उनसे टकराने के लिए वहां रुका नहीं, तेजी के साथ भागता हुआ बाहर निकला।

गैलरी से भागता हुआ जब्बरसिंह पागलों की भांति चीख रहा था।

एक डॉक्टर जब्बर के रास्ते में आया लेकिन जब्बरसिंह के एक ही घूंसे में वह किसी पुतले की भांति हवा में लहराकर न केवल दस कदम दूर जाकर गिरा बल्कि उसके जबड़े के हिलते हुए एक-एक जोड़ ने उसे जब्बरसिंह की अपरिमित शक्ति का परिचय भी दे दिया। जब्बरसिंह किसी की ओर ध्यान नहीं दे रहा था। वह चीखता हुआ तेजी से भागता जा रहा था। जो उसके रास्ते में आता, उसे पुतले की भांति हवा में उछाल देता।

सारे अस्पताल में जैसे हंगामा हो गया !

पीछे से सैनिक सम्हल भी गए थे। उनके हाथों में गनें भी थीं किन्तु मुसीबत यह थी उन्हें यहां उसकी हत्या के लिए खड़ा नहीं किया गया था बल्कि उन्हें जब्बरसिंह की सुरक्षा करनी थी। वे जब्बरसिंह के दिमाग में उठने वाले इसबार-बार के दौरे से परेशान थे। वे भी गनें संभालकर जब्बरसिंह के पीछे भागे।

किन्तु जब्बरसिंह को इस बात की मानो चिन्ता ही नहीं थी। वह बराबर भागा जा रहा था और जल्दी-से-जल्दी इस अस्पताल से बाहर निकल जाना चाहता था।

अचानक···

तेजी से भागता हुआ जब्बरसिंह ठिठक गया !

सामने खड़ा था—जेम्स बांड ।

दोनों की आंखें टकराईं । जब्बरसिंह की दहकती हुई इकलौती आंख तेजी से फड़फड़ाने लगी । बांड टांग चौड़ी किए, अपने दोनों कूल्हों पर हाथ रखे उसका रास्ता रोकने के अंदाज में खड़ा था । बांड की आंखों में दृढ़ता के भाव थे । होंठों पर ...कान थी । चेहरे पर पत्थर की भांति कठोरता ।

—"हट जाओ बांड !" जब्बरसिंह गुर्राया—"मेरे रास्ते से हट जाओ ।"

—"क्या चाहते हो ?" जेम्स बांड ने उसे घूरते हुए स्थिर स्वर में कहा ।

—"इस स्टेट के वंश का विनाश ।" गुर्राया जब्बरसिंह—"उस पिल्ले का कत्ल, जिसने मेरी आंख फोड़ी है···हट जाओ बांड, मेरे रास्ते से हट जाओ···मुझे आज भी सब याद है—अपनी प्यारी बहन के कोमल जिस्म पर पड़ते हुए कोड़े···मुझे आज भी ऐसा लगता है बांड, जैसे मेरी बहन तड़प रही है···गिड़गिड़ा रही है···उन राक्षसों से रहम की भीख मांग रही है । तुम···हट जाओ ।"

—"बदला लेने का अवसर तुम्हें मिलेगा ।" बांड ने कहा ।

—"मुझे अवसर नहीं चाहिए । शेर की भांति दहाड़ा जब्बर—"मुझे विकास चाहिए···भानु चाहिए···अभय चाहिए । एक-एक टुकड़े करके इस इस्टेट के चौराहे पर लटका दूंगा ।"

—"मैं नहीं हटूंगा ।" बांड ने दृढ़ता के साथ कहा ।

—"जब्बरसिंह अपने रास्ते की दीवार को हटाना जानता है ।" कहते-कहते जब्बरसिंह की इकलौती आंख किसी लाल बल्ब की भांति जल उठी—"मेरे रास्ते से हट जाओ वरना···"

—"मैं तुम्हारे रास्ते की दीवार नहीं हूं जब्बर···!"

इतना ही कहा था बांड ने कि जब्बर ने भेड़िये की भांति गुर्राकर उस पर जम्प लगा दी। बांड को जब्बरसिंह ने ऐसी उम्मीद नहीं थी, कदाचित इसलिए वह मात खा गया। जब्बर-सिंह का पहला घूंसा सन्नाकर उसकी कनपटी पर पड़ा। लाख संभलने की चेष्टाओं के बाद भी बांड लहराकर फर्श पर गिर पड़ा। इस एक घूंसे में बांड जान गया कि जब्बरसिंह अथाह शक्ति का मालिकहै। एक पलके लिए तो उसकी आंखों के आगे अन्धकार छा गया। उसने तो कल्पना भी नहीं की थी कि जब्बर इतनी शक्ति रखता है। इधर बांड फर्श पर गिरा, उधर जब्बर ने उसके ऊपर से दरवाजे की ओर जम्प लगाई लेकिन बांड भी आखिर बांड था।

उसने झपटकर जब्बरसिंह की टांग पकड़ ली।

अपने वेग के कारण जब्बर धड़ाम से मुंह के बल फर्श पर गिरा। बांड समझ चुका था कि जब्बरसिंह कमाल की शारीरिक शक्ति का मालिक है, इसलिएउसने उसे अवसरदेना उचित नहीं समझा। उसने तुरन्त अपने होलेस्टर से रिवॉल्वर खींचा और जब्बरसिंह की पसलियों से टकराकर गुर्राया—

—"अगर लेशमात्र भी हरकत करोगे जब्बरसिंह तो तुरन्त गोली मार दूंगा। उसके बाद तुम किसी से बदला नहीं ले सकोगे। अपने-आपको होश में लाओ। जोश में इन्सान गलती करता है। अगर दिमाग से सोचकर चलोगे तो बदला लेने में कामयाब रहोगे। तुम्हें यह सोचना चाहिए कि जोश में तुमने किस पर हाथ उठाया है।"

जब्बरसिंह के मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा। इतना तो वह सोच ही सकता था कि उसकी पसलियों के सटा हुआ रिवॉ-

ल्वर एक सेकेंड में उसकी जान ले सकता है। उसने खुद को सम्भाला, जोश में उफनते हुए दिमाग पर काबू किया। उसने बांड की ओर देखा—बांड के होंठों पर दोस्ताना मुस्कान थी। जब्बरसिंह धीरे से उठा।

—"मैं तुमसे कुछ खास बात करने आया हूं।" जेम्स बांड ने कहा—"मैं तुम्हारे वाले तुम्हारे ही एक ऐसे दुश्मन को कत्ल करना चाहता हूं जो एक बार मर चुका है—जिसे तुम्हारे भान्जे निर्भय ने मारा था।"

—"क्या?" जब्बरसिंह बुरी तरह चौंका—"राणाप्रताप?"

—"हां।" बांड ने मुस्कराकर कहा—"राणाप्रताप एक बार पुनः जिन्दा हो चुका है।"

—"क्या बक रहे हो?" जब्बरसिंह की खोपड़ी घूम गई—"ये सब कैसे हो सकता है? क्या बकवास है?"

—"मेरे साथ आओ।" जेम्स बांड ने कहा—"मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगा।" कहते-कहते बांड ने रिवॉल्वर होलेस्टर में लगा लिया। कुछ ही क्षणों पूर्व जब्बरसिंह का जो मस्तिष्क बेहद उत्तेजित था—इस समय वह न केवल शांत था बल्कि उसके दिमाग में बांड द्वारा कहे गएशब्द गूंज रहे थे। वह चुपचाप बांड के साथ बढ़ गया। अस्पताल का पूरा स्टाफ और सैनिक उसे इस प्रकार देख रहे थे जैसे वह कोई पागल हो।

स्वयं जब्बरसिंह को भी ऐसा लग रहा था मानो अभी कुछ ही क्षणों पूर्व वह जो कुछ कर रहा था, वह पागलपन ही था। सचमुच क्रोध में वह पागल हो गया था।

गर्दन झुकाए वह बांड के साथ एक कमरे में प्रविष्ट हो गया। कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया गया।

—"बैठो।" बांड ने जब्बर से कहा।

जब्बरसिंह एक कुर्सी पर बैठ गया। उसके सामने जेम्स बांड बैठा था।

—"तुम्हारी आंख का क्या हाल है?" बांड ने बात प्रारम्भ करने की भूमिका बांधी।

—"आंख का घाव ताजा है बांड!" जब्बरसिंह ने कहा —"साधारण बात है कि दर्द होगा।"

—"इसके बावजूद भी तुम···"

—"आंख का यह दर्द कुछ भी नहीं है बांड!" जब्बरसिंह उसकी बात बीच में ही काटकर बोला—"जिसको मानसिक पीड़ा हो, उसके लिए शारीरिक दर्द कोई महत्त्व नहीं रखता। जिसके सीने में प्रतिशोध की ज्वाला धधकती हो, उसे यह आंख की पीड़ा क्या रोकेगी? तुम नहीं जानते बांड, तुम नहीं जानते···" कहता-कहता जब्बरसिंह भावुक हो उठा—"तुम नहीं जानते कि मेरे सीने में कैसी आग भड़क रही है! तुम मेरे दर्द को क्या जानो बांड! मैंने वो देखा है जो किसी भी इंसानको बगावत करने पर मजबूरकरसकता है। सच मानना, जब्बरसिंह ने अपने जीवन में सबसे अधिक प्यार अपनी बहन को किया है—अपनी उस नन्ही-सी पारो को, जो एक कांटा लगते ही भैया-भैया पुकारकर मेरे सीने से लगजाती थी। अगर मेरी बहन को जंगल में कोई कांटा चुभ जाता था तो मेरे सीने में जैसे भाला उतर जाता था। अगर मेरी पारो को एक चींटी काट लेती थी, मेरे सीने पर सांप लोट जाता था। मेरी उसी बहन को मेरी इन्हीं आंखों के सामने हण्टरों से मारा गया था बांड! मैंने उसी बहन की उधड़ती हुई खाल देखी है। मुझे आज भी याद है—जब राणाप्रताप के दरबार में मुझे हण्टरों से मारा जा रहा था तो पारो कैसे चीखी थी! कितनी रोई थी! कितनी गिड़गिड़ाई थी!

वह सब कुछ आज भी मेरी आंखों के सामने उसी तरह तैरता है जैसे वह अभी कुछ क्षण पहले की बात हो। मुझे आज भी याद है, उस कुत्ते भानुप्रताप ने किस प्रकार मेरी नन्ही-मुन्नी गुड़िया को धोखा दिया था। किस प्रकार राणाप्रताप ने मेरे बापू की हत्या की थी। यही खानदान है जिसने मेरी छोटी-सी झोंपड़ी में तूफान ला दिया था···जिसने मेरी जिन्दगी बर्बाद करदी थी। एक-एक दु:ख, एक-एक जिल्लतजो इन्होंने मुझे दी है—मुझे सब यादहै। डाकुओं में रहकर मैंने अपने भांजे को पाल-पोसकर उसे इस काबिल बनाया कि वह बदला ले सके, लेकिन···लेकिन···मेरे दिल को एक और चोट लगी बांड ! इस बार की चोट जब्बर कभी नहीं भूलेगा। मेरी प्यारी बहन उन्हीं कुत्तों से जा मिली, जिन्होंने उसके भाई के सामने उसकी खाल नोंची थी। निर्भय भी धोखा दे गया। मेरी उसनन्ही-सी भोली बहनने यह नहीं सोचा कि उसका भाई कैसे भूल सकता है कि उसकी आंखों के सामने उसकी खाल उधेड़ी गई है। अपनी बहन को मैं क्या कहूं··· निर्भय को मैं कैसे समझाऊं···वो मेरे अपने हैं। वे चाहे मुझे धोखा दें लेकिन जब्बर उनसे प्यार करता है। जब्बर उन पर हुए अत्याचारों का बदला इस इस्टेट के बच्चे-बच्चे से लेगा—सबसे लेगा।" कहते-कहते जब्बरसिंह की आंखों से आंसू टपक पड़े। दिल में धधकती भावुकता की आग बरस पड़ी।

बांड समझ चुका था कि जब्बरसिंह अपनी बहन और निर्भयसिंह से कितना प्यार करता है। वह जान चुका था कि जब्बर भावुकता में बहकर यह सब कुछ बोलता चला गया है। यह कोरी भावुकता बांड के लिए कोई महत्व नहीं रखती थीं। किन्तु इतना वह जानता था कि जब भावुक व्यक्ति भावुकता में बहकर बोल रहा हो तो उसे रोकना नहीं चाहिए, इसलिए शान्त

होकर उसने जब्बर की पूरी बात सुनी थी। उसके चुप होने पर बांड बोला—

—"तुम रो रहे हो जब्बर?"

—"बहन और भांजे की बेवफाई पर रोना आ गया बांड!" आंसू पोंछता हुआ जब्बर बोला—"जब अपनें दुःख देते हैं तो रोना आ ही जाता है। जिन्हें मैंने अपनी जान से ज्यादा चाहा ...जिनके लिए मैं आज तक लड़ रहा हूं—वे ही दुश्मनों से मिल गए।"

—"खैर!" बांड उसे भावुकता की ज्वाला से निकालने का प्रयास करता हुआ बोला—"इन बातों को छोड़ो—सब ठीक हो जाएगा। पहले वह बात सुनो, जो मैं तुम्हें बताने आया था।"

—"अरे!" जब्बरसिंह एकदम भावुकता के भंवर से बाहर आया—"तुम क्या कह रहे थे?"

—"मैं यह कह रहा था कि वह राणाप्रताप, जिसकी हत्या एक बार निर्भयसिंह ने कर दी थी, उसी ने दूसरा जन्म ले लिया है। सुना यह है कि उसे अपने पिछले जीवन की हर बात याद है, एक स्थान पर उसके हाथ निर्भयसिंह लग गया—उसने निर्भय को उसी प्रकार कोड़ों से मारा—अब वह तुम्हारी तलाश में है।"

—"लेकिन यह कैसे हो सकता है?" उलझनपूर्ण स्वर में जब्बरसिंह ने प्रश्न किया।

उत्तर में जेम्स बांड ने उसे सारी घटना बता दी—यह दूसरी बात है कि वह यह छिपा गया कि राणाप्रताप बनने वाला विजय यानी उसके भांजे का ही लड़का है। सब कुछ सुनने के बाद जैसे एक बार पुनः जब्बर के चेहरे पर भूचाल के से भाव आने लगे। उसके नथुने फूलने लगे। गुर्राकर वह बोला—

—"कहां है वो हरामजादा कुत्ता—जिसने निर्भय पर हाथ

उठाया ?"

—"मेरी कैद में।" जेम्स बांड ने कहा।

—"मुझे उस तक पहुंचा दो बांड ! मैं···मैं···अपने हाथ से उसे कत्ल करूंगा।" पुनः जब्बरसिंह पर पागलपन का दौरा सवार होने लगा। उसका चेहरा लाल होता चला गया।

—"लेकिन अभी मैं तुम्हें उसके पास नहीं ले जाऊंगा···।" जेम्स बांड ने चोट की।

—"नहीं···नहीं···बांड !" जैसे पागल हो गया जब्बरसिंह —"मुझे उसके पास ले चलो···मुझे उससे बदला लेना है··· तुम्हें मेरी कसम है बांड, मुझे उसके पास ले चलो। मैं उसके हाथों को तोड़ डालूंगा जिनसे उसने मेरे निर्भय पर कोड़ बरसाए हैं। मैं अधिक नहीं सह सकता बांड—उसे मेरे हवाले कर दो !"

—"नहीं···अभी नहीं।" बांड ने और भी गहरी चोट की।

—"बांड !" जैसे पागल हो गया जब्बर—"मैं तुम्हें तुम्हारे एक बहुत फायदे की बात बता सकता हूं—मैं तुम्हें उस वस्तु का पता बता सकता हूं, जिसके लिए तुम यहां आए हो—लेकिन मुझे उस कुत्ते···"

—"मगर तुम्हें कैसे मालूम कि मैं यहां क्यों आया हूं ?" बांड ने प्रश्न किया।

—"मुझे सब मालूम है।" उत्तेजना में जब्बरसिंह कहता ही चला गया—"मैं सब जानता हूं। मैंने ही तुम्हें यहां बुलाया है—सब कुछ मैंने किया है। मेरी ही सूचना पढ़कर तुम यहां आए हो।"

बांड के होंठों पर ऐसी मुस्कान दौड़ गई, मानो वह अपने लक्ष्य में सफल हो गया हो। उसने कहा—

—"तुमने बुलाया है ! क्या बकते हो ? यहां आने से पहले मैं तुम्हें जानता भी नहीं था।"

—"तुम यकीन करो—मैंने ही तुम्हें यहां बुलाया है।" जब्बरसिंह जोश में कहता ही चला गया—"मैंने ही तुम्हारे देश का ध्यान इतने बड़े लाभ की ओर किया है। कदाचित तुम जानते हो—तुम्हारे देश के राष्ट्रपति को एक पत्र मिला होगा—उसी पत्र के कारण तुम्हारे देश का ध्यान गुलशनगढ़ की ओर गया। उसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए तुम्हारे देश ने गुलशनगढ़ पर आक्रमण किया। मैं तुम्हारी बहुत सहायता कर सकता हूं, लेकिन ···लेकिन इस इस्टेट के एक-एक बच्चे को कत्ल करने का मौका तुम मुझे दो—मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा।"

—"लेकिन इसका क्या सबूत है कि वह पत्र इंग्लैंड को तुमने लिखा था ?" जेम्स बांड ने कहा।

—"सबूत मेरे पास है।" कहते हुए जब्बरसिंह ने अपनी जेब में हाथ डालते हुए कहा—"उस पत्र की एक कॉपी मैं हमेशा अपने पास रखता हूं।" कहते हुए उसने एक कागज निकाला और बांड को थमाता हुआ बोला—"देखो, तुम्हारे देश की रानी को ठीक एक ऐसा ही पत्र मिला होगा। इसी राइटिंग में।"

उत्सुक होकर जेम्स बांड ने पत्र खोला। बिना किसी सम्बोधन के लिखा था—

—"मैं आपके लिए एक अज्ञात आदमी हूं और अज्ञात ही रहना चाहता हूं। किन्तु फिर भी मैं आपके देश को बहुत कुछ ही नहीं बल्कि सब कुछ दे सकता हूं। इतना सब कुछ दे सकता हूं जिसे पाकर आप पूरे विश्व पर राज्य कर सकते हैं। शायद आप सोच रहे होंगे कि मैं किसी खजाने इत्यादि की बात कह रहा हूं लेकिन ऐसा कुछ नहीं है। यह एक ऐसी

अमूल्य वस्तु है जिसे कोई भी प्राप्त करने के लिए इन्सानी खून को पानी की तरह बहा सकता है। मैं यह तो नहीं जानता कि वह वस्तु कहां है किन्तु यह अवश्य बता सकता कि वह वस्तु गुलशनढ़ की धरती पर कहीं है।

अब मैं आपको बताता हूं कि वह वस्तु क्या है?

वह वस्तु है—हजारों वर्ष पूर्व लिखे हुए प्राचीन ग्रन्थ। ये पांच हस्तलिखित ग्रन्थ थे। कदाचित आप यह सोच रहे होंगे कि ये ग्रन्थ किस काम के हो सकते है? जरा ध्यान दीजिए, भारतीय सभ्यता कितनी पुरानी है। प्राचीनकालीन आर्य कितने विद्वान थे—इसका अन्दाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि इन्हीं आर्यों ने बड़े-बड़े आश्चर्यजनक ग्रंथों की रचना की थी। उनमें सबसे प्रसिद्ध 'वेद' है। सारा विश्व जानता है कि आर्यों ने चार वेद लिखे थे। आर्यों के ये ही चार वेद एक ऐसा आश्चर्य था जो आज तक सबसे बड़ा आश्चर्य है। इन वेदों के नाम—यजुर्वेद, अथर्वेद, सामवेद और ऋग्वेद हैं। कहा जाता है कि ऋग्वेद मानव ज्ञान का सबसे पुराना ज्ञान-संचित भंडार है। मैक्समूलर जैसे विद्वान ने कहा है कि ऋग्वेद का ठीक-ठीक समय बताना किसके लिए सम्भव है? ऋग्वेद के १० मण्डलों में १०८० सूत्र हैं और १०५५२ मंत्र हैं। अभी तक इन्हें हिन्दू बुद्धि की सर्वोत्कृष्ट कृति मानते हैं। भारत का अतिप्राचीन साहित्य पूरे विश्व को चौंका देने वाला है। रामायण और महाभारत भारत के दो महान ऐतिहासिक महाकाव्य हैं। इनके अतिरिक्त १८ पुराण हैं। मतलब यह कि भारत के लोग ऐसे-ऐसे ग्रन्थों की रचना करते रहे हैं जिनकी विशेषताओं पर सहज ही विश्वास नहीं किया जा सकता। अभी तक ऋग्वेद को सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना गया है लेकिन हमारे

हाथ एक ऐसा सूत्र लगा है जिससे पता लगता है कि वे पांच ग्रन्थ ऋग्वेद से भी प्राचीन हैं। ये ग्रन्थ अभी तक दुनिया की नजरों से छुपे हुए हैं। इसका आप विश्वास करें कि ये ग्रन्थ ऋग्वेद से भी प्राचीन और लाभदायक हैं। आप जानते होंगे कि चारों वेदों में अलग-अलग विषय पर लिखा गया था। ऋग्वेद विज्ञान से भरा पड़ा था। ये चारों वेद छिन्न-भिन्न होकर पूरे विश्व में बंट गए। इस बात को भी हर सुबुद्धि व्यक्ति जानता है कि आज साइंस के जरिये जितने भी आविष्कार हो रहे है—वह सब ऋग्वेद की देन हैं। ऋग्वेद से प्राचीन ये पांचों हस्तलिखित ग्रन्थ भी वेदों की भांति ही अलग-अलग विषयों पर लिखे गए हैं। इनमें एक ग्रन्थ का विषय विज्ञान है। इनमें दोहों के रूप में न जाने कितने वैज्ञानिक फार्मूले अंकित हैं। मैं इन ग्रन्थों के विषय में अधिक पता नहीं लगा पाया हूं। यह भी पता नहीं लगा पाया हूं कि शेष चार ग्रन्थ किस विषय पर लिखे गए हैं। लेकिन इतना जानता हूं कि ये ग्रन्थ वेदों से भी अधिक लाभदायक हैं। और यह कौन नहीं जानता कि वेद कितने लाभदायक थे। इन पांच ग्रन्थों में एक केवल विज्ञान पर लिखा है और यह ग्रन्थ किसी भी देश के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है। इसमें २,५८५ दोहे हैं। मुझे यह नहीं पता कि ये ग्रन्थ गुलशनगढ़ में कहां हैं, परन्तु इतना पता मैं लगा चुका हूं कि ये ग्रन्थ एक स्थान पर रखे हैं, जिनके विषय में केवल गुलशनगढ़ का वर्तमान राजा जानता है। यहां का राजा अभयसिंह एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक है और आजकल उन ग्रन्थों की खोज में लगा हुआ है।

मैं क्योंकि एक ब्रिटिश नागरिक हूं इसलिए अपने देश को इस विषय में बताना अपना कर्तव्य समझा। जो मुझे मालूम

था, वह इस पत्र में लिख दिया है। मेरे विचार से इन ग्रन्थों को प्राप्त करने के लिए गुलशनगढ़ पर कब्जा करना आवश्यक है। मैंने अपना फर्ज पूरा किया और यह भी स्पष्ट है कि ये ग्रन्थ कहां हैं, इसकी जानकारी केवल अभयसिंह को है—वही आपको इन तक पहुंचा सकता है। अब आप चाहे जो भी रास्ता अपनाएं, इस पत्र में इन ग्रन्थों के विषय में अधिक विस्तृत रूप से लिखने में असमर्थ हूं, इसलिए पत्र में लिखी बातें झूठ लगें तो गुलशनगढ़ जाकर इसकी पुष्टि कर सकते हैं।

धन्यवाद,

—अज्ञात'

जेम्स बांड ने पूरा पत्र पढ़ लिया। वास्तव में उसके देश को एक ऐसा ही पत्र मिला था। उसने उस पत्र को भी पढ़ा था।

बिल्कुल यही राइटिंग और लैंग्वेज थी। एक बार पूरा पत्र पढ़कर उसने अपने सामने बैठे जब्बरसिंह को देखा। अभी वह कुछ कहना ही चाहता था कि जब्बरसिंह बोल पड़ा—

—"अब आप राणाप्रताप को मेरे हवाले कर दें।"

मुस्कराया जेम्स बांड, बोला—"अब हम दोनों एक-दूसरे के लिए काम के आदमी हैं। मैं तुमसे वादा करता हूं कि राणाप्रताप को मैं तुम्हारे हवाले कर दूंगा। लेकिन उससे पहले तुम्हें मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर देना होगा।"

—"क्या?"

—"तुम ब्रितानी नहीं हो।" बांड ने कहा—"फिर इस पत्र में···"

—"केवल इसलिए लिखा था कि ताकि आपके दिमाग में यह न आए कि यह अज्ञात आदमी आपकी सहायता क्यों कर रहा है। आप यह समझें कि एक देशभक्त नागरिक अपना फर्ज

अदा कर रहा है।"

—"तुम्हें इसमें क्या लाभ था ?" जेम्स बांड ने उससे अगला प्रश्न किया।

—"लाभ !" दांत-पर-दांत जमाकर गुर्राया जब्बर—"मैं इस खानदान का विनाश चाहता था। उसी प्रतिशोध की ज्वाला में घुटते हुए मेरी उम्र बीत गई थी। इसी इस्टेट के राजसी खानदान से प्रतिशोध लेने के लिए मैंने ऐसा किया।"

—"क्या पत्र में लिखी यह ग्रन्थ वाली बात सत्य है ?" बांड ने पूछा।

—"एकदम।" जब्बरसिंह बोला—"वास्तव में वेद से भी पुराने वे पांच ग्रन्थ गुलशनगढ़ की धरती पर कहीं हैं। मैंने उसमें लिखा था कि ग्रन्थों की जानकारी केवल अभयसिंह को है—यह भी झूठ था। यह झूठ भी मैंने केवल इसलिए लिखा था ताकि आपका शिकार राजसी खानदान रहे। वास्तविकता यह है कि अभयसिंह भी नहीं जानता कि ये पांचों ग्रन्थ गुलशनगढ़ की धरती पर हैं कहां। जितना कि मैं जानता हूं, उतना ही वह जानता है। यह उसे मालूम है कि ग्रन्थ यहीं कहीं हैं और वह उनकी तलाश कर रहा है।" जब्बरसिंह ने बताया।

—"तुम्हें इन ग्रन्थों के विषय से कैसे मालूम हुआ ?"

—"मैं आपको अपनी सम्पूर्ण जानकारी संक्षिप्त में बताता हूं।" जब्बरसिंह ने कहना शुरू किया—"जब मेरी बहन और भांजे ने धोखा दे दिया तो मैं यहां से भाग गया। उसके बाद—मैं किसी के सामने नहीं आया लेकिन मेरे दिल में तो प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही थी। मैं हर सम्भव ढंग से अभयसिंह आदि से बदला लेने की कोशिश करता रहा। मैं चुप नहीं बैठा था—मैं इस्टेट को छोटी-छोटी हानि पहुंचाता रहा था परन्तु

इतनी शक्ति मेरे पास नहीं थी कि खुलकर मैदान में आ जाता। खैर मैं आपको केवल वह घटना बताता हूं जिससे मुझे इन ग्रंथों के विषय में जानकारी मिली। मैं इस्टेट के लोगों के आस-पास ही रहता था। एक बार मैंने अभयसिंह का पीछा किया। उस समय उसके साथ उसका सबसे अधिक विश्वासी मुलाजिम जैन्ना था। मैंने गुप्त रूप से पीछा किया और पाया कि वह गुलशनगढ़ में ही एक गुप्त प्रयोगशाला में पहुंच गया। उस दिन मुझे पहली बार मालूम हुआ कि अभयसिंह दरअसल एक वैज्ञानिक है। जैन्ना और अभयसिंह की बातों से मुझे यह भी मालूम हुआ कि अभयसिंह के पिता यानी भानुप्रतापसिंह को अपने जमाने में अपने राजसी खजाने के नीचे दबा एक स्वर्ण-लेख मिला था। यह स्वर्ण-लेख साधारण नहीं था बल्कि आर्यसभ्यता से भी प्राचीनसभ्यता का एक स्वर्ण लेख था। इस स्वर्ण-लेख पर विचित्र-सी भाषा में कुछ लिखा था। उसे भानुप्रतापसिंह पढ़ न सके लेकिन वे इतना जान गए कि इसस्वर्ण-लेख में कोई महत्त्व-पूर्ण बात लिखी है। यह स्वर्ण-लेख ठीक ऐसा था जैसे अशोक के जमाने में अहिंसा का प्रचार करने के शिलालेख इत्यादि चले थे। उन्होंने उस स्वर्ण-लेख को अपने राज-ज्योतिषी को दिखाया। ज्योतिषी भी उसपर लिखी भाषा को पढ़ नहीं सका किन्तु उसने अपने ज्योतिषी ज्ञान से इतना बता दिया कि यह लेख किन्हीं विशेष वस्तुओं की खबर देता है। उन्होंने यह भी बताया कि ये स्वर्ण-लेख विज्ञान से सम्बन्धित है। बहुत दिनों तक भानुप्रताप उस स्वर्ण-लेख का मतलब निकालने की कोशिश करते रहे लेकिन असफल रहे। यहां तक कि उनका लड़का अभयसिंह बड़ा हो गया—तब उन्होंने अभयसिंह को विशेष रूप से विज्ञान पढ़ने के लिए विदेश भेजा। जब मुझे यह जानकारी मिली तब मुझे

याद आया कि वास्तव में अभयसिंह को बाहर भेजा गया था। यहवही समय था जब निर्भय राणाप्रताप का कत्ल करने महल में गया था। उन्हीं दिनों अभयसिंह विदेश गया हुआ था और विज्ञान का ज्ञान ले रहा था। भानुप्रताप ने यह बात गुप्त रखी थी कि उसका बेटा विज्ञान पढ़ रहा है। जब अभयसिंह एक बड़ा वैज्ञानिक बनकर लौटा तो भानुप्रताप ने उसकी शादी की और उसके बाद उसने अभयसिंह को उस स्वर्ण-लेख के विषय में बताया। भानुप्रताप ने पहले अभयके लिए एक गुप्त प्रयोगशाला बनवा दी। अभयसिंह उस स्वर्ण-लेख को पढ़ने का प्रयास करता रहा, लेकिन एक लम्बे समय तक असफल रहा। काफी दिनों के निरन्तर कठोर परिश्रम के पश्चात् अभयसिंह उस स्वर्ण-लेख को पढ़ने में सफल हो गया। इस स्वर्ण-लेख के जरिये अभयसिंह को हस्तलिखित कागज मिला। इस कागज पर भी केवल एक दोहा लिखा था। अभयसिंह इस दोहे का मतलब निकालने के चक्कर में था। इसी चक्कर में वह उस दिन प्रयोगशाला में गया था, जहां तक मैंने उसका पीछा किया था। अभयसिंह और जैन्रा की बातों से यहसबपता लगाया था। मैं उस प्रयोगशाला में एक डेस्क के पीछे छुपा हुआ था। उस दिन अभयसिंह ने जैन्रा से कहा था कि वह उस दोहे की पहली आधी पंक्ति का मतलब समझ गया है। उसने जैन्रा को बताया था कि इसदोहे का जितना मतलब निकाल सका है उसमें इतना लिखा है कि गुलशनगढ़ में कहीं वेद से भी पुराने पांच ग्रंथ हैं और जो मानव जाति के कल्याण का एक द्वार है। मैंने उनकी इन्हीं सब बातों को सुना था और तभी मेरे दिमाग में आया कि मैं किस प्रकार इस इस्टेट की ईंट-से-ईंट बजा सकता हूं। मैंने वही किया।"

—"यानी तुमने हमें सूचना दे दी!" वांड ने सबकुछसुनने

के बाद कहा।

—"अब तुम राणाप्रताप को मेरे हवाले कर दो।" जब्बर-सिंह ने कहा—"बदले में मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूं।"

—"क्या सहायता कर सकते हो?"

—"जो तुम चाहो।"

—"जो तुमने बताया है, इसके अतिरिक्त और क्या-क्या जानते हो?" जेम्स बांड ने प्रश्न किया—"क्या तुम यह कभी नहीं जान पाए कि उस दोहे का मतलब क्या है? क्या तुम जानते हो कि अभयसिंह उन ग्रंथों को खोजने में सफल रहा अथवा नहीं? क्या तुम उन ग्रंथों का पता जानते हो?" बांड ने एक-साथ कई प्रश्न कर दिए।

—"नहीं।" जब्बरसिंह ने कहा—"जो कुछ मुझे मालूम था, मैंने एक ही बार में तुम्हें सब कुछ बता दिया है।"

—"देखो जब्बरसिंह!" बांड उसे जाल में उलझाता हुआ बोला—"इस समय परिस्थिति कुछ ऐसी बन गई है कि हम अपना लक्ष्य तुम्हारी सहायता से प्राप्त कर सकते हैं और तुम अपना लक्ष्य हमारी सहायता से। इस समय अगर हम दोनों मिलकर काम करें तो एक-दूसरे की सहायता भली-भांति कर सकते हैं। मैं तुमसे वादा करता हूं कि मैं न केवल राणाप्रताप को ही तुम्हारे हवाले कर दूंगा बल्कि इस इस्टेट के बच्चे-बच्चे को तुम्हारे कदमों में लाकर डाल दूंगा, किन्तु उससे पहले तुम्हें हमारा एक काम करना होगा।"

—"क्या?" जब्बर ने प्रश्न किया।

—"तुम्हें हमें अभयसिंह की प्रयोगशाला तक पहुंचाना होगा।" बांड ने कहा—"राणाप्रताप को तो हम तुम्हारे हवाले कर ही देंगे, बल्कि संभव है कि अभयसिंह भी तुम्हें उस प्रयोग-

शाला में ही टकरा जाए।"

बात जब्बरसिंह की समझ में आती जा रही थी।

□ □

□ □

जीप अपनी सम्पूर्ण गति का परिचय दे रही थी। जीप एक चीनी सैनिक चला रहा था। चीनी सैनिक के अतिरिक्त उसमें एक इन्सान और था और वह था ग्रीफित।

ग्रीफित के चेहरे पर इस समय कठोरता थी। उसके मस्तिष्क में विचित्र प्रकार के विचारों का आवागमन हो रहा था। यह जीप उस जगह की ओर बढ़ रही थी जहां वर्तमान सरकार के अपराधियों को रखा गया था। जहां वे इन्सान कैद थे, जिन्हें अपराधी के स्थान पर क्रांतिकारी कहना अधिक उचित होगा। अपनी तीव्र गति के कारण जीप जल्दी ही उस सैनिक शिविर के क़रीब पहुंच गई। सैनिक शिविर के चारों ओर बीस फीट ऊंची चोटी की दीवार खिची हुई थी। एक तरफ शिविर में प्रविष्ट होने के लिए द्वार था, जिस पर हर समय लगभग पन्द्रह सैनिकों का पहरा रहता था।

जीप उस द्वार पर रुकी।

द्वार पर अमेरिकी, चीनी और ब्रिटेनी सैनिक थे। सबने एक साथ ग्रीफित को जोरदार सैल्यूट दिया। द्वार तुरन्त खोल दिया गया और जीप शिविर में प्रविष्ट होती चली गई। इस समय जीप शिविर के बीच बनी एक लम्बी सड़क से गुजर रही थी। सड़क के दोनों ओर मैदान था। मैदान में स्थान-स्थान पर सैनिक मुस्तैदी के साथ पहरा दे रहे थे। मैदान में तीन सर्च-लाइट स्टेशन थे। ग्रीफित चलती हुई जीप में से इस प्रकार

निरीक्षण कर रहा था मानों यहां पर की गई सुरक्षा का निरीक्षण कर रहा हो। ग्रीफित अभी अपने विचारों मे ही उलझा हुआ था कि जीप बैरकों के करीब आकर रुक गई।

ग्रीफित जीप से बाहर निकल आया।

वहां पर उपस्थित सैनिक अधिकारियों ने ग्रीफित को जोरदार सैल्यूट दिए। ग्रीफित ने गर्दन अकड़ाकर प्रत्येक का जवाब दिया और आगे बढ़ गया। एक अमेरिकी और एक चीनी सैनिक अधिकारी बॉडीगार्डों की तरह उसके साथ चल दिए। जीप का ड्राइवर वहीं रह गया। यह दूसरी बात है कि फिलहाल अपनी ड्यूटी समाप्त पाकर उसने एक सिगरेट लगा ली और—एक कश लगाकर बैरकों वाले बाड़े में प्रविष्ट होते उन तीनों को देखने लगा।

—"सब ठीक है न ?" चलते-चलते ही ग्रीफित ने ऑर्डर दिया।

—"यस सर !" दोनों अधिकारियों ने एक साथ सम्मानित स्वर में उत्तर दिया।

इसी प्रकार की बातें करते हुए वे आगे बढ़ते रहे। इस समय वे बैरकों के सामने से गुजर रहे थे। एक-एक बैरक में दस-दस क्रांतिकारी कैद थे। ये सब युवा क्रांतिकारी थे जो अपने देश पर विदेशियों का आक्रमण होते ही युद्ध में कूद पड़े थे। कुछ मारे गए थे और जो जीवित बचे थे उन्हें यहां कैद कर लिया गया था। कुल मिलाकर ये युवा जिनके दिलों में क्रांति की आग भड़क रही थी, अस्सी-नब्बे होंगे लेकिन दिल में वतन के लिए प्यार होने के बाद भी ये कुछ कर पाने में असमर्थ थे। इसी प्रकार चलते हुए वे एक बैरक का ताला खोलकर उसमें प्रविष्ट हो गए। इस बैरक के बाहर तीन सैनिक खड़े थे। इन तीनों में

से ही एक ने बैरक का लॉक खोला था। ये बैरक खाली थीं। एक अधिकारी ने आगे बढ़कर एक दीवार में लगा एक बटन दबा दिया। बैरक के बीचोबीच का फर्श अपने स्थान से हट गया। यह एक तहखाना था। एक के बाद एक तीनों इस तहखाने में उतरते चले गए। इस समय वे एक लम्बी गैलरी में खड़े थे। गैलरी की दोनों दीवारों पर जगह-जगह मशालें जल रही थीं। वे तीनों मशालों के प्रकाश में आगे बढ़ते चले गए। गैलरी के दोनों ओर कोठरियां बनी हुई थीं। एक कोठरी के सामने जाकर तीनों ठहरे। एक अधिकारी ने जेब से विचित्र-सी चाबी निकाली और लोहे के मजबूत लॉक को खोलकर अन्दर प्रविष्ट हो गए। कोठरी में प्रकाश था—जलती हुई मशाल का प्रकाश।

सामने जंजीरों में जकड़ा एक कैदी नजर आ रहा था।

वह कैदी अलफांसे के अतिरिक्त और कोई नहीं था। दरवाजा खुलते ही अलफांसे ने उधर देखा। ग्रीफित से उसकी निगाह टकराई। तीनों एक साथ अलफांसे की ओर बढ़े। अलफांसे इस प्रकार जंजीरों से जकड़ा था कि उसका हिलना भी दुर्लभ था। उन्हें देखकर वह कुछ बोला नहीं बल्कि शांत नजरों से उन्हें देखता रहा।

अचानक—

एकदम जैसे बिजली कौंधी।

न केवल सैनिक अधिकारी बल्कि खुद अलफांसे भी बुरी तरह उछल पड़ा। ग्रीफित ने इतनी अधिक फुर्ती का प्रदर्शन किया था कि हर व्यक्ति हैरत में रह गया। पलक झपकते ही न केवल उसके हाथ में रिवॉल्वर आ गया था बल्कि—

फिर...

एक हल्की-सी आवाज के साथ उसमें से एक सिठाई की गोली निकलकर चीनी अधिकारी के भेजे में समा गई। उसे

चीखने तक का अवसर नहीं मिला और धड़ाम से कोठरी के फर्श पर गिर पड़ा। दूसरा सैनिक हैरत में रह गया और जैसे ही वह स्थिति को समझा, बड़ी तेजी से उसका हाथ अपने होलेस्टर की ओर गया, लेकिन—

—"ठहरो बेटे!" गुर्राकर ग्रीफित ने उसके हाथ को ठिठकने पर विवश कर दिया—"हरकत करने का अन्जाम वही होगा जो बिना हरकत किए तुम्हारे साथी का हुआ है। तुम देख रहे हो कि इस रिवॉल्वर पर साइलेंसर फिट है। यह अपना काम खामोशी के साथ करता है। बोलो—इन जंजीरो में बंधकर रहना पसन्द करोगे या मरना?"

सैनिक के जिस्म का जर्रा-जर्रा कांप रहा था। बोला—"आप कौन हैं?"

—"फिर...?"

उसके प्रश्न करते ही ग्रीफित के [illegible] ने उसे यमराज के दरबार में धक्का दे दिया। सीने पर गो[illegible] करवह भी शहीद हो चुका था। ग्रीफित ने एक बार फर्श पर पड़ी उसकी लाश देखी और बोला—"ये इतनी-सी बात नहीं समझते कि ऐसे समय पर इस प्रकार का प्रश्न करना निहायत ही मूर्खता की बात होती है। इन्हें सोचना चाहिए कि अगर इन्हें बताना होता कि मैं कौन हूं तो यहां [illegible]मेकअप करके क्यों आता?" कहता हुआ वह अलफांसे की ओर पलटा।

अलफांसे ग्रीफित की सारी कार्यवाही देख रहा था। इतना तो वह समझ ही चुका था कि ग्रीफित बना हुआ यह व्यक्ति वास्तव में कोई और है। अभी वह प्रश्न करना ही चाहता था कि वह बोल पड़ा—

—"तुम भी मुझसे यह प्रश्न करने की मूर्खता मत करना..."

फिलहाल तुम वही करते जाओ, जो मैं कह रहा हूं।"

अलफांसे ने प्रश्नवाचक निगाहों से उसे देखा।

—"इतना तो तुम समझ गए होंगे कि मैं तुम्हें इस कैद से छुटकारा दिलाने आया हूं।" कह कर ग्रीफित ने अपनी जेब से एक छोटी-सी शीशी निकालकर उसमें से कोई तरल पदार्थ जंजीरों पर बिखेर दिया।

एक मिनट पश्चात् ही जंजीरें गल गईं। अलफांसे आजाद हो गया।

—"इस सैनिक के कपड़े पहन लो।" ग्रीफित ने उस सैनिक की ओर संकेत किया जिसके भेजे में गोली लगी थी।

अलफांसे ने वैसा ही किया। पूरी वर्दी पहनने के बाद उसने कैप सिर पर रखकर उसको चेहरे के ऊपर झुका लिया। उसका चेहरा किसी हद तक ढक गया। जब वे चलने के लिए तैयार हो गए तो ग्रीफित बोला—

—"धनुषटंकार कहां है?"

—"इसी गैलरी की किसी कोठरी में होगा।" अलफांसे ने कहा। उसके बाद सतर्कता के साथ वे दोनों कोठरी से बाहर आ गए। गैलरी में मौत जैसा सन्नाटा था। अलफांसे ने अपने पहने हुए लिबास से चाबियां निकाल लीं। हर चाबी पर कोठरी नम्बर लिखा था। सबसे पहले अलफांसे ने अपने बराबर वाली कोठरी खोली। कोठरी में दरवाजे के सामने ही पिंजरा रखा हुआ था। उस पिंजरे में कैद था—धनुषटंकार!

अलफांसे ने चेहरे पर झुका अपना हैट ऊपर उठा दिया। अलफांसे को देखते ही धनुषटंकार पिंजरे में ही खुशी के कारण उछलने लगा। पिंजरे का लॉक खोला गया। बाहर निकलते ही धनुषटंकार ने अपनी आदत के मुताबिक अलफांसे के चरण-स्पर्श

किए और लगातार दो-तीन चुम्बन ले डाले। इतना वह समझ चुका था कि ग्रीफित बना हुआ यह व्यक्ति उन्हीं का कोई साथी है। इसके बाद वे तीनों उस कोठरी से बाहर निकले और फिर एक-एक कोठरी का ताला खोलकर रैना, ब्लैक ब्वॉय और निर्भयसिंह को आजाद किया गया था। ब्लैक ब्वॉय ने दूसरे मृत सैनिक अधिकारी की वर्दी पहन ली।

अब दृश्य वैसा ही बन गया जैसा ग्रीफित के आते समय था, यानी ग्रीफित बीच में चल रहा था तथा अलफांसे और ब्लैक ब्वॉय सैनिक अधिकारी के रूप में उसके बॉडीगार्ड। उसके पीछे रैना, धनुषटंकार और ठाकुर निर्भयसिंह थे। ग्रीफित ने सबको एक-एक रिवॉल्वर थमा दिया था। ये रिवॉल्वर वह अपने लिबास में छुपाकर लाया था। इस प्रकार चलते हुए ये बैरक तक पहुंच गए।

अब उन्हें इस बैरक से बाहर निकलना था। दरवाजे पर तीन सैनिक खड़े थे।

—"तुम तीनों इधर आओ।" बैरक के अन्दर से ही ग्रीफित ने आदेशात्मक स्वर में कहा।

तीनों एकसाथ अन्दर आए और एक पल के भी सौवें हिस्से के अन्तराल से ग्रीफित के साइलेंसरयुक्त रिवॉल्वर ने गोली उगलकर तीनों को एकसाथ ही ईश्वरपुरी पहुंचा दिया। उनका क्रिया-कर्म होते ही तहखाने से उछलकर बैरक में सबसे पहले आने वाली हस्ती थी धनुषटंकार। निर्भयसिंह और रैना भी आ गए। ग्रीफित आराम से पुनः अपना रिवॉल्वर भर रहा था।

इसी प्रकार—

पहले वे तीनों बाहर निकले।

हर बैरक पर दो सैनिक थे। बैरक की लम्बी कतार-सी

लगी हुई थी। लेकिन जंगे-आजादी के ये तीन दीवाने तो मानो सिरों पर कफन बांधकर चले थे। दुश्मन के खून की नदियां बहाना उनका उद्देश्य था। सबने पहले ही निश्चय कर लिया था कि किसको कहां क्या करना है। बैरक में से निकलते ही क्या करना है।

वही सब हुआ। किसी ने एक पल भी नहीं गंवाया।

किसी को इस खतरे का गुमान तक नहीं था। पलक झपकते ही तीनों की आंखें मिलीं और···

धांय-धांय-धांय!

अचानक ही वातावरण फायरों की आवाज से गूंजने लगा। पहले तीनों के रिवॉल्वर गरजे और फिर उनकी गर्जना में रैना, ठाकुर साहब और धनुषटंकार के रिवॉल्वर भी शामिल हो गए। कुछ भी न समझते हुए सैनिक धड़-धड़ गिरने लगे। एक ही मिनट में वहां हंगामा-सा हो गया। इन शैतानों के रिवॉल्वर दनादन गर्ज रहे थे और जवाब में सैनिक एक के बाद एक ईश्वरपुरी की ओर दौड़ रहे थे। गैलरी में बुरी तरह भगदड़ मच गई। कुछ भी न समझते हुए सैनिक ढेर होते जा रहे थे। कुछ संभले और उन्होंने जवाब में फायर भी किए लेकिन इन शैतानों में से कोई शिकार नहीं हो सका।

सारे शिविर में एकदम हंगामा मच गया।

बैरकों में कैद युवा क्रांतिकारी बैरकों के दरवाजों की सलाखों से लिपटकर बाहर होने वाले इस उत्पात को देख रहे थे। भागता हुआ ब्लैक ब्वॉय अपने समीप वाली बैरक के पास पहुंचा और अपनी पूरी शक्ति से चीखा—

—"साथियो, वक्त आ गया है। हम सब इस देश की सन्तान हैं। वतन पर हम मर मिटेंगे। हम तुम्हें आजाद कराने

आए हैं—सब मिलकर विदेशी सरकार का सामना करेंगे। यहां से निकलकर हमें अलग नहीं होना है। हमें साथ रहना है—एकसाथ हम इस सरकार का जहरीला फन कुचलेंगे।" कहने के बाद अजय यानी ब्लैक ब्वॉय ने एक क्षण भी नहीं खोया। शब्दों के एकदम बाद उसके रिवॉल्वर ने शोला उगला। बैरक के बाहर लटकता मजबूत तोला एक झटके के साथ टूट गया।

बिल्कुल इसी प्रकार की क्रिया।

ग्रेफित, अलफांसे, रैना, ठाकुर साहब इत्यादि ने अलग-अलग बैरकों पर की। सारे शिविर में भयानक उत्पात था। धुआंधार गोलियों की आवाजों ने न केवल गैलरी में बल्कि सम्पूर्ण शिविर को चौंकने पर मजबूर कर दिया था। बाहर खड़े सैनिकों में भी भगदड़ मच गई थी। अनेक सैनिक अपने हथियार सम्हाले गैलरी की ओर लपके थे।

और इधर—

बैरकों के ताले टूट गए। जोशीले युवा क्रांतिकारियों के झुंड के झुंड बाहर आ गए। इन युवाओं के दिलों में क्रांति के ज्वालामुखी धधक रहे थे। रगों में बहते खून के कतरे विदेशियों की लाशें बिछा देने के लिए मचल रहे थे। भुजाएं फड़क उठीं। भयानक शोर से सम्पूर्ण दिशाएं कांप उठीं। ये युवा झपटे और पल भर में धरती से वे सभी शस्त्र गायब हो गए जो मृत सैनिकों के हाथों से गिरे थे। कुछ युवकों ने वे शस्त्र सम्हाल लिए। शेष खाली हाथ ही खुशी से नाचने लगे।

—"इन्कलाब!" किसी जोशीले युवक की आवाज वातावरण को चीरती चली गई।

—"जिन्दाबाद!" विशाल युवा समूह ने गगन तक को कंपकंपा दिया।

"विदेशी कुत्तों ! गुलशन छोड़ो।"

जैसे अनेक जोशीले नारों से धरती का कलेजा दहल उठा। बाहर से भागते हुए सैनिक गैलरी में आए किन्तु आते ही मौत के घाट उतार दिए गए। ग्रीफित, रैना, ब्लैक ब्वॉय, निर्भयसिंह अलफांसे और धनुषटंकार को कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। गुलशनगढ़ के युवक लाशों के ढेर लगाते रहे। भयानक युद्ध जारी हो गया।

इन्सान लाशों में बदलने लगे।

सम्पूर्ण दिशाएं कांप उठीं।

पागल दीवानों ने लाशें बिछा दीं। यह युद्ध बेहद खौफनाक था। छोटे-से देश के युवक गुलामी की बेड़ियों में जकड़े हुए आजादी पाने के लिए पागल हो रहे थे। माना कि शिविर में सैनिकों की संख्या काफी थी किन्तु किसी भी प्रकार कैदियों से अधिक नहीं थी।

एक तो ये युवा संख्या में अधिक, ऊपर से आजादी पाने का भयानक भूत !

इस सबका परिणाम यह हुआ कि सैनिक अधिक देर तक उनके सामने नहीं टिक सके। उनमें से अधिकांश मारे गए। शेष बचा एकाध सैनिक जान बचाकर ऐसा भागा कि उसे पीछे मुड़कर देखने का समय न था।

अन्त में—

बाजी क्रांतिकारियों के हाथ लगी। सम्पूर्ण शिविर पर उनका राज्य हो गया। पागल-से होकर मैदान में मस्ती से झूम-नाच रहे अधिकांश के हाथ में गनें थीं।

ग्रीफ्ति ने एक बार नाचते हुए युवाओं को देखा और एक पल के लिए अपनी सफलता पर उसके होंठों पर मुस्कान दौड़

गई। सहसा वह ऊंची आवाज में बोला।

और जब उसने इस शब्द को जोर-जोर से कई बार दोहराया तो सभी युवकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो गया। इस समय वह उन सभी क्रांतिकारियों का नेता बन गया था। सब उसकी ओर देख रहे थे और वह ऊंची आवाज में कह रहा था—

—"अब आप लोग आजाद हैं।"

मात्र इतना कहकर वह शान्त हो गया। विशाल युवा समूह पर उसने दृष्टि घुमाई। इस समय सर्वत्र सन्नाटा था। कोई भी तनिक भी आहट को जन्म नहीं दे रहा था। सब इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि ग्रीफित आगे कुछ कहे।

—"वह समय आ गया है दोस्तो, जब हम विदेशी कुत्तों को अपने देश की धरती से खदेड़कर निकाल सकते हैं। परन्तु यह कार्य तभी सम्भव है जब हम सब एक शक्ति के अधीन काम करें। हम सब क्रान्ति के देवता के पुजारी हैं। क्रांति के देवता के पास शक्ति है। हम सब संगठित होकर कार्य करेंगे। आप सब जानते हैं कि अगर हम अकेले-अकेले रहे तो कोई कुछ नहीं कर सकेगा। संगठन में ही शक्ति है। सारी शक्ति से हम अपने देश को आजाद करा सकते हैं।"

इधर ग्रीफित अपने जोशीले भाषण से युवा-हृदय में धधकते शोलों को क्रांति का रूप दे रहा था और इस समूह से थोड़ी दूर खड़े निर्भयसिंह अपने समीप खड़े अलफांसे से कह रहे थे—

—"ये ग्रीफित हो कौन सकता है?"

—"ये मैं अभी खुद नहीं पहचान पाया हूं।" अलफांसे भी ग्रीफित की ओर देखता हुआ बोला।

धनुषटंकार ने एक मृत सैनिक की जेब से बीड़ी निकाल ली

थी जिसे सुलगाकर इस समय वह कश लेने में व्यस्त था, मानो उसे इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

—"क्या आप सब लोग तैयार हैं?" अन्त में ग्रीफित ने पूछा।

—"तैयार हैं।" युवाओं ने एक स्वर में कहा।

—"आओ मेरे साथ।" ग्रीफित ने कहा और फिर ग्रीफित चल पड़ा। उसके पीछे युवा समूह था। अलफांसे इत्यादि भी समूह के साथ थे। वे पैदल ही तीव्र गति के साथ आगे बढ़ते रहे। वे सड़क पर नहीं बल्कि पहाड़ियों में चल रहे थे। इस समय समूह पूरी तरह शान्त था। ग्रीफित ने उन्हें समझा दिया था कि सबको शान्त होकर चलता है। अगर वक्त से पहले दुश्मन को उनकी स्थिति का पता लग गया तो सारा प्लान फेल हो जाएगा। ग्रीफित के साथ-साथ अलफांसे इत्यादि भी इस बात के प्रति पूरी तरह से सतर्क थे कि कहीं कोई सैनिक पीछा तो नहीं कर रहा है? विशाल समूह का वह काफिला लगभग दो घण्टे तक उसी शान्ति के साथ चलता रहा। इसी बीच उन्होंने न जाने कितनी पहाड़ियां तय कर ली थीं, ग्रीफित ने उन्हें अनेक घुमावदार पहाड़ियों के चारों तरफ घुमा दिया था। उसने सबको कुछ इस ढंग से घुमाया था कि किसी को ठीक से रास्ते का ज्ञान भी नहीं रहा।

अब वह काफिला एक पहाड़ी की आड़ में ठहर गया।

—"आप लोग पांच मिनट यहीं ठहरिए।" वहां पहुंचकर ग्रीफित ने कहा—"मैं अभी पांच मिनट में वापस आता हूं।" कहकर वह घूमा और पहाड़ी के दूसरी ओर अकेला ही बढ़ गया। सभी अपने नेता को बढ़ता हुआ देखते रहे। वह लगभग दौड़ने जैसी चाल के साथ पहाड़ी के दूसरी ओर घूमकर उनकी नजरों

से ओझल हो गया। समूह शांति के साथ वहीं खड़ा रहा।

ग्रीफित लगभग दौड़ता हुआ दर्रे में उतर गया और दर्रे से घूमकर पुन: समीप वाली पहाड़ी पर चढ़ा और घूमकर उस पहाड़ी के दूसरी ओर पहुंच गया। अगले ही पल वह इस पहाड़ी के विशाल पत्थर के समीप खड़ा था। इस पत्थर पर एक 'क्रॉस' का चिह्न बना हुआ था। उसने शक्ति लगाकर पत्थर को थोड़ा-सा हटाया। सरलता से वहां इतना स्थान बन गया कि हाथ आराम से अन्दर जा सके। उसने हाथ अन्दर किया और अन्दर लगे एक स्थान के हथौड़े को जोर से नीचे दवा दिया।

हल्की-सी आवाज के साथ पहाड़ी के नीचे का स्थान दो भागों में विभक्त होता चला गया।

इधर पांच मिनट गुजरते ही समूह के सामने ग्रीफित पहुंच गया। उन सबको साथ लेकर ग्रीफित पुन: उसी तरफ बढ़ गया जिधर से वापस आया था।

जब ग्रीफित उन्हें लेकर फटी हुई पहाड़ी के पास पहुंचा तो हर युवा आश्चर्य के साथ उछल पड़ा। अलफांसे इत्यादि भी हत्प्रभ रह गए। सबने चौंककर अविश्वास भरी नजरों से एक-दूसरे को देखा। किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि इन पहाड़ियों के नीचे ऐसी व्यवस्था होगी।

सबने देखा—पहाड़ी एक विशाल फाटक की भांति खुली हुई थी। वे स्पष्ट देख सकते थे कि पहाड़ी अन्दर से खोखली है और सबसे आश्चर्य की वात यह थी कि पहाड़ी के उस खोखले भाग में केवल रेल की पटरी ही नहीं थी बल्कि पटरी पर रेल भी खड़ी थी। सब लोग फटी हुई पहाड़ी में से रेल के बीच का भाग देख सकते थे। शेष रेल पहाड़ी के दायें-बायें उनकी नजरों से ओझल हो गई थी। रेल इस समय पहाड़ी के अन्दर बनी पटरियों पर

अब्दुल वहीद मेकरानी

स्थिर थी। कोई भी यह अनुमान नहीं लगा सका था कि रेल का इन्जन किधर है। सब चमत्कृत-से उस रेल को देख रहे थे।

अगले दो मिनट पश्चात ही—

वे सब रेल में सवार थे।

पहाड़ी पुनः अपने स्थान पर आकर फिक्स हो गई थी। अन्दर अन्धकार छा गया, लेकिन रेल के अन्दर डिब्बों की लाइट ऑन थी। हर चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे। यह सब कुछ सबको एक स्वप्न के समान लग रहा था। रेल चल पड़ी थी। कमाल यह था कि इंजन की आवाज तक नहीं हो रही थी, यह दूसरी बात है कि रेल की पटरियों पर चलने से खटर-पटर हो रही थी किन्तु—

यह आवाज भी पहाड़ी के अन्दर घुटकर रह गई थी।

▭ ▭

▭ ▭

—"पारो!" विकास के होंठ बुदबुदा उठे।

दस नम्बर के रूप में पारो को देखकर उसे कम आश्चर्य नहीं हुआ था, किन्तु यह समय अधिक आश्चर्य करने का नहीं था। आस-पास का सम्पूर्ण सागर भयानक युद्ध-स्थल बना हुआ था। जलपोत में भारत से आए शस्त्र थे जिन्हें दुश्मनों से बचाकर ठिकाने तक पहुंचाना सबसे अधिक आवश्यक था। उसने पारो का जिस्म अपने बायें कन्धे पर डाला और तेजी के साथ पानी में एक तरफ को रेंग गया। वह जल्दणसे-जल्द जलपोत पर पहुंच जाना चाहता था परन्तु अभी वह अधिक दूर नहीं निकला था कि उसकी दृष्टि एक पनडुब्बी पर पड़ी।

विकास चौंका—

ABDUL WAHID MEKRANI

पनडुब्बी का रुख उसी की ओर था। विकास की स्थिति चिन्ताजनक थी। कदाचित इसलिए कि इस समय उसके पास कोई हथियार नहीं था और कन्धे पर पारो पड़ी हुई थी। स्टीमर का भय विकास को नहीं था, क्योंकि उसे जलपोत पर उपस्थित भारतीय सैनिकों ने नष्ट कर दिया था।

अभी कुछ ही क्षणों पूर्व सागर में भयानक उत्पात हुआ था, जिसके परिणामानुसार सागर बुरी तरह गरज रहा था और पानी की इस उथल-पुथल में उसे जहाज नजर नहीं आ रहा था। दुश्मन की पनडुब्बी उसके बेहद करीब आ चुकी थी। अपने बचने का उसे कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। तभी उसकी निगाह पनडुब्बी की बॉडी से बाहर झांकती हुई एक वाटरगन की नाल पर पड़ी। उसने बचने के लिए तेजी से हाथ-पैर मारे—किन्तु खुले सागर में वह भला कहां बचता?

अभी वह कुछ समझ भी नहीं पाया था कि उसकी दृष्टि ठीक अपने और पनडुब्बी के बीच में उभरने वाले मगरमच्छ पर पड़ी। यह मगरमच्छ सागर के गर्भ से निकलकर उन दोनों के बीच में आ गया था। विकास के देखते-ही-देखते मगरमच्छ बड़ी तेजी से पनडुब्बी की ओर बढ़ा।

उसी पल—

सागर तारपीडो की गर्जना से गरज उठा। जलते हुए शोले सागर की छाती को चीरते हुए सीधे मगरमच्छ से टकराए और उस पल विकास आश्चर्यचकित रह गया जब मगरमच्छ पर तारपीडो का कोई प्रभाव नहीं हुआ। इसके विपरीत मगरमच्छ ने अपना भयानक जबड़ा खोल दिया।

मगरमच्छ के मुंह से धधकती हुई आग लपकी।

और—

Abdul Wahid Mekrani
Dasgah Tola

एक ज़ोरदार धमाके से सागर का कलेजा दहल उठा। एक ही पल में पनडुब्बी टुकड़े-टुकड़े होकर सागर में बिखर गई। विकास बुरी तरह पानी में लहरा उठा। परन्तु पारो को उसने नहीं छोड़ा। जब तक वह स्वयं को संभालता, मगरमच्छ घूमकर उसके करीब आ चुका था। उसके करीब आते ही मगरमच्छ ने अपना भयानक जबड़ा खोल दिया।

न चाहते हुए भी विकास पारो सहित उसमें समा गया।

अगले ही पल—

वह पनडुब्बी के एक सुरक्षित कक्ष में था। उसके सामने 'क्रांति का देवता' खड़ा था जो उसे देखते ही अपने बायें हाथ की दो उंगलियों से दायें पैर का घुटना खुजाने लगा था। विकास एकदम सम्मान के साथ नतमस्तक हो गया।

—"जलपोत को सूचना दो कि हम मगरमच्छ के जरिये उन तक पहुंच रहे हैं।" क्रांति के देवता ने तेजी के साथ कहा—"वे मगरमच्छ को उड़ाने की चेष्टा न करें।" यह कहता हुआ क्रांति का देवता स्क्रीन की ओर मुड़ा और बोला—"सूचना देना कि उन पर दुश्मन दो विमानों से हवाई हमला करने वाला है।"

विकास ने सुना, जवाब कुछ नहीं दिया। पारो के जिस्म को कक्ष में एक तरफ लिटा दिया और खुद ट्रांसमीटर के पुर्जों से जूझने लगा। कुछ ही देर में वह सम्बन्ध स्थापित करने में सफल हो गया और उसने भारतीय कर्नल को वह सब सूचित कर दिया जो क्रांति के देवता ने कहा था।

▭ ▭

▭ ▭

भारतीय जलपोत किसी मस्त हाथी की भांति सागर की

अब्दुल वहीद अंसारी इरशाद रोला

छाती पर रेंग रहा था। यह सम्पूर्ण जलपोत शस्त्रों से भरा पड़ा था। इन शस्त्रों की सुरक्षा करने वाले भारतीय सैनिक किसी भी प्रकार बीस से कम नहीं थे। सारा सागर युद्ध-क्षेत्र बना हुआ था। अभी-अभी वे पनडुब्बी और एक स्टीमर को समाप्त कर चुके थे। उनके सामने ही इनके साथियों की पनडुब्बी समाप्त हो गई थी। जलपोत पर ही सैंतीस और पन्द्रह नम्बर उपस्थित थे। इस समय वे युद्ध-कक्ष में थे। इनके अतिरिक्त अन्य भारतीय सैनिक अपने-अपने शस्त्र संभाले मोर्चे पर जमे हुए थे।

सबकी दृष्टि स्क्रीन पर जमी हुई थी।

इस समय उन्हें आस-पास पानी के अतिरिक्त कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। सब लोग अपने साथियों की पनडुब्बी के लिए चिन्तित थे। पानी में वह पनडुब्बी को तलाश कर ही रहे थे कि अचानक युद्ध-कक्ष में उनके कर्नल की आवाज गूंजी। कर्नल ने वही सूचना यहां भी प्रसारित कर दी जो उसे ट्रांसमीटर के जरिये विकास से मिली थी। अभी उसकी सूचना समाप्त ही हुई थी कि—

सागर के ऊपर का गगन दो विमानों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

सोचने-समझने के लिए समय कम था। नम्बर सैंतीस और पन्द्रह तेजी के साथ भागते हुए जहाज के ऊपर डैक पर पहुंचे। डैक पर एक तोप थी और भारतीय सैनिक उस गगनभेदी तोप का जबड़ा आकाश की ओर उठा रहे थे कि सैंतीस और पन्द्रह ने [illegible]—दो विमान जहाज के ऊपर गड़गड़ा रहे थे।

[illegible]हाज पर बुरी तरह हलचल मची हुई थी।

[illegible]सैनिक अपना-अपना काम बड़ी तत्परता से कर रहा

था। दायीं ओर जहाज पर हवाईपट्टी बनी हुई थी। उस पट्टी पर एक छोटा-सा नेट खड़ा था। यह नेट भारतीय वैज्ञानिकों के दिमाग का कमाल था। पलक झपकते ही हिन्दुस्तान का एक जांबाज हवाबाज नेट के कॉकपिट में समा गया।

चारों ओर कार्यवाही बड़ी तेजी के साथ हो रही थी।

इधर—

हवा में तैरते दुश्मन के विमान ने दहकता हुआ एक गोला जहाज पर फेंका। निशाना एकदम सच्चा था। वायु को चीरता हुआ गोला सीधा जलपोत की ओर आया लेकिन जलपोत का संचालन करने वाले भी किसी मां के रणबांकुरे लाल थे। बड़ी तेजी के साथ उन्होंने जहाज को सागर की छाती पर घुमा दिया।

और निशाना चूक गया।

दहकता हुआ गोला जलपोत के बराबर में सागर की छाती से टकराया। भयानक धमाके के साथ पानी की एक दीवार खतरनाक ढंग से पानी में उछली और जलपोत पानी की लहरों पर लहरा उठा। एक क्षण के लिए जहाज में उपस्थित सभी इंसान लहरा उठे, किन्तु तोपची ने तोप के निशाने को गगन पर लेकर दोनों विमानों में से किसी को निशाने पर लेने की चेष्टा करने लगा।

धड़ाम!

एक भयानक धमाके के साथ एक बम तोप की नाल से निकलकर गगन की ओर लपका। निशाना इस तोपची का भी एकदम ठीक था। परन्तु दुश्मन विमान ने एक डाई लेकर उसे बेकार कर दिया और खुद को साफ बचा गया।

इधर हवाईपट्टी पर उड़ा नेट बन्दूक से छूटी गोली की

भांति पट्टी पर दौड़ा और फिर पलक झपकते ही गगन में उठता चला गया। दोनों विमानों में से एक लौटकर पुनः जलपोत की ओर आ रहा था।

जलपोत के ठीक ऊपर आकर विमान ने एक दस्ती बम उगला।

और—यह दस्ती बम जलपोत के लिए खतरनाक बन गया।

जहाज का चालक यह अनुमान नहीं लगा सका कि दस्ती बम किस कोण पर आ रहा है। वह जहाज को उसकी मार से नहीं बचा सका था। दस्ती बम जहाज के एक डैक पर गिरने ही वाला था कि एक सैनि... ...ाल दिखा दिया। निश्चित रूप से यह बम डैक पर गिरने ...ा था लेकिन उसी क्षण एक सैनिक किसी गोरिल्ले की भांति हवा में उछला और—

उसके बाद···

उसने जो कुछ किया, वह एकदम हतप्रभ करने वाला था। सब देखते ही रह गए और उसने हवा में उछलकर नारा लगाया —"वन्देमातरम !" नारा लगाते-ही-लगाते उसने दस्ती बम को डैक पर गिरने से पूर्व हवा में ही लपका और खुद डैक पर से होता हुआ सागर की ओर झपटा।

धड़ाम !

एक भयानक धमाका !

उस सैनिक के हाथ से टकराते ही दस्ती बम फट गया। सैनिक के जिस्म के टुकड़े-टुकड़े हो गए। उसके जिस्म के टुकड़े हवा में रुई की भांति बिखर गए और अगले ही पल वे सागर के पानी में जा गिरे।

यह था एक भयानक करिश्मा !

इस करिश्मे पर उस सैनिक की प्रशंसा करने के लिए किसी के पास समय नहीं था। एक ही पल में यह सब कुछ हो गया था। उपस्थित इन्सानों ने उसी पल वह सब देखा और पुनः अपने-अपने कार्यों में जुट गए। तोपची पुनः विमान को अपने निशाने पर लेने की कोशिश करने लगा।

नेट सागर में उड़ चुका था।

दुश्मन इस जलपोत को उड़ाने की भरसक चेष्टा कर रहा था। एक तरफ हवाई-हमले द्वारा उसे नष्ट करने का प्रयास कर रहा था, दूसरी तरफ सागर में ही उसे पनडुब्बियों द्वारा घेरा जा रहा था।

नेट अब विमानों के करीब पहुंच गया था।

और···

तब आरम्भ हुआ खौफनाक हवाई-युद्ध। दोनों विमानों का ध्यान भी जलपोत से चूककर नेट की ओर चला गया। जलपोत पर खड़े अधिकांश सैनिक हवा में हो रहे इस रोमांचकारी युद्ध को देख रहे थे। दोनों विमान नेट को घेरने की भरसक चेष्टा कर रहे थे, जबकि नेट अपनी कलाओं के साथ रह-रहकर दोनों को चकमा दे रहा था। नेट से भी शोले निकल-निकलकर विमानों को उड़ाने की चेष्टा कर रहे थे और नेट पर भी यही प्रयास दोनों विमानों द्वारा जारी था। अभी तक कोई सफल नहीं हो पाया था।

आकाश में चमकते हुए ये शोले बड़े रोमांचकारी लग रहे थे।

तोपची अपनी तोप के जरिये उन दोनों में से किसी विमान को उड़ाने की चेष्टा कर रहा था। युद्ध बराबर जारी था, जबकि जलपोत निरन्तर तीव्र वेग के साथ गुलशनगढ़ की ओर बढ़ रहा

था। सागर में तीन पनडुब्बियों के जरिये जलपोत को रोकने की चेष्टा की जा रही थी। जलपोत के युद्ध-कक्ष में उपस्थित सैनिक इन पनडुब्बियों से टक्कर ले रहे थे। मगरमच्छनुमा एक पनडुब्बी तेजी के साथ जहाज के आगे-पीछे होकर जहाज की सुरक्षा कर रही थी। उस समय मगरमच्छनुमा पनडुब्बी जलपोत की ढाल बनी हुई उसके आगे-पीछे रेंग रही थी, तभी सामने से एक दुश्मन की पनडुब्बी आई।

पलक झपकते ही मगरमच्छ ने अपना भयानक जबड़ा खोला और सामने वाली पनडुब्बी अस्ताचल में डूब गई। लगभग उसी समय जलपोत के बायीं ओर एक पनडुब्बी ने अपना सिर उभारा —इससे पूर्व कि उससे छूटा कोई तारपीडो जलपोत को कोई हानि पहुंचाए—जलपोत ने एक तारपीडो उगला।

पनडुब्बी टुकड़े-टुकड़े होकर सागर में बिखर गई।

इसी प्रकार उसके बाद एक बार जलपोत के बायीं ओर से एक पनडुब्बी उभरकर जलपोत के सामने आई। जलपोत पर मौजूद भारतीय सैनिक अभी उसे उड़ाना ही चाहते थे कि उस पनडुब्बी के बिल्कुल समीप यानी पनडुब्बी की एक दीवार से लगा हुआ एक नकाबपोश नजर आया। उस नकाबपोश के सीने वाले भाग पर नम्बर पन्द्रह लिखा हुआ था। सैनिक जानते थे कि यह गुलशनगढ़ का कोई क्रांतिकारी है। उनके हाथ ठिठक गए। उनके देखते-ही-देखते नम्बर पन्द्रह पनडुब्बी के डेक पर चढ़ गया।

उसके दो मिनट बाद ही—

पनडुब्बी पानी में जोर-जोर से हिलती नजर आई। मानो उसके अन्दर जबरदस्त उत्पात हो रहा हो। तब तक मगरमच्छ-नुमा पनडुब्बी उसके करीब पहुंच गई। जल्दी ही पन्द्रह नम्बर

पनडुब्बी के डैक पर नजर आया। जलपोत की ओर वह सफेद झण्डा दिखा रहा था, साथ ही अपने वास्तविक पन्द्रह नम्बर होने का संकेत भी दे रहा था। मगरमच्छनुमा पनडुब्बी ने उसी समय अपना जबड़ा खोला और सैनिकों के देखते-ही-देखते उसमें से सफेद नकाबपोश निकला और उस पनडुब्बी के डैक पर चढ़ गया जो अब पन्द्रह नम्बर के कब्जे में थी।

मगरमच्छनुमा पनडुब्बी अपना काम करके वापस लौट गई थी।

उसके पश्चात् वह सागर में कहीं नजर नहीं आई।

▭ ▭

▭ ▭

विजय उस मोटी-सी जंजीर को पकड़े हवा में लटक रहा था! इस समय उसके चारों ओर काजल-सा अन्धकार था। कहीं कुछ नजर नहीं आ रहा था। इस समय वह एक गहरे कुएं जैसे स्थान पर लटका हुआ था। यह जंजीर इस अन्धेरे कुएं में नीचे तक जाती थी। इस मोटी जंजीर के इर्द-गिर्द ही उसी प्रकार की कई अन्य जंजीरें भी लटक रही थीं जो आपस में टकराकर कुएं में छाए सन्नाटे को भंग कर रही थीं। इस अजीब-से सन्नाटे और अंधकार के बीच में खनखनाहट बड़ी विचित्र और डरावनी-सी लगती थी।

उसके जिस्म पर इस समय एक विशेष लिबास था।

लिबास उसके जिस्म में चिपका हुआ था। उस सम्पूर्ण लिबास पर एक विशेष पदार्थ का लेप चढ़ा हुआ था। चेहरे पर एक नकाब था। दायें कूल्हे पर एक म्यान लटकी हुई थी और लिखने की आवश्यकता नहीं कि उसमें तलवार थी। हाथों पर

दस्ताने थे। उसके एक हाथ में शक्तिशाली टॉर्च थी।

उसने जंजीर का एक फंदा-सा बनाकर जंजीर में उलझाया। जंजीर अंधेरे में लहराई और अन्य जंजीरों से टकराकर खन-खनाहट पैदा करने लगी किन्तु उसने इस बात की जरा भी चिन्ता नहीं की और टॉर्च रोशन कर दी। सर्वप्रथम टॉर्च का प्रकाश कुएं की सामने वाली दीवार पर पड़ा।

वह एक गोल कुआं था। इसका व्यास तीन **गज** के लगभग था। बनावट से नजर आता था कि यह प्राचीन काल का बना हुआ कुआं है। दीवार पर जगह-जगह मकड़ी के जाले जमे हुए थे। कहीं-कहीं कोई हल्का-सा पेड़ उभर आया था। धूल और गन्दगी से सम्पूर्ण दीवार अटी पड़ी थी। परन्तु इतना सब कुछ होने के बावजूद भी अभी कम-से-कम पांच सौ वर्ष तक भी कुएं की सुरक्षा को कोई खतरा नहीं था।

वह टॉर्च के प्रकाश को कुएं की जर्जर दीवार पर घुमाता रहा। विजय भली भांति इस अजीबोगरीब भूल-भलैया का निरीक्षण कर रहा था। कुछ देर तक वह यूंही कुएं की गोल दीवारों पर प्रकाश को घुमाता रहा। अन्त में उसने कुएं में नीचे प्रकाश डाला। प्रकाश का गोल दायरा सीधा कुएं के तल पर पड़ा।

और टॉर्च के इस प्रकाश-दायरे में जो कुछ चमका---उसे देखकर विजय की आंखें फैलती चली गई। नीचे का दृश्य वास्तव में बेहद भयानक था। टॉर्च के प्रकाश-दायरे में अनेक जहरीले सर्प रेंग रहे थे—मोटे-मोटे अजगर और कोबरा! विजय के होंठों पर एक विचित्र-सी मुस्कान खेल गई।

टॉर्च के प्रकाश में वह इन सर्पों का भली-भांति निरीक्षण कर लेना चाहता था। विजय ने जब ध्यान से वह सब देखा तो

आश्चर्यचकित रह गया। यह तो उसे मालूम था कि इस कुएं में नीचे सर्प होंगे किन्तु यह तो उसने कल्पना भी न की थी कि विश्व भर की नाग जाति के अजगर और कोबरे होंगे। कोबरे की शायद ही कोई जाति रही हो जिसका कोबरा वहां न रेंग रहा हो। देश-विदेश के सर्प—नाग, कोबरे, रत्नागिर, ताखी—इत्यादि कई प्रकार की नस्ल के सर्प वहां मौजूद थे। कहा नहीं जा सकता कि वे सब यहां एक स्थान पर एकत्रित कैसे हो गए थे? मिस्र का निवासी वह कोबरा भी वहां देखा जा सकता था। इस कोबरे का नाम था—इजिप्शियन एप्स, जिसके काटने पर प्राणी को चीखने-चिल्लाने की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि तुरन्त ही दुनिया से मोक्ष पा जाता है। यह कोबरा अफ्रीका की नागवंश की सम्बा शाखा का सबसे मुख्य कोबरा है। इसी से जीभ पर कटवाकर इतिहास प्रसिद्ध मिस्र की राजकुमारी किलोपैट्रो ने बड़ी सरलता के साथ आत्महत्या की थी।

प्राणघातक 'फड़ीचर', खतरनाक कोबरा 'कोरल स्नेक' और सम्बा जाति के सर्प भी यहां थे। विजय ने देखा—टॉर्च के प्रकाश में पन्द्रह फीट लम्बा कोबरा पड़ा था जो केवल अफ्रीका के जंगलों में पाया जाता था किन्तु वह यहां भी उपस्थित था। किन्तु उसके समीप ही अट्ठाइस-तीस फीट लम्बे काले सर्प पड़े थे, जिनके विष की एक बूंद दर्जनों इंन्सानों को मौत के घाट उतार देती। इनके रंग एकदम भिन्न थे।

कोई चमकते हरे रंग का, कोई लाल सुर्ख—एकदम चटख लाल ! काले, पीले, चमकीले—सभी एकसाथ देखे जा सकते थे। वहीं एक अफ्रीकन कोबरा भी मौजूद था, जिसका काम काटना नहीं था बल्कि पांच अथवा छः फीट दूर से वह शिकार की आंखों में विष की पिचकारी मारता था। विष की पिचकारी

आंख में लगते ही प्राणी का खत्म हो जाना निश्चित था। 'इलेप्स' नाम का एक नाग, जिसे अन्तिम बार आज से सौ-सवा सौ वर्ष पूर्व अफ्रीका में देखा गया था, इस समय यहां उपस्थित था। आस्ट्रेलिया में पाए जाने वाले टाइगर स्नेक और टेइपनस्नाक भी वहीं रेंग रहे थे। हर तरफ जिधर विजय टॉर्च घुमा देता उधर नाग, सर्प और कोबरे ही नजर आते थे।

नीचे का दृश्य देखकर एक बार को तो विजय जैसे इन्सान के जिस्म में झुरझुरी-सी दौड़ गई। उसने पुनः सतर्कता के साथ टॉर्च का प्रकाश घुमाया। इस बार वह और भी बुरी तरह चौंक पड़ा। कुएं की एक जर्जर दीवार से एक नरकंकाल लटका खड़ा था। आंखें, कान और मुंह के स्थान पर गड्ढे थे। हड्डियों का ढांचामात्र वह नरकंकाल न जाने किस बदनसीब का था? टॉर्च का प्रकाश रेंगा—और उसके बाद विजय ने उसी प्रकार के चार-पांच नरकंकाल देखे जो अजीब-अजीब मोशन में पड़े थे। हर नरकंकाल की हड्डियों से कोई-न-कोई पर्त झूल रहा था।

यह दृश्य बेहद भयानक लग रहा था।

एक दृश्य पर विजय की आंखें मानो टिककर रह गईं। मौत के भय से एक ठण्डी लहर उसके जिस्म में दौड़ गई। उसने साफ देखा—एक पतला-सा सर्प उस नरकंकाल के कान में से अन्दर प्रविष्ट हो गया। उस समय तक तो दृश्य अधिक भयानक नहीं बना था किन्तु उस समय विजय देखता ही रह गया जब वह सर्प कंकाल की एक आंख से बाहर निकलने लगा।

टॉर्च का प्रकाश सीधा उसी पर पड़ रहा था।

सर्प ने दो बार अपनी जीभ बाहर निकाली और अपनी गोल-गोल आंखों से टॉर्च की ओर घूरता रहा। कुछ सोचकर विजय ने टॉर्च ऑफ कर दी। अन्धकार और भी बुरी तरह छा

गया। लेकिन विजय इस अन्धकार में भी उस खौफनाक दृश्य की कल्पना कर सकता था। वह जानता था कि यह मौत का कुआं है। अन्धकार में वह ऐसा महसूस कर रहा था मानो सर्प उसकी जंजीर पर रेंगकर ऊपर चढ़ रहे हों।

लेकिन विजय को नीचे उतरना था।

उसे अपना कार्य पूरा करना था।

उसके दिमाग में तेजी से विचारों का आवागमन हो रहा था। वह जानता था कि इस समय उसके जिस्म पर जो लिबास है—उसके कारण किसी भी जहरीले सर्प के काटने का प्रभाव उस पर नहीं होगा। किन्तु अगर कुएं के नीचे पड़े इन खौफनाक सर्पों ने उसके जिस्म को लपेट लिया तो? अगर आस्ट्रेलिया के कोबरे ने विष की पिचकारी सीधी उसकी आंख में मारी तो?

वह क्या कर सकेगा?

कुछ भी तो नहीं! अगर कोबरों ने उसे लपेटकर कस लिया तो उसकी हड्डियों का सुरमा बन जाएगा। उसका यह विशेष लिबास कुछ भी नहीं कर सकेगा। परन्तु वह विजय ही क्या, जो इन खतरों से डरकर अपना काम बीच में छोड़ दे। कुछ सोचकर उसने एक बार फिर टॉर्च रोशन की और बगल में लटकने वाली एक जंजीर से बांध दी। अब टॉर्च का प्रकाश सीधा कुएं के नीचे रेंगते सर्पों पर पड़ रहा था। शेष कुएं में भी धीमा-धीमा-सा प्रकाश था। कुछ देर तक विजय जंजीर पकड़े कुएं के बीचोबीच उसी प्रकार लटका रहा। कुछ ही देर में उसकी आंखें टॉर्च के प्रकाश में सम्पूर्ण कुएं का दृश्य देखने में समर्थ हो गईं।

नीचे रेंगने वाले सर्पों में इस प्रकाश के कारण विचित्र-सी हलचल थी। कई कोबरे अपनी गोल-गोल आंखों से टॉर्च को निहार रहे थे। किन्तु अब विजय ने दृश्य देखने में अधिक समय

व्यर्थ करना उचित नहीं समझा। उसने देखा, जंजीर नीचे तक चली गई थी। परन्तु फिर भी कुएं के तल से पन्द्रह फीट ऊपर ही समाप्त हो गई थी। कई सर्प उछल-उछलकर जंजीर पकड़ने का प्रयास कर रहे थे लेकिन वह असफल रहे। अब विजय ने धीरे-धीरे जंजीर के सहारे नीचे उतरना शुरू कर दिया।

जंजीर की लड़खड़ाहट से वातावरण कांपा और इसके जवाब में जब सर्पों के मुंह से अजीब-अजीब-सी आवाजें निकलीं तो माहौल डरावना हो गया, किन्तु विजय लापरवाह-सा होकर नीचे उतरता रहा। वह अच्छी तरह जान चुका था कि इस जंजीर तक कोई भी सर्प नहीं पहुंच सकता। वह जंजीर के अन्तिम सिरे से एक गज ऊपर ठहर गया। वह जानता था कि जंजीर पर खतरा केवल आस्ट्रेलिया के उस कोबरे से है जो अपने मुंह से विष की पिचकारी मारता है। उसने जेब से साइलेंसरयुक्त रिवॉल्वर निकाला और आस्ट्रेलिया के उस कोबरे के फन का निशाना लेने लगा।

कोबरा उसी की तरफ देख रहा था।

पिट।

हल्की-सी ध्वनि के साथ विजय के रिवॉल्वर ने शोला उगला और गोली सीधी कोबरे के फन पर लगी। एक विचित्र-सी आवाज कोबरे के कण्ठ से निकली और वह बल खाई हुई रस्सी की भांति ऐंठ गया। निःसन्देह वह कोबरा मर चुका था। उसके मरते ही प्रतिक्रिया यह हुई कि छोटे-मोटे सांपों में भगदड़ मच गई। वे तेजी से एक-दूसरे के ऊपर होकर इधर-उधर रेंगने लगे। कुछ जंजीर की ओर झपटे किन्तु जंजीर कुछ सोच-समझकर इस प्रकार लटकाई गई थी कि कोई भी कोबरा उस तक न पहुंच सके। विजय की नजर बड़ी तेजी के साथ सर्पों पर फिसलने

लगी। कदाचित वह यह देखना चाहता था कि मृत कोबरे की जाति का कोई अन्य सर्प तो वहां नहीं है?

अभी वह भली-भांति यह देख भी नहीं पाया था कि सर्पों के बीच से एक हरे रंग का सर्प उड़ा। एक ही पल में विजय समझ गया कि यह उड़ने वाला सर्प है जो हमेशा मस्तक पर वार करता है। हालांकि उड़ने वाला सर्प बड़ी फुर्ती से उड़ा था मगर इधर भी विजय था।

पलक झपकते ही उसने म्यान से तलवार खींच ली।

तब तक उड़ने वाला सर्प विजय के मस्तक पर झपट चुका था। विजयकी तलवार बिजली की-सी गतिसे उसके चारों ओर सुरक्षात्मक ढंग से घूम गई। सर्प भी बड़ा चतुर था। उसने तलवार से खुद को बचाया और कुएं में इधर-उधर उड़ने लगा।

तलवार रोककर विजय ने देखा—उड़ता हुआ वह खतर-नाक सर्प रोशन टॉर्च पर रह-रहकर फन मारने लगा। विजय खतरे को भांप गया। अगर यह टॉर्च नीचे गिरकर बुझ गई तो वह सर्पों का मुकाबला करने में असमर्थ रहेगा। उसने तुरन्त अपना साइलेंसरयुक्त रिवॉल्वर सीधा किया और···

उसने गोली चला दी।

गोली सीधी उड़ने वाले सर्प के मुंह से टकराई और वह लहराकर नीचे अन्य सर्पों के ऊपर जा गिरा। अब वह भी मृत अवस्था में था।

नीचे मौजूद सर्पों में और भी अधिक तेजी से हलचल मची। विजय बड़े ध्यान से सर्पों को देख रहा था। जब वह सन्तुष्ट हो गया कि अब नीचे न तो विष की पिचकारी मारने वाला कोबरा है और न ही उड़ने वाला सर्प, तो वह नीचे उतरने लगा।

अभी वह एक ही कदम नीचे उतर पाया था कि भयानक

फुंफकार से पूरा कुआं कांप उठा। एक तेज हवा विजय को अपनी ओर खींच रही थी। विजय ने कसकर जंजीर पकड़ ली। वायु के वेग से जंजीर कुएं में इधर-उधर झूल गई। यह कमाल कुएं में पड़े अजगर का था। उसके हिलने के कारण टॉर्च का प्रकाश दायरा सम्पूर्ण कुएं में घूम रहा था।

विजय ने खुद को संभाला और तुरन्त अपने रिवॉल्वर से निरन्तर दो-तीन फायर उस अजगर पर कर दिए। विचित्र-सी दहाड़ के साथ अजगर चिल्लाया। विवश-सा होकर फर्श पर फन पटकने लगा और फिर बुरी तरह तड़पकर वीरगति को प्राप्त हो गया। विजय की जंजीर झूलती रही और झूलता-झूलता ही वह अजगर के मरने का रंग देखता रहा। जंजीर धीमी होती-होती कुछ देर बाद ठहर गई।

विजय समय व्यर्थ करने के मूड़ में नहीं था। वह तुरन्त नीचे उतरने लगा। अभी वह जंजीर के अन्तिम सिरे पर पहुंचा ही था कि उसने देखा—खतरनाक भारतीय नाग सतर्क हो गए। कोबरे फुंफकारने लगे। टाइगर स्नेक का फन चौड़ा होता चला गया। उसका जिस्म तीस फीट लम्बा था—जिसका आधा अग्रिम भाग हवा में लहरा उठा। उसका फन चौड़ाकर बहुत चौड़ा हो गया था। जंजीर के साथ-साथ वह अपना फन इधर-उधर घुमा रहा था। मात्र वही नाग ऐसा था जिसका फन जंजीर के अन्तिम सिरे के करीब था। विजय ने तलवार आगे की और बिजली की-सी गति से नाग पर वार किया।

नाग अपने फन को बचा गया और फिर उस नाग ने विजय से अधिक फुर्ती का प्रदर्शन किया। बड़ी तेजी से वह फुंफकारा और पलक झपकते ही उसने अपना फन विजय के जूते से टकराया—लेकिन विजय को किसी प्रकार की हानि नहीं हुई;

अलबत्ता विजय की घूमती हुई तलवार ने इस बार उसका फन धड़ से जुदा कर दिया। गर्म खून का एक फव्वारा-सा उठा।

नाग के फन और धड़ कुछ पल अलग-अलग तड़पे। फिर शान्त हो गए।

बड़ी तेजी से विजय ने जंजीर के सिरे पर पैर जमाए और पैरों पर बैठता चला गया। अब धीरे-धीरे उसने अपनी जंजीर को लम्बे-लम्बे झोंटे देने शुरू कर दिए। सर्प और कोबरे हसरत भरी निगाहों से अपने इस दुश्मन को देख रहे थे। झोंटे लम्बे होते जा रहे थे। टॉर्च का प्रकाश तेजी के साथ कुएं में घूम रहा था। अब झोंटे इतने लम्बे हो गए थे कि कुएं की एक दीवार से थोड़ा ही बचकर दूसरी दीवार के समीप तक आता-जाता था। अब विजय ने झोंटों की ओर ध्यान लगाना बन्द कर दिया। इस समय उसके बायें हाथ ने जंजीर को जकड़ रखा था और दायें हाथ से वह जंजीर के निचले सिरे में कुछ खोज रहा था।

जल्दी ही उसे जंजीर के नीचे लगा बटन मिल गया।

विजय ने तुरन्त बटन दबा दिया।

घुर्र-घुर्र की आवाज कुएं में गूंज उठी। कुएं की एक दीवार अपने स्थान से उठ गई अथवा यूं कहना उचित होगा कि दीवार का एक छोटा-सा भाग अपने स्थान से हट गया। कुएं के फर्श से बीस फीट ऊपर एक खिड़की-सी खुल गई। जंजीर का झोंटा उस खिड़की के एकदम समीप तक जाकर वापस लौट आता था। खिड़की के अन्दर दूसरी तरफ स्थान था। अन्दर से सुनहरा प्रकाश निकलकर कुएं तक में फैल गया था। अन्दर तो था ही सुनहरा प्रकाश।

विजय के होंठों पर सफलता की एक मुस्कान दौड़ गई।

उसने जंजीर पर झूलने की गति को और अधिक तेज किया

—झोंटे लम्बे होते चले गए। जंजीरका सिरा विजयसहित खुली खिड़की के समीप आता और वापस लौट जाता। विजय ने अपना इरादा पक्का किया और इस बार जंजीर जैसे ही खिड़की के पास आई, विजय ने जंजीर छोड़कर फुर्ती से खिड़की में जम्प लगा दी। जम्प इतनी जोर से लगाई कि वह कठोर फर्श पर जा गिरा।

उसके फर्श पर गिरते ही कुएं की दीवार वाला भाग घुर्र-घर्र की आवाज के साथ अपने पवित्र स्थान पर फिट हो गया। विजय इतने तीव्र प्रकाश में आ गया था कि उसकी आंखें चुंधिया गईं। चाहकर भी वह दो मिनट के लिए अपनी आंखें नहीं खोल सका।

दो मिनट पश्चात्—

धीरे-धीरे उसने अपनी आंखें खोल दीं।

दृश्य देखकर वह बुरी तरह उछलकर खड़ा हो गया।

गहन आश्चर्य से उसकी आंखें फैलती चली गईं। उसने तेजी से घूमकर अपने चारों ओर देखा—उसकी आंखों में हैरत के भाव थे। शायद ही इतना आश्चर्य विजय को अपने पिछले जीवन में कभी हुआ हो। उसके चारों ओर सोना-ही-सोना था।

सोना—सोना और सिर्फ सोना।

दीवारें, फर्श, छत—सब कुछ सोने का था।

वह खुद सोने के फर्श पर खड़ा था। उसके चारों ओर चमचमाता हुआ सोना-ही-सोना था। उसकी आंखें अभी तक सोने की चमक से चुंधिया रही थीं। यह सुनहरा प्रकाश उस सोने का ही था। उसे लगा कि वह किसी सोने की नगरी में आ गया है। कई पल तो वह आश्चर्य के साथ अपने चारों ओर फैली इस स्वर्णनगरी को देखता रहा।

ऐसा लगता था जैसे यह प्राचीन काल का कोई मन्दिर हो।

सोने की छत में लगे सोने के हुकों में मोटी-मोटी सोने की जंजीरें लटकी हुई थीं और उन जंजीरों में लटक रहे थे चमकीले सोने के मोटे-मोटे घण्टे। सोने की दीवारों पर सोने की मूर्तियां बनी हुई थीं। ये मूर्तियां कुछ विचित्र-विचित्र-सी आकृतियों की थीं। किसी में घोड़े के मुंह के पीछे स्त्री का जिस्म था—किसी स्त्री के जिस्म पर मछलियों के मुंह थे। मन्दिरनुमा चमकीले दरवाजे थे। एक विशेष कक्ष में शंकर भगवान की एक विचित्र-सी आकृति वाली विशाल मूर्ति थी। इस कक्ष में सभी आकृतियां धार्मिक थीं। जगह-जगह दीवारों पर सोने के अक्षरों में कुछ लिखा था। विजय कुछ देर तक उन अक्षरों को घूरता रहा किन्तु उनका कोई अर्थ नहीं निकल पाया। ऐसी भाषा उसने पहले कहीं नहीं देखी थी।

न जाने उसे क्या सूझा कि उसने एक [illegible]ल घण्टा जोर से बजा दिया। घंटे की आवाज उस स्वर्ण-कक्ष की दीवारों से टकराकर बुरी तरह गूंजी। इस गूंज के साथ ही कक्ष में हल्की-सी गर्जना भी हुई और इस घर्घराहट के साथ सोने की एक दीवार अपने स्थान से हटती चली गई। दीवार के हटते ही विजय को अब सोने की गैलरी नजर आई। गैलरी स्वर्ण के सुनहरे प्रकाश से चमचमा रही थी। कुछ सोचकर विजय उस गैलरी में आगे बढ़ गया। आगे जाकर यह गैलरी कई तरफ को फैल गई। एक गैलरी कई गैलरियों में बदल गई। परन्तु विजय गैलरी में सीधा ही बढ़ता चला गया।

चारों ओर स्वर्ण था—स्वर्ण, स्वर्ण और केवल स्वर्ण!

इस गैलरी ने विजय को एक अन्य स्वर्ण-कक्ष में खड़ा कर दिया। यह कक्ष नहीं बल्कि एक लम्बा-चौड़ा हॉल-सा था। हॉल

की दीवारों पर स्वर्ण की आकृतियां बनी हुई थीं। इन दीवारों पर बनी आकृतियां स्त्री और पुरुषों की थीं। स्त्री-पुरुष के प्रेमालिंगन स्वर्ण की आकृतियों द्वारा दर्शाये गए थे। ये आकृतियां लगभग ऐसी थीं, जैसी प्राचीन गुफा में पत्थरों पर पाई गई हैं। इन आकृतियों के माध्यम से प्राचीन मानव—मानव को काम-शास्त्र का ज्ञान देते थे। प्रत्येक आकृति में स्त्री-पुरुष एक विशेष और भिन्न ढंग से प्रेमालिंगन में दिखाए गए थे। इन आकृतियों द्वारा कदाचित मानव को सेक्स-विद्या का उचित ज्ञान दिया गया था। कोई भी आकृति काम-इच्छा को उत्तेजित करने वाली नहीं थी बल्कि मानव को एक आवश्यक ज्ञान देने वाली थी। स्त्री-पुरुष के गुप्तांग आकृतियों में स्पष्ट दर्शाए गए थे, लेकिन इतने स्वच्छ ढंग से कि साधारण व्यक्ति भी उत्तेजित न हो पाए। अजन्ता और एलोरा की गुफाओं में जो कुछ पत्थरों की चित्रकारी के माध्यमसे दर्शाया गया है, वही सबकुछ विजय इस समय सम्पूर्ण कला के माध्यम से देख रहा था। इन आकृतियों के ऊपर उसी भाव में कुछ लिखा था, जिसे पढ़ने में विजय पहले की भांति ही असफल रहा।

कुछ देर तक विजय इन सब चमत्कारों को देखता रहा, फिर उसका ध्यान छत से लगी स्वर्ण की मोटी-मोटी जंजीरों पर गया। इन जंजीरों का निचला सिरा विजय हाथ उठाकर बड़ी सरलता के साथ छू सकता था विजय अचानक एक जंजीर का कोना पकड़कर लटक गया

हल्की गड़गड़ाहट से हॉल गूंज उठा। एक तरफ की स्वर्ण-दीवार किसी मजबूत द्वार की भांति खुलती चली गई। विजय ने उस रिक्त स्थान में देखा तो उसकी आंखें चुंधियां गईं। खोपड़ी हवा में चकराने लगी। यह एक सेफ जैसा स्थान था जो

बेशुमार हीरों से भरा था।

एक-एक करके विजय हर जंजीर पर लटका।

हर बार हॉल की दीवार में उसी प्रकार की एक सेफ खुलती और विजय की आंखें चुंधिया जातीं। विजय सब कुछ देखता रहा और सोचता रहा कि यह धरती अपने अन्दर कितने-कितने विचित्र रहस्य छुपाए हुए है! उसने पुनः एक-एक बार जंजीरों पर लटककर सेफों जैसे स्थान को बन्द किया और गैलरी से निकल आया।

इसके बाद वह इस सोने के महल में घुसा। हर कक्ष में उसने अलग-अलग विशेषता पाई थी। किसी कक्ष में बुद्ध की तस्वीर थी, किसी में जैन धर्म की आकृतियां और किसी में हिंदू धर्म के देवताओं की आकृति। किसी में त्रिमूर्ति की आकृति। एक आकृति को तो विजय कई मिनट तक देखता रह गया। वह एक इंसानी जिस्म की आकृति थी परन्तु उसके एक ही चेहरे में कई सूरतें नजर आती थीं। पहली बार विजय ने जब इस आकृति को देखा था तो उसे लगा कि वह ईसा मसीह का चेहरा है परन्तु जब उसने और अधिक ध्यान से देखा तो उसे लगा कि आकृति भगवान बुद्ध की है। एक मिनट तक वह उसे अधिक ध्यान से देखता रहा तो उसे लगा कि वह आकृति शंकर भगवान की है। एक ही आकृति में तीन-तीन धर्म देखकर वह चमत्कृत-सा रह गया। यह चित्रकारी का विचित्र नमूना थी; साथ ही मानव जाति को एक महान शिक्षा भी देता था।

मन-ही-मन विजय प्रशंसा कर रहा था।

वह अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं सका और इस अजीब आकृति की ओर बढ़ गया। हर पल जैसे वह स्वर्ण की आकृति अपना रूप बदल रही थी। विजय उनके करीब पहुंचा तो वह

बुरी तरह चौंक पड़ा।

वह आकृति पालथी मारकर बैठने के 'एक्शन' में थी और पालथी के बीच एक कागज पड़ा था। विजय इसी कागज को देखकर चौंका था। उसने तेजी से झपटकर वह कागज उठा लिया। अभी वह कागज को खोलने ही वाला था कि उसके गले में पड़ा लॉकेट हल्के से 'पिट-पिट' की ध्वनि निकालने लगा।

विजय पुनः चौंका।

कागज उसने जेब के हवाले किया और जल्दी से लॉकेट ट्रांस-मीटर ऑन किया। दूसरी ओर से बराबर हैलो-हैलो की आवाजें गूंज रही थीं। विजय ने ट्रांसमीटर के करीब मुंह ले जाकर कहा—

—"हैलो! विजय दी ग्रेट स्पीकिंग।"

—"क्रांति का देवता।" दूसरी ओर से स्वर उभरा।

—"ओह!" विजय के मुंह से निकला—"यानी कि तुम यहां भी टपक पड़े।"

—"आप कहां तक पहुंचे ?" क्रांति के देवता की आवाज में विजय के लिए सम्मान का पुट था।

—"मैं इस स्वर्ण-महल में पहुंच गया हूं।" विजय ने कहा —"क्या आदेश है ?"

—"क्रांति का देवता सबको आदेश दे सकता है लेकिन आपको आदेश देने की हिम्मत नहीं है।" दूसरी ओर से स्वर उभरा—"आपके लिए एक सूचना है।"

—"बोलो—।"

—"आप तुरन्त अपने कक्ष में पहुंच जाएं।" क्रांति के देवता ने कहा—"कुछ विशेष कामों के लिए आपकी आवश्यकता है। असली चक्कर वह नहीं है जो भानुप्रतापसिंह ने बताया था

—असली चक्कर कुछ और है । आप फौरन अपने कक्ष में आ जायें । कुछ ही देर में आपके कक्ष में जेम्स बांड पहुंचने वाला है ।"

—"ओ० के० ।" विजय ने कहा ।

—"ओवर एण्ड ऑल ।" दूसरी ओर से कहा गया और तुरन्त सम्बन्ध विच्छेद हो गया । विजय ने तेजी से अपना ट्रांसमीटर ऑफ किया और फिर तीव्र गति से उसी कक्ष की ओर बढ़ गया जो शंकर भगवान के मन्दिर जैसा कक्ष था । वहां पहुंचते ही उसने ठीक उस स्थान पर अपना एक पैर जोर से मारा जहां वह जंजीर से कूदा था । उसके पैर मारते ही उस स्थान पर स्वर्ण-फर्श थोड़ा नीचे दब गया ।

कुएं में खुलने वाली खिड़की पुनः उसी प्रकार खुल गई ।

बिना एक भी क्षण गंवाए विजय खिड़की पर चढ़ गया । नीचे कुएं में सर्प उसी प्रकार रेंग रहे थे—किन्तु विजय ने इस बार उनकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया । पलक झपकते ही उसने एक हाई जम्प ली और कुएं के बीच में लटकती उस जंजीर को पकड़ लिया ।

एक झटके के साथ जंजीर इधर-उधर झूल गई । खनखनाहट से एक बार पुनः कुआं गूंज उठा । जंजीर पर लगे झटके के साथ ही कुएं की वह दीवार अपने स्थान पर आकर फिक्स हो गई । खिड़की बन्द हो चुकी थी । दूसरी जंजीर में बंधी रोशन टॉर्च का प्र[illegible]एं में मुस्करा रहा था ।

ऐ[illegible]ा था जैसे विजय को कक्ष में पहुंचने की बेहद जल्दी हो ।

बन्दर की भांति वह जंजीर पर चढ़ता ही चला गया । टॉर्च उसने वहीं छोड़ दी । जंजीर का यह फन्दा एक लोहे की छत में

फंसा हुआ था। लोहे की छत पर कुछ देर तक विजय हाथ से कुछ टटोलता रहा। फिर उसने एक उभरे हुए भाग को हल्के से दबा दिया।

गड़गड़ाहट के साथ लोहे की छत का थोड़ा-सा भाग हट गया। विजय जंजीर छोड़कर उसी में समा गया। इस समय वह एक गुफा में था। फटा हुआ स्थान अपनी जगह फिक्स हो गया था। इस समय वह पथरीली गुफा में बड़ी तेजी के साथ बढ़ता चला जा रहा था।

कुछ देर बाद वह गुफा की एक छोटी-सी दरार में घुस गया। दरार में एक तरफ लोहे की सीढ़ियां थीं। वह उन्हीं पर चढ़ता चला गया।

जैसे ही उसने सबसे ऊपर की सीढ़ी पर दबाव डाला—थोड़ा फर्श अपने स्थान से हट गया। कुछ ही पल पश्चात् वह संगमरमर के बने एक बाथरूम में था। एक गुप्त बटन दबाकर उसने बाथरूम के दरार तक पहुंचने वाला मार्ग बन्द कर दिया। इस समय वह राजमहल के एक चमचमाते हुए बाथरूम में था। बाथरूम उसी प्रकार अन्दर से लॉक था जिस प्रकार वह छोड़ गया था। उसने तेजी से अपने कपड़े बदले। बाथरूम की एक गुप्त अलमारी में उसका वही राजसी लिबास मौजूद था जिसे पहनकर वह जिज्ञासा शान्त कर सकता था। उसने तेजी से अपना वह विशेष लिबास उतारा और राजसी लिबास पहनकर, पहले लिबास को गुप्त अलमारी में बन्द करके बाथरूम का दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

इस समय वह अपने कमरे में था।

अभी उसे कक्ष में आए हुए कुछ ही देर हुई थी कि कक्ष के एक ओर की दीवार खुली और सामने नजर आया—'क्रांति का

देवता।' विजय ने उसकी ओर आंख दबा दी।

क्रांति का देवता उसके करीब आया।

कक्ष अन्दर से बन्द था।

—"मेरे सामने इस नकाब की क्या आवश्यकता है?" विजय ने क्रांति के देवता से कहा।

—"केवल आपके सामने ही इसकी आवश्यकता नहीं है।" क्रांति का देवता बोला—"वैसे अधिकांश काम तो इस नकाब से ही चलता है। अगर आपको यह अच्छा नहीं लगता तो ये लो।" कहते हुए उसने अपना नकाब नोंच लिया। विजय ने देखा—क्रांति का देवता मुस्करा रहा था।

—"क्या बात है?" विजय ने तुरन्त मतलब की बात पर आते हुए कहा।

—"आप जानते हैं कि जब्बरसिंह अस्पताल में था।" नकाब रहित क्रांति का देवता बोला—"अस्पताल के डिपार्ट में हमारे भी कुछ आदमी थे। उन्होंने रिपोर्ट भेजी है कि जब्बरसिंह जेम्स बांड से मिल गया है। वास्तविकता यह है कि इंग्लैंड का ध्यान गुलशनगढ़ की ओर कराने वाला व्यक्ति जब्बरसिंह है।"

—"क्या मतलब?" विजय धीमे से चौंका।

—"मतलब यह कि असली चक्कर वह नहीं है जो भानुप्रतापसिंह समझ रहा था।" क्रांति के देवता ने बताया—"आप जानते हैं कि उनका ख्याल यह है, इन तीन देशों ने गुलशनगढ़ पर इसलिए अचानक हमला करके कब्जा किया है क्योंकि इन्हें मालूम हो गया होगा कि इस गुलशनगढ़ की धरती पर पचास हजार वर्ष पुराना वह स्वर्ण-महल है। यह स्वर्ण-महल जहां मानव-ज्ञान को विकसित करता है, वहीं इस महल की कुछ विशेषताएं भी हैं। दुनिया के किसी खजाने में इतना धन नहीं होगा जितना

कि इस महल में है। इस महल के अन्दर की विशेषताएं तो हमें भानुप्रताप ने बताई नहीं थीं, केवल इतना कहा था कि गुलशन-गढ़ के नीचे कोई स्वर्ण-महल है। उन्होंने मुझे बताया था कि उनके अनुसार किसी प्रकार इन तीनों देशों को इस महल के विषय में पता लग गया होगा और वे इसे प्राप्त करने के लिए यहां आ धमके हैं।" क्रान्ति का देवता अभी आगे भी कुछ बोलता लेकिन विजय बोल पड़ा—

—"यह सही भी है। वास्तव में महल एक आश्चर्य है।"

—"नहीं—यह गलत है।" क्रांति के देवता ने अपने शब्दों पर जोर देते हुए कहा—"यह माना कि वह महल अपने अन्दर एक महान विशेषता रखता है—लेकिन असली चक्कर वह महल नहीं है। यह स्पष्ट हो चुका है कि इन देशों में से किसी को भी उस स्वर्ण-महल के विषय में कोई जानकारी नहीं है। उन लोगों ने गुलशनगढ़ की धरती पर किसी और कारण से हमला किया है और वह कारण इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है।"

—"क्या कारण है?" उत्सुक होकर विजय ने प्रश्न किया।

—"अस्पताल से हमारे एक क्रांतिकारी ने मुझे अपनी रिपोर्ट भेजी है। उसमें उसने बताया है कि उसने गुप्त रूप से जब्बरसिंह और जेम्स बांड की वार्ता सुनी है। वह वार्ता इस प्रकार है...।" और क्रांति के देवता ने वे सारी बातें, जो जब्बर और जेम्स बाण्ड के बीच हुई थीं, विजय को बता दीं।

सुनकर विजय जैसे सब कुछ समझ गया। एक पल वह क्रांति के देवता के चेहरे को देखता रहा, फिर कुछ सोचकर एक-दम बोला—"वह आदमी इस समय कहां है, जिसने यह रिपोर्ट भेजी है?"

—"जब्बरसिंह और जेम्स बाण्ड के पीछे।"

—"वेरी गुड !" विजय प्रसन्नता से उछल पड़ा।

□ □

□ □

—"हैलो···हैलो—पायलेट चुंग स्पीकिंग···हैलो !" कमरे में रखे शक्तिशाली ट्रांसमीटर पर आवाज गूंजी। इस कमरे में केवल दो इन्सान थे—पहला चीनी वायुसेना का जनरल चांगलू और दूसरा अमेरिका का सबसे बड़ा जासूस माइक स्पलेन। दोनों की नजरें काफी देर से उस आन ट्रांसमीटर पर जा टिकी थीं। दोनों काफी देर से उसके बोलने की व्यग्रता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे।

ट्रांसमीटर से उभरते स्वर सुनकर चांगलू बाज की भांति ट्रांसमीटर पर झपटा और बोला—

—"हैलो···यस···चांगलू हियर ! क्या रिपोर्ट है, ओवर !"

—"अभी तक हम उस जलपोत को नष्ट करने में सफल नहीं हुए हैं।" दूसरी ओर से चुंग का स्वर उभरा—"अभी-अभी जलपोत से एक नेट उड़ा है। शायद वह हवा में हमसे युद्ध करना चाहता है—ओवर !"

—"तुम्हारी स्थिति क्या है ?" चांगलू ने तेजी से प्रश्न किया।

—"अभी तक हम दोनों सुरक्षित हैं।" चांगलू की आवाज उभरी—"किसी प्रकार के खतरे की बात नहीं है। भारतीय कुत्तों का यह नेट हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हम इसे जलाकर खाक कर देंगे। हमें विश्वास है सर कि हम इस जलपोत को नेस्तनाबूद कर देंगे। जलपोत से हमें तोप के निशाने पर भी

लेने की चेष्टा की जा रही है···परन्तु वे नहीं जानते कामरेड कि हम चीनियों से वे अभी सात जन्म भी नहीं टकरा सकते।"

—"तुम्हें और सहायता की आवश्यकता है?" चांगलू ने प्रश्न किया।

—"नहीं सर!' चुंग की आवाज उभरी—"इन कुत्तों के लिए हम काफी हैं।"

—"ओ० के०।" चांगलू ने कहा—"अब मैं ट्रांसमीटर बन्द कर रहा हूं···तुम दुश्मन की ओर ध्यान दो।" कहने के साथ ही चांगलू ने बिना चुंग का जवाब सुने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया।

—"अब पनडुब्बियों का हाल भी जानना आवश्यक है।" माइक ने तुरन्त कहा और समीप ही रखा एक ट्रांसमीटर ऑन कर दिया। ट्रांसमीटर पर सन्नाटा था। केवल वायु की सांय-सांय गूंज रही थी।

—"हैलो···हैलो···हैलो···!' माइक चीखा।

लेकिन दूसरी तरफ उसी प्रकार का सन्नाटा बना रहा। कहीं से कोई आवाज नहीं उभरी। लगभग दस मिनट तक माइक ट्रांसमीटर पर हैलो··हैलो करता रहा, परन्तु उत्तर में असफलता ही मिली। झुंझलाकर माइक ने ट्रांसमीटर में एक लात जड़ दी। ट्रांसमीटर में हल्की-सी गड़गड़ाहट होकर रह गई।

—"कहां मर गए साले?" माइक बुरी तरह झुंझलाकर कह उठा।

—"कहीं ऐसा तो नहीं मिस्टर माइक कि उन्होंने हमारी पनडुब्बियों को नष्ट कर दिया हो?" चांगलू ने सम्भावना व्यक्त की।

—"ऐसा होना···लगता तो कठिन है।' माइक ने कहा—

"लेकिन चांगलू ! हमें इस हिन्दुस्तानी जलपोत को नष्ट तो अवश्य करना है।"

—"लेकिन सर ! इसमें होगा क्या ?" चांगलू ने प्रश्न किया।

—"इसके विषय में तो केवल अनुमान ही लगाए जा सकते हैं।" माइक ने कहा—"सम्भव है, बागियों ने भारत से सैनिक-सहायता मांगी हो ! वसे जहां तक मेरा अनुमान है—इस जलपोत में युद्ध-सामग्री अवश्य होगी। अगर यह शस्त्र बागियों के हाथ लग गए और हिन्दुस्तानी सैनिक-सहायता इन्हें मिल गई तो अधिक समय तक गुलशनगढ़ पर हमारा कब्जा नहीं रह सकेगा।" माइक के स्वर में हल्की-सी लड़खड़ाहट थी।

—"तो क्या किया जाए सर ?" चांगलू ने पूछा।

—"चुंग से फिर सम्बन्ध स्थापित करो।" माइक ने आदेश दिया।

चांगलू ने आदेश प्राप्त होते ही ट्रांसमीटर ऑन कर दिया।

धड़ाम !

ट्रांसमीटर ऑन होते ही कमरे में एक भयंकर धमाका गूंज उठा। एक बार को तो दोनों बुरी तरह कांप उठे। भयभीत निगाहें एक-दूसरे से मिलीं। फिर दोनों की नजरें ट्रांसमीटर पर जाकर ठहर गईं। ट्रांसमीटर पर सांय-सांय करता हुआ सन्नाटा गूंज रहा था। बड़ी तेजी के साथ माइक ट्रांसमीटर पर झपटा और चीखा—

—"हैलो—हैलो···!"

—"हैलो सर !" दूसरी ओर से आवाज उभरी—"हमारा दूसरा विमान नेट ने नष्ट कर दिया है···हैलो···चुंग हीयर···मेरे साथी का विमान नष्ट हो गया है। हैलो···मेरा युद्ध नेट से

चल रहा है''नीचे से मुझे तोप के निशाने पर लेने का प्रयास किया जा रहा है। हैलो''हैलो''मैं खतरे में हूं''मैं खतरे में हूं'''।"

—"हम सहायता भेज रहे हैं।" माइक चीखा—"तुम यह चिन्ता मत करो''डटकर मुकाबला करो।"

कहने के एकदम बाद माइक ट्रांसमीटर को बिना ऑफ किए ही चांगलू की ओर घूमा और बोला—"एक विमान का प्रबन्ध करो चांगलू''हम खुद जाएंगे।"

—"सर, आप?"

—"जल्दी चांगलू!" माइक तेजी से बोला—"समय बातों में गंवाने का नहीं है।"

—"ओ० के० सर!" कहकर चांगलू कक्ष से भागता चला गया। माइक का दिमाग बड़ी तेजी से काम कर रहा था। अभी वह अपने स्थान से हिल भी नहीं पाया था कि हड़बड़ाए-से सैनिक ने वहां प्रवेश किया। उस सैनिक की सांस बुरी तरह फूली हुई थी। सीना धौंकनी की भांति ऊपर-नीचे हो रहा था।

माइक का ध्यान उसकी ओर गया।

—"क्या बात है?" माइक ने तेज आवाज में पूछा।

—"शिविर पर मौजूद सारे सैनिक मारे गए।" सैनिक ने एकदम जैसे विस्फोट किया।

—"क्या बकते हो?" चीख पड़ा माइक।

ऊपर से नीचे तक सैनिक हिल गया। उसने बोलना चाहा लेकिन माइक की कठोर मुद्रा देखकर एक शब्द भी बोल नहीं सका। माइक का चेहरा किसी भट्टी की भांति तप रहा था।

—"जल्दी बको, क्या हुआ?" माइक गुर्राया।

—"अचानक बागियों ने शिविर पर हमला कर दिया

सर !" लड़खड़ाती जुबान से सैनिक कह गया—"हमारे सारे सैनिक मारे गए। शिविर में जितने भी बागी कैदी थे, वे सब भाग गए।"

—"ग्रीफित का क्या हुआ ?" माइक चीख पड़ा—"वह तो वहीं गया था !"

—"वे भी बागियों के साथ थे सर !"

—"क्या ?" उछल पड़ा माइक। अपनी खोपड़ी उसे अन्तरिक्ष में घूमती-सी लगी। एक ही पल में उसके जेहन में न जाने कितने विचारों का आवागमन हो गया। यह समझने में देर नहीं लगी कि वहां जाने वाला ग्रीफित असली ग्रीफित नहीं था। अगर वह ग्रीफित नहीं था, तो कौन था ?

फिर असली ग्रीफित कहां है ?

▭ ▭

▭ ▭

धड़ाम !

एक जोरदार धमाका हुआ।

दुश्मन का दूसरा विमान भी खील-खील होकर वायुमण्डल में बिखर गया। आतिशबाजी का एक जोरदार कमाल गगन में देखने को मिला। जलपोत पर फिक्स तोप एक बार गरजकर शांत हो गई। तोपची ने जब अपनी सफलता का दृश्य आकाश में देखा तो झूम उठा। इस विमान के निशाने पर आते ही तोपची ने उड़ा दिया था। जलपोत पर उपस्थित अन्य लोगों ने भी इस दृश्य को देखा और…भारतीय सैनिक खुशी से नाचने लगे।

उस सैनिक की कुर्बानी सफल हो गई जिसने दस्ती बम लपककर खुद को बलि चढ़ा दिया था परन्तु जलपोत को बचा

लिया था। और फिर जलपोत पर एकदम सन्नाटा छा गया था।

परन्तु—इस समय···

विजय की खुशी में जैसे उस महान सैनिक को सब भूल गए। सब खुशी से नाच रहे थे। सागर का रास्ता तो पहले ही साफ हो चुका था। अब गगन में से भी उन्होंने दुश्मन को साफ कर दिया। इस समय जलपोत बेहद तीव्र गति से गुलशनगढ़ की ओर बढ़ रहा था।

सागर का कलेजा फट रहा था। जलपोत आगे बढ़ता जा रहा था। सेना के कर्नल ने हवा में उड़ रहे नेट के रणबाज हवाबाज से ट्रांसमीटर पर सम्बन्ध स्थापित करके कह दिया था कि अभी वह आकाश में ही रहे ताकि अगर दुश्मन फिर हवाई हमले की चेष्टा करे तो सरलता से उसका मुकाबला किया जा सके।

जलपोत पूर्णतया सुरक्षित अपने सम्पूर्ण वेग से आगे बढ़ रहा था। एक तरफ हवा में कलाबाजियां खाता नेट उसकी सुरक्षा कर रहा था, दूसरी तरफ पानी में छुपी वह पनडुब्बी जलपोत का कवच बनकर साथ-साथ चल रही थी जिस पर पन्द्रह नम्बर ने कब्जा किया था और जिसमें इस समय विकास भी मौजूद था।

इस बार के टकराव में दुश्मनों ने मुंह की खाई थी।

बिना किसी विशेष दुर्घटना के जलपोत अपने लक्ष्य पर पहुंच गया, यानी गुलशनगढ़ के उस किनारे पर जहां क्रांति के देवता के ये सेवक उसे पहुंचाना चाहते थे। एक गुफा जैसे स्थान से दनादन पांच पनडुब्बियां निकलीं और शस्त्र बड़ी तेजी से पनडुब्बियों में भरे जाने लगे। सम्पूर्ण भारतीय सैनिक और विकास इत्यादि वह काम बड़ी तेजी के साथ समाप्त करने का प्रयास कर रहे थे। केवल दस मिनट में सम्पूर्ण शस्त्र पनडुब्बियों में

भर लिए गए। नेट जलपोत के ऊपर हवा में चकरा रहा था।

अचानक उसी समय एक अन्य विमान की गड़गड़ाहट से वातावरण गूंज उठा!

सबकी निगाहें एकदम ऊपर उठ गईं।

हिन्दुस्तानी नेट के इर्द-गिर्द ही इस समय एक दूसरा लड़ाकू विमान चकरा रहा था। निश्चित ही इस विमान का संचालक माइक था। सबने देखा—यह नया विमान पूरी तरह लड़ने-मरने पर उतारू है।

ज़लपोत पर उपस्थित तोप ने तुरन्त अपना जबड़ा गगन की ओर उठा दिया।

पलक झपकते ही एक बार पुनः युद्ध की तैयारियां हो गईं।

सैनिक सतर्क हो गए। तोपची के जिस्म में जैसे बिजली भर गई। उसकी तोप का जबड़ा मौत का जबड़ा बनकर गगन की ओर उठ गया। ऊपर नेट और लड़ाकू विमान कलाबाजियां खा रहे थे। तोपची दुश्मन के विमान को अपने निशाने पर लेने के चक्कर में था।

सब देख रहे थे—नेट और विमान खुले आकाश में एक-दूसरे पर बाज की भांति झपट रहे थे। अवसर प्राप्त होते ही वह विमान पर गोली की वर्षा करता परन्तु हर बार दुश्मन का विमान चमत्कृत कर देने वाले एक विशेष ढंग से हवा में कलाबाजी खाता और खुद को बड़ी सफाई से बचाकर निकाल लेता था।

अवसर पाते ही विमान भी नेट पर आक्रमण कर रहा था।

परन्तु नेट का चालक भी वास्तव में कोई मंजा हुआ हवाबाज था। इस बार लग रहा था जैसे दुश्मन भी समझदार है, और साथ ही अपना मजबूत इरादा लेकर आया है।

आकाश में होता विमानों का यह टकराव बेहद रोमांचकारी था। जलपोत पर खड़े सभी इन्सान इन दो जांबाज हवाबाजों का कमाल देख रहे थे, मात्र तोपची ऐसा था जो दुश्मन के विमान को मार गिराने का प्रयास कर रहा था।

इस समय दोनों विमान हवा में बाज की भांति एक-दूसरे पर झपटकर विपरीत दिशाओं में दौड़ रहे थे।

एक ही समय में—

दोनों विमानों ने कलाबाजी खाई और पलक झपकते ही एक-दूसरे के सामने आ गए।

फिर—

विद्युतगति से एक-दूसरे की ओर दौड़े।

दोनों करीब पहुंचे—बेहद करीब।

एकसाथ दोनों के जेहन से शोले लपके।

एक भयंकर विस्फोट।

दोनों के शोले हवा में टकराकर आकाश में जगमगाते हुए बिखर गए। एक बारको तो दर्शकों की आंखें चुंधिया गईं, परन्तु अगले ही पल सबने देखा—

विमान नेट पर झपटा—नेट विमान पर।

और दोनों विमानों की बाहरी बॉडी एक-दूसरे से रगड़ खा गई। ठीक उसी पल, जब दोनों के पिछले भाग एक-दूसरे से स्पर्श कर रहे थे, बड़ी तेजी से विमान-चालक ने विमान दायीं ओर घुमा दिया।

जैसे ही विमान दायीं ओर घूमा—उसका पिछला भाग बायीं ओर घूमकर बड़े तेज वेग से नेट के पिछले भाग से टकराया। इस करारी मार पर नेट बुरी तरह लड़खड़ा गया।

उसी पल—नीचे से तोप ने गोला उगला।

निशाना एकदम सच्चा था।

किन्तु—मानना होगा कि विमान का चालक आवश्यकता से अधिक चालक और बिजली से भी अधिक फुर्तीला था। चमत्कृत कर देने वाली तेजी के साथ उसने अपने विमान को कबूतर की भांति दो-तीन कलाबाजी खिलाई और तोप के गोले की मार से साफ बचाकर ले गया।

गोला खाली आकाश में अपना मुंह लटकाकर रह गया।

इधर—नेट आकाश में बुरी तरह लड़खड़ा रहा था। उसके पिछले भाग से धुआं-सा निकल रहा था। नेट का चालक उस पर कण्ट्रोल करने की पूरी चेष्टा कर रहा था, किन्तु इसका क्या किया जाए कि उसकी हर चेष्टा असफल थी।

इधर विमान बड़ी तेजी से पुनः पलटा।

—"हैलो···हैलो!" जलपोत पर रखे एक ओपिन ट्रांसमीटर पर नेट के चालक की आवाज गूंजी—"अम्बर हियर! हैलो···अम्बर···हियर···सावधान···मेरे विमान के पिछले भाग में आग लग चुकी है···दुश्मन का यह विमान-चालक आवश्यकता से अधिक खतरनाक हवाबाज है···हैलो-हैलो···मैं अपने नेट को संभालने की काफी चेष्टा कर रहा हूं लेकिन आप देख रहे हैं कि मैं असफल हूं···जल्दी शस्त्र जलपोत पर से हटा दिए जाएं···मेरे सारे साथी भी जलपोत से हट जाएं···जल्दी···हो सकता है कि ये जलपोत को उड़ा दें।"

—"अम्बर!" कर्नल ट्रांसमीटर पर झुककर चीखा—"शस्त्र हटा दिए गए हैं।"

—"वेरी गुड सर!" अम्बर का प्रसन्नता में डूबा स्वर उभरा—"मेरे साथियों को भी जलपोत से हटा दो फिर मरने में मजा आ जाएगा।" अम्बर के स्वर में दृढ़ वीरता थी।

—"अम्बर !" कर्नल चीखा—"दुश्मन का विमान तुम्हारे करीब पहुंच चुका है।"

—"देख रहा हूं सर !" दूसरी ओर से अम्बर की गुर्राहट उभरी—"घबराओ मत···अम्बर, अम्बर का खिलाड़ी है—अभी इससे टक्कर लूंगा—ये···ये देखो···।"

अम्बर का स्वर उभरा, साथ ही कर्नल की निगाह ऊपर की ओर उठ गई।

उसने देखा—विमान लड़खड़ाते नेट के करीब आया। नेट पुनः संभलना चाहता था कि विमान से निकले शोलों ने नेट से मुलाकात कर ली।

भयंकर विस्फोट और चकाचौंध कर देने वाली चिंगारी से वातावरण कांप उठा।

—"जय हिन्द !" ट्रांसमीटर पर अम्बर का अन्तिम शब्द गूंजा।

ठीक उसी पल—जलपोत पर लगी तोप ने जोर से छींककर गोला उगला। विमान का चालक शायद अपनी सफलता पर खुश था, इसलिए थोड़ा-सा धोखा खा गया।

हालांकि इस बार भी उसने गजब की फुर्ती का प्रदर्शन किया था किन्तु फिर भी शोला विमान के पिछले भाग से टकराया। तीव्र गति से भागते विमान को एक तीव्र झटका लगा और वह बुरी तरह लड़खड़ा गया।

इसी बीच जलता हुआ नेट धड़ाम से सागर की छाती से टकराया।

—"भागो !" कुछ सोचकर विकास एकदम चीखा—"जलपोत से कूद जाओ।"

उसका इतना कहना था कि सैनिकों ने जलपोत को छोड़-

कर सागर में जम्प लगा दी। अधिकांश सैनिक तेजी से तैरते हुए जलपोत से दूर जाने की चेष्टा करने लगे। खुद विकास भी कूद गया था। इस समय वह चित अवस्था में पानी पर तेजी से तैरता हुआ जलपोत से दूर निकलने की चेष्टा कर रहा था।

इस समय वह आकाश में लड़खड़ाते दुश्मन के विमान को स्पष्ट देख रहा था। चालक उस विमान को संभालने की भर-सक चेष्टा कर रहा था। विमान के पिछले भाग में आग की लपटें लपलपा रही थीं।

विकास ने देखा—चालक ने विमान संभाल लिया।

विमान संभला—बड़ी तेजी से उसका रुख जलपोत की ओर हुआ।

और फिर—वही हुआ जिसका डर विकास को था। इसी-लिए उसने चीखकर सब सैनिकों को जलपोत से कूद जाने के लिए कहा था। उसके सोचे अनुसार ही जलते हुए विमान का रुख जलपोत की ओर हुआ।

उसके बाद—जलता हुआ विमान जैसे बन्दूक से छूटी गोली के समान था।

बड़ी तेजी से विमान जलपोत की ओर बढ़ा—धड़कते दिल से विकास इस दृश्य को देखता रहा।

तब जबकि जलता हुआ विमान सागर से लगभग सौ फीट ऊपर था, विमान का चालक-कक्ष खुला—एक इंसान ने चलते हुए विमान से बाहर हवा में जम्प लगा दी।

एक पल विकास ने उसे देखा—दूसरी ओर जलता हुआ विमान जलपोत की चिमनी में घुसा और—

धड़ाम...धम्म...धुम्म...!

कान के पर्दों को फाड़ देने वाले जबरदस्त विस्फोट !

आग के शोले पचास-पचास फीट ऊंचे उछल गए। आसपास का सागर जल उठा। लहरों में जैसे भयंकर तूफान आ गया। सागर उफनने लगा। सागर की छाती पर आग की लपटें लप-लपा उठीं। चारों ओर आग-ही-आग फैल गई। लपटों का खेल होने लगा।

पानी की दीवार ने विकास को उठाकर तीस गज दूर फेंक दिया।

सागर की छाती पर तबाही—विनाश और प्रलय का दृश्य था।

▭ ▭

▭ ▭

ग्रीफित ने अंधेरी कोठरी का लॉक खोला।

कोठरी के द्वार पर खड़े होकर उसने अपने दायें हाथ में दबी टॉर्च रोशन कर दी। शक्तिशाली टॉर्च का तीव्र प्रकाश सीधा एक कैदी पर पड़ा। इस कैदी को एक पत्थर के साथ जंजीरों से जकड़कर कैद कर दिया गया था। अपने ऊपर टॉर्च का प्रकाश पड़ता महसूस करके उसने सिर ऊपर उठाया।

यह ग्रीफित था—इंग्लैंण्ड की सीक्रेट सर्विस का दिग्गज जासूस।

इस समय उसकी हालत खस्ता रेवड़ियों से मुकाबला कर रही थी। बाल अस्त-व्यस्त थे। आंखों के इर्द-गिर्द का भाग काला पड़ गया था। चूंकि टॉर्च का प्रकाश सीधा उसी पर पड़ रहा था, इसलिए वह पूरी तरह आंख खोलने में असमर्थ था। तभी टॉर्च का प्रकाश उसके चेहरे से हट गया।

—"तुम कौन हो ?" ग्रीफित ने टॉर्च वाले इन्सान से पूछा।

पॉकेट बुक्स

जिसमें हर माह, आपकी ऐसे अनोखे कलाकारों से मुलाकात होगी, जो आपको विचित्र लोकों की सैर कराएंगे, जिनके साथ आप कभी हँसेंगे, रोमांचित होंगे, कभी भय से काँप भी उठेंगे, लेकिन डरिये नहीं, सिर्फ हँसिये, इन्हें पढ़िये, और अपना मनोरंजन कीजिये।

जिसके कलाकार हैं :-

संजय-सलीम

बाँकेलाल विश्वनाथ

विनाशदूत

नागराज

तोताराम

राहु-केतु

अर्जुन

—"आजकल लोग मुझे तुम्हारा नाम लेकर पुकारते हैं यानी ग्रीफित।" उसने अजीब-सी मुस्कान के साथ आगे बढ़ते हुए कहा।

—"मुझे यहां कैद…"

—"क्रांति का देवता जब अपने सेवकों को काम सौंपता है तो वह किसी को अधिक बातें करने का अवसर नहीं देता।" वह ग्रीफित की बात बीच में ही काटकर बोला—"मुझे भी यह आदेश नहीं है कि तुमसे अधिक गुफ्तगू करूं।" कहते हुए वह नपे-तुले कदमों के साथ आगे बढ़ा और ग्रीफित के देखते-ही-देखते उसका दायां हाथ हवा में लहराया और बड़ी वेगशाली कैरेट के रूप में ग्रीफित की कनपटी से टकराया।

ग्रीफित की कनपटी झूल गई। चेतना से उसकी बोलचाल बन्द हो चुकी थी।

उसी पल—

सुरंग में एक हल्की-सी आहट उभरी। उसके कान एकदम खड़े हो गए। पलक झपकते ही उसने टॉर्च बुझा दी और वह झपटकर कोठरी के दरवाजे के पीछे पहुंच गया।

—"झटकेबाजी बन्द कर दो प्यारे—ये हम हैं।" बाहर से विजय की आवाज उभरी।

वह एकदम चौंक पड़ा। अगले ही पल वह कोठरी के दरवाजे पर था। सामने विजय खड़ा था। विजय किसी श्रेष्ठ मूर्ख की भांति पलकें झपका रहा था। उसे देखते ही नकली ग्रीफित बोल पड़ा—

—"मास्टर, आप ?"

—"बिल्कुल हम ही हैं गुलफाम प्यारे!" विजय किसी तीसमारखां की भांति बोला—"हमारे यारे का क्या हाल है ?"

—"मैंने सब काम क्रांति के देवता के बताए अनुसार ही किया है मास्टर !" गुलफाम ने कहा।

—"बस, तो गुलफाम प्यारे !" विजय मूड में बोला—"अब समझो कि तुम्हारा जीवन सफल हो गया यानी ये समझो कि स्वर्ग का सदर दरवाजा तुम्हारे लिए चौपट खुला पड़ा है।"

—"क्रांति के देवता के आदेशानुसार मैं इसको आपके पास ही ला रहा था।" गुलफाम बोला।

—"ये साला क्रांति का देवता भी अजीब किस्म का बंगलोल है।" विजय बुरा-सा मुंह बनाकर बोला—"अगर तुम्हें हमारे पास पहुंचने का आदेश दिया था तो हमें यहां पहुंचने का आदेश देकर क्यों बकार बच्चे को कष्ट दिया ?"

—"ये क्रांति का देवता है कौन मास्टर ?" गुलफाम ने प्रश्न किया।

—"शी...ऽ...ऽ...ऽ...!" एकदम किसी भयभीत बच्चे की भांति होंठों पर उंगली रखकर गुलफाम को चुप रहने का आदेश दिया और बोला—"बेटा गुलफाम प्यारे ! इस बात को एक गिलास गर्म पानी के साथ अच्छी तरह अपने कंठ से नीचे उतार लो कि आगे से स्वप्न में भी यह नहीं सोचना कि क्रांति का देवता कौन है।"

उत्तर में गुलफाम को कहने के लिए कोई शब्द नहीं मिले। अत: वह केवल विजय का चेहरा ही देखता रह गया। विजय ने बड़ी अदा के साथ आंख दबाई और बोला—"अब इसे जल्दी से खोलकर कन्धे डाल लो गुलफाम मियां ! इस साले क्रांति के देवता के आदेश का पालन करना है।"

उत्तर में गुलफाम ने जल्दी से ब्रीफकेस को खोला।

लेकिन—

ग्रीफित के आजाद होते ही गुलफाम की कनपटी से एक बेहद शक्तिशाली घूंसा टकराया। संभलने की चेष्टा के बावजूद भी गुलफाम उछलकर दूर जा गिरा। टॉर्च उसके हाथ से छूटकर फर्श पर लुढ़क रही थी। यह अब भी रोशन थी और उसकी रोशनी में कमरे में उपस्थित तीनों इन्सान एक-दूसरे को देख सकते थे।

गजब की फुर्ती के साथ ग्रीफित उछलकर खड़ा हो गया।

—"हाय !" विजय एकदम ठुमका-सा लगाकर बोला—"ग्रीफित मियां ! क्या झटके मारते हो ! कसम कल्लू की अम्मा की, अगर क्वांरी कन्या देख ले तो बूढ़ी हो जाए।"

—"तुम अपने-आपको ज्यादा होशियार मत समझो विजय !" ग्रीफित गुर्राया—"मेरे रास्ते से हट जाओ।"

—"बस-बस प्यारे, ज्यादा झटके मत खाओ।" विजय अपने स्थान से ठुमके लगाकर बोला—"हमारे हाथ में बच्चों के खेलने का तमाशा है ! तुम जानते हो कि इसमें पूरे छः मौत के परमिट हैं। अपने हस्ताक्षर करके मैं ये परमिट जिसको थमा देता हूं, वह ईश्वरपुरी की तरफ भागने लगता है और इस पर हस्ताक्षर करने के लिए केवल अपनी उंगली का दबाव 'ट्रेगर' पर बढ़ाने की आवश्यकता होती है।"

क्रोध से ग्रीफित का पूरा जिस्म कांप उठा।

इस बीच गुलफाम भी खड़ा हो चुका था।

—"अकेले इन्सान को रिवॉल्वर की नोक पर अपने वश में करना कोई बहादुरी का काम नहीं है, विजय !"

—"जासूस को बहादुरी सिखा रहे हो ग्रीफित मियां !" विजय रिवॉल्वर हिलाता हुआ बोला—"बहादुरी से तो जासूस का दूर तक भी नाता नहीं होता है।"

—"ठहरो मास्टर !" अपने स्थान पर पड़ा हुआ गुलफाम गुर्राया—"रिवॉल्वर हटा लो—मैं बताऊंगा इसे कि बहादुरी क्या होती है। इसने मुझे एक घूंसा मारा है—मैं इसे बता दूंगा कि गुलफाम को घूंसा मारना कितना महंगा पड़ता है !"

—"अजी नहीं गुलफाम मियां !" विजय एकदम बोला—"मर जाएगा बेचारा।"

—"नहीं मास्टर !" गुलफाम गुर्राया—"इसने बहादुरी की बात की है। गोरी चमड़ी वाला यह पहला इन्सान है जो हिन्दुस्तानी की बहादुरी को ललकार रहा है। मैं इसे बता दूंगा कि बहादुरी क्या होती है।" कहता हुआ गुलफाम खतरनाक ढंग से ग्रीफित की ओर बढ़ा।

ग्रीफित भी एकदम अपनी समस्त इन्द्रियों के साथ सतर्क हो गया।

—"अबे ओ गुलफाम प्यारे !" विजय एकदम बौखलाकर बोला—"अमां क्या करते हो ! अबे, मेरा यार मर जाएगा···अबे···अबे नहीं···हमें जाना है···मामला बिगड़ जाएगा···अमां गुलफाम प्यारे, रुको।"

किन्तु गुलफाम ने तो जैसे सुना ही नहीं। वह खूनी ढंग से ग्रीफित की ओर बढ़ता ही चला गया। ग्रीफित भी पूरी तरह सतर्क हो गया। गुलफाम पर दृष्टि जमाए हुए वह बोला—

—"अगर मर्द के बच्चे हो विजय, तो अब हमारे बीच में मत आना। इस इन्सान के बारे में अधिक तो नहीं जानता लेकिन इतना अवश्य जानता हूं कि यह खुद को आवश्यकता से अधिक बहादुर समझता है।"

विजय को लगा—दोनों मरने-मारने पर उतारू थे।

लेकिन विजय यही नहीं चाहता था।

—"रुक जाओ गुलफाम प्यारे !" विजय सख्त स्वर में गुर्रा उठा था—"इस समय हम मल्ल-युद्ध करवाने के जरा भी मूड में नहीं है। रुक जाओ वरना गोली मारकर टंगड़ी तोड़ दूंगा।"

—"मास्टर !" एकदम दहाड़ा गुलफाम—"आज तक ऐसा नहीं हुआ कि गुलफाम आपका आदेश टाल दे···लेकिन आज··· आज मुझे मत रोको मास्टर···आज मैं नहीं रुकूंगा। गुलफाम उस इन्सान को बहादुरी दिखाकर ही रहता है जो उसकी बहादुरी को ललकारे···गोली मार दोगे तो मार दो मास्टर···तुम्हारी गोली खा सकता हूं, लेकिन अपनी बहादुरी को चुनौती नहीं सुन सकता···मार दो गोली !" गुर्राता हुआ गुलफाम बड़ी तेजी के साथ विजय की ओर पलटा। गुलफाम का भयानक चेहरा देख कर एक बार को विजय जैसा इन्सान भी दहल उठा।

विजय अभी कुछ कहना ही चाहता कि—

ग्रीफित ने अच्छा अवसर पाते ही चीते की भांति गुलफाम पर जम्प लगा दी। विजय देखता ही रह गया और ग्रीफित गुल-फाम से लिपट गया। दोनों एक-दूसरे से गुंथे हुए कोठरी के फर्श पर लुढ़क रहे थे।

—"लड़ो सालो !" विजय बुरा-सा मुंह बनाकर बोला—"हम भी देखते हैं, बीस-इक्कीस कौन है ?" यह बुदबुदाते हुए उसने फर्श पर पड़ी हुई टॉर्च उठा ली। टॉर्च उसने सतर्कतावश उठाई थी। उसके दिमाग के अनुसार ग्रीफित इस टॉर्च को बुझा-कर अंधेरा कर सकता था और बड़ी सरलता से अंधेरे का लाभ उठा सकता था।

इस समय वह मूर्खों की भांति उन दोनों को देख रहा था। अचानक गुलफाम ने ग्रीफित को उठाकर दूर फेंक दिया।

हवा में लहराता हुआ ग्रीफित कोठरी के एक दूसरे कोने में

जा गिरा, परन्तु अगले ही पल वह फुर्ती से उछलकर खड़ा हो गया। इधर गुलफाम भी खड़ा हो चुका था।

विजय दोनों के विषय में जानता था कि वे कितने पानी में हैं।

वह जानता था कि गुलफाम बेशुमार शक्ति का मालिक है। जहां तक शक्ति का सवाल है, उसमें तो ग्रीफित सात जन्म तक भी गुलफाम का मुकाबला नहीं कर सकता था, लेकिन दूसरी ओर ग्रीफित था।

इंग्लैंड की सीक्रेट सर्विस का जांबाज जासूस।

माना शक्ति में वह गुलफाम से कम था किन्तु लड़ने के जो तरीके वह जानता था, गुलफाम ने तो स्वप्न में भी नहीं देखे होंगे।

दोनों प्रतिद्वन्द्वी एक-दूसरे के सामने थे।

अचानक विजय के दिमाग में न जाने क्या आया कि उसने शक्तिशाली टॉर्च का प्रकाश सीधा ग्रीफित की आंखों में मारा। ग्रीफित एकदम चुंधिया गया। इस विचित्र और नई मुसीबत पर ग्रीफित बुरी तरह बौखला गया।

उसी पल गुलफाम की जबरदस्त फ्लाइंग किक ने उसे उछाल दिया।

ग्रीफित धरती पर गिरा—लेकिन फुर्ती के साथ खड़ा हो गया।

टॉर्च का प्रकाश पुनः उसकी आंखों पर पड़ा।

वह टॉर्च के प्रकाश से बचने की चेष्टा ही कर रहा था कि गुलफाम के दो मजबूत हाथों ने पलक झपकते ही उसे ऊपर को उठाया और इससे पूर्व कि ग्रीफित अपने किसी भी दांव का प्रयोग कर सके—गुलफाम ने उसे फर्श पर दे मारा।

ग्रीफित के कण्ठ से एक चीख निकल गई।

झपटकर गुलफाम ने उसे धरती पर ही दबोच लिया और उसके बाद...

बिजली की गति से गुलफाम के हाथ चले।

उसके ताबड़तोड़ घूंसे ग्रीफित के चेहरे से टकराने लगे। ग्रीफित के कण्ठ से चीखें निकलने लगीं। उसे संभलने का अवसर ही नहीं मिला और गुलफाम उससे अलग तभी हुआ जब पिटता-पिटता ग्रीफित बेहोश हो गया। उसे छोड़कर गुलफाम अलग हो गया।

उसकी सांस भी इस समय धोंकनी की भांति चल रही थी।

गुलफाम की इस विजय में विजय का महत्त्वपूर्ण योगदान था। बार-बार ग्रीफित के चेहरे पर यह प्रकाश डालकर उसने ग्रीफित को किसी भी दांव के प्रयोग करने का अवसर नहीं दिया था।

—"क्षमा करना मास्टर!" गुलफाम अपनी फूली सांस पर काबू करने का प्रयास करता हुआ बोला—"आज पहला अवसर था जब गुलफाम ने आपका कहना नहीं माना—क्षमा करना मास्टर!"

—"अमां गुलफाम प्यारे!" विजय उसकी बात पर जरा भी ध्यान न देकर बोला—"यार, तुमने तो इसको मार-मार के धनिया बना दिया! कसम काले पहलवान की, हमें ये उम्मीद नहीं थी।"

—"उसने मेरी बहादुरी को ललकारा था मास्टर!" गुलफाम घृणा से ग्रीफित को देखता हुआ बोला—"इसे यह नहीं पता कि हिन्दुस्तानी बहादुरी पर कलंक नहीं देख सकता।"

—"मान गए गुलफाम प्यारे, कि तुम पैदाइशी बहुत बहा-

दूर हो।" विजय बोला—"अब इन महानुभाव को जल्दी से उठाकर कन्धे पर डालो—अभी बहुत कुछ करना है।"

गुलफाम ने तुरन्त आदेश का पालन किया।

▭ ▭

▭ ▭

—"तुम ?" ग्रीफित को प्रयोगशाला में प्रविष्ट होता देखकर जेम्स बांड आश्चर्य से लगभग उछल पड़ा—"तुम यहां कैसे ? यहां का रास्ता तुम्हें किसने बताया ?"

उत्तर में ग्रीफित धीरे से मुस्कराया। एक बार उसने बांड के सामने खड़े अभयसिंह और जैब्रा को देखा। बांड के बगल में ही जब्बरसिंह खड़ा था। वह उसकी तरफ बढ़ता हुआ बोला—

—"अब यह प्रयोगशाला इतनी गुप्त नहीं रही जितनी अभयसिंह ने बना रखी थी।"

—"लेकिन।" अभी बांड कुछ कहना चाहता था कि जेम्स बांड खुद ही रुक गया। उसने बड़े ध्यान से ग्रीफित का चेहरा देखा—उसकी आंखें सिकुड़ती चली गईं। उसने अपने हाथ में दबे रिवॉल्वर को बड़ी अदा के साथ घुमाया और बोला—"जेम्स बांड की नजरों को धोखा देने वाला मेकअप अभी दुनिया में नहीं बना है।"

कहने के साथ ही उसने ट्रेगर पर दबाव बढ़ा दिया किन्तु—

धांय !

एक फायर की आवाज से सम्पूर्ण प्रयोगशाला कांप उठी। गोली सीधी बांड के हाथ में दबे रिवॉल्वर पर जा लगी और रिवॉल्वर छिटककर प्रयोगशाला की एक डैस्क के पीछे जा गिरा।

बांड सहित सबने पलटकर प्रयोगशाला के दरवाजे पर देखा ।

—"यहां हम हैं बांड प्यारे !" दरवाजे पर खड़ा विजय आंख मारता हुआ बोला—"हम तुम्हारी एक-एक नस अच्छी तरह से टैस्ट कर चुके हैं। जानते हैं कि तुम किस तरह मात खा सकते हो।" वह बड़े आराम से अपने हाथ में दबे रिवॉल्वर की नाल में फूंक मारता हुआ बोला।

रिवॉल्वर जैसे अब भी सिगरेट पी रहा था।

—"तुम !" बांड के चेहरे पर गहन आश्चर्य के भाव उभर आए—"तुम ठीक हो ?"

—"हमें हुआ ही क्या था बांड मियां !" विजय आराम से आगे बढ़ता हुआ बोला—"हुआ तो तुम्हें था। हमारा राणाप्रताप बनना एक ऐसी चाल थी जिसमें तुम बड़ी सरलता के साथ फंस गए। अजी प्यारे बांड मियां ! जरा ये तो सोचो कि विजय दी ग्रेट जैसा महान धुरन्धर जासूस भला इतनी सरलता से कैसे गिरफ्तार हो सकता था।"

—"क्या मतलब ?" बांड की खोपड़ी घूम गई।

—"तभी तो कहता हूं बांड प्यारे कि हिन्दुस्तानी दाल में भीमसेनी काजल डालकर खाया करो—बुद्धि बिना एड़ लगाए सरपट दौड़ेगी यानी मतलब यह है कि हमारा राणाप्रताप बनना एक चाल थी। हम किसी राणाप्रताप के पुनर्जन्म नहीं हैं—हम तो केवल प्यारे विजय दी ग्रेट हैं। यूं कहो कि हमारा इतनी आसानी से गिरफ्तार होना भी योजना का एक अंग था।"

—"यह कैसे हो सकता है ?" बांड बौखला गया।

—"जैसे अण्डे से मुर्गी पैदा हो सकती है।" विजय ने बड़े आराम से कहा—"वैसे तुम्हारी सेहत के लिए यह बता दूं कि

यह सब क्रांति के देवता ने किया है।"

—"क्रांति का देवता?" बांड ने दोहराया—"नाम तो बहुत सुनने में आ रहा है लेकिन यह कौन है?"

—"यही जानने की कोशिश में तो हम बूढ़े हो गए बांड मियां!" विजय उसी मूड में बोला—"खैर, अब तुमने काफी प्रश्न कर लिए हैं। अब जरा एक प्रश्न हम भी कर लें। हां, तो बड़े भाई, प्रश्न ये है कि आप लोग यहां क्या गुफ्तगू कर रहे हैं? हम तो तुम्हारी राह में पलकें बिछाए महल में प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन तुम यहां हो। जब इन्तजार की हद हो गई तो हम खुद यहां आ गए। कहो, ठीक किया न?"

बांड का दिमाग बड़ी तेजी से कार्य कर रहा था मगर उसे इस समय कुछ सूझ नहीं रहा था। शेष सभी शांति के साथ यह वार्तालाप सुन रहे थे।

—"तुम कौन हो बेटे? कहीं विजय तो नहीं?" अचानक अभयसिंह बोल पड़े।

—"आपने ठीक पहचाना चचाजान!" विजय नाटकीय ढंग में बोला—"बन्दे को ही विजय कहते हैं। वैसे भी मैं अपने भाषण में कई बार अपना नाम ले चुका हूं।"

विजय के बात करने का ढंग, उसका सम्बोधन इत्यादि पर अभयसिंह थोड़े से चकराए, लेकिन विजय की इन बातों से अधिक प्रबल अभयसिंह के दिल में मचलती भावनाएं थीं। उन्होंने एक बार विजय को ऊपर से नीचे तक देखा।

चेहरे पर बेइन्तहा प्रसन्नता के भाव उभरे। आंखें चमक उठीं।

—"बेटे!" उनके मुंह से भावनाओं में डूबा स्वर निकला। उन्होंने दौड़कर विजय को कलेजे से लगा लिया। बोले—"आज

से पहले तेरे बारे में केवल सुना था, तेरा फोटो देखा था। कितना बदनसीब हूं मैं कि अपने इतने बड़े बेटे को आज पहली बार देख रहा हूं !" भावावेश में वे विजय से लिपट गए।

विजय बौखला गया। वह एकदम बोला--

—"जी···जी··· मैं आपका नहीं, अपने पिताजी का बेटा हूं।"

बस—इसी समय का बांड ने लाभ उठाया।

बांड ने ऐसी फुर्ती का प्रदर्शन किया था कि विजय जैसा व्यक्ति भी चमत्कृत रह गया। भयानक तेजी के साथ बांड ने उछलकर एक कैरेट विजय के रिवॉल्वर वाले हाथ पर मारा।

विजय उस समय अभयसिंह की पकड़ में होने के कारण कुछ भी नहीं कर सका। रिवॉल्वर उसके हाथ से छिटककर दूर जा गिरा। बड़ी तेजी से बांड रिवॉल्वर पर झपटा—रिवॉल्वर उसके हाथ में आ भी गया, परन्तु अभी वह उसे सीधा नहीं कर पाया था कि गुलफाम की ठोकर उसके हाथ में लगी।

हवा में लहराता हुआ रिवॉल्वर प्रयोगशाला में रखे एक जार में जा गिरा। यह जार सलफ्यूरिक अम्ल का था जिसमें से उसे निकालने का साहस कोई भी बुद्धिजीवी नहीं कर सकता था।

अगले ही पल—प्रयोगशाला में जैसे हुड़दंग मच गया।

जब्बरसिंह ने आव देखा न ताव—जैन्ना को उठाकर उसने फर्श पर दे मारा। जैन्ना के कंठ से चीख निकल गई।

इधर विजय ने अभयसिंह को एक तेज धक्का दिया और खुद जब्बरसिंह पर जम्प लगा दी। गुलफाम बाण्ड से भिड़ गया था। चार प्रतिद्वन्द्वी दो-दो होकर भिड़ गए।

फर्श पर पड़े हुए अभयसिंह ने एक पल को यह देखा।

फिर बड़ी तेजी से उठे।

उसके बाद—

उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। तेजी से भागते हुए वे प्रयोगशाला से बाहर निकल गए। बांड ने उन्हें पकड़ने के लिए उन पर जम्प लगाने की चेष्टा की—लेकिन···

उसी पल गुलफाम ने उसकी टांग पकड़कर खींच ली।

बांड धड़ाम से मुंह के बल गिरा।

झुंझला उठा जेम्स बाण्ड। उसने तेजी से एक करवट ली और गुलफाम खाली फर्श पर आकर गिरा। कदाचित उसने जेम्स बांड पर जम्प लगाई थी।

बेहद फुर्ती के साथ बांड खड़ा हुआ।

पलक झपकते ही वह खतरनाक चीते की भांति गुलफाम से लिपट गया।

इधर···

जब्बरसिंह पर जम्प लगाते ही विजय को अपनी भूल का अहसास हो गया। उसे मानना पड़ा कि जब्बरसिंह हालांकि बूढ़ा हो गया है किन्तु अब भी बेशुमार शक्ति का मालिक है। विजय जान चुका था कि जब्बरसिंह को शक्ति में वह कभी परास्त नहीं कर सकेगा। अलबत्ता वह उसका मलबा एक ही मिनट में बना देगा।

इस समय जब्बरसिंह के मजबूत हाथों में विजय की गर्दन फंसी हुई थी। विजय को लग रहा था, जैसे लोहे के दो शिकंजे उसकी गर्दन दबा रहे हैं। उसकी सांस घुटती जा रही थी।

विजय समझ गया कि अगर उसने जल्दी किसी दांव का प्रयोग नहीं किया तो जब्बरसिंह इसी तरह गला दबाकर उसे यमराज के दरबार तक पहुंचा देगा। अभी वह जब्बरसिंह के

बन्धन में किसी मछली की भांति तड़प ही रहा था कि—

"साले, कमीने, हरामजादे !" प्रयोगशाला में गालियां गूंजी और साथ ही एक कांच का बेलजार जब्बरसिंह के सिर से टकराया। एक पल के लिए जब्बरसिंह चूका।

बस—यह एक पल ही विजय के लिए बहुत था।

एक झटके के साथ खुद को उसने जब्बरसिंह की पकड़ से मुक्त किया और उधर जब्बरसिंह ने अपने सिर पर मारने वाले जैक्रा की कनपटी पर घुमाकर घूंसा मारा।

एक ही घूंसे में जैक्रा चीखता हुआ फर्श पर गिरा और तुरंत बेहोश हो गया। विजय ने तेजी से घूमकर दनाक से एक चांटा जब्बरसिंह के गाल पर मारा। जब्बरसिंह की खोपड़ी भिन्ना गई।

अभी विजय उस पर दूसरा वार करना ही चाहता था कि गुलफाम द्वारा हवा में उछाला गया जेम्स बांड सीधे उसके ऊपर आकर गिरा। विजय एक मिनट के लिए तो बौखल या।

इधर—इस बीच जब्बरसिंह ने विजय पर ..म्प लगाई।

उसे हवा में ही लपक लिया गुलफाम ने।

अब—जब्बर और गुलफाम भिड़ गए।

दोनों महान शक्तिशाली !

उधर विजय ने एक करारा घूंसा बांड के जबड़े पर रसीद कर दिया। बांड केवल लड़खड़ाकर रह गया। विजय उसके सामने हाथ पटककर कह रहा था—

—"हाय बांड प्यारे, हो जाएं दो-दो हाथ हमारे।"

बांड ने एक बार खूनी निगाहों से उसे देखा—जेम्स बांड के होंठों पर भी एक मुस्कान उभरी।

—"हाय, मैं मर जावां !" विजय ने एकदम पछाड़ खाकर

गिर जाने वाली एक्टिंग की—"क्या मुस्कान है ! कसम तुम्हारी इस मुस्कान की, अगर एक बार मेरे कुत्ते के सामने मुस्करा दो तो कुतिया समझकर तुम्हारे पीछे दुम हिलाता फिरे।"

—"बड़े चहक रहे हो बेटे !" बांड उसी प्रकार मुस्कराकर बोला—"झकझकी नहीं सुनाओगे ?"

—"अबे हम क्या किसी के बाप के नौकर हैं ?" विजय अदा के साथ मटककर बोला—"लो, नहीं सुनाते। अब बोलो; क्या करोगे यानी कि तुम्हारे बाप के बस का हो तो हमारी पूंछ उखाड़ लो।"

इधर गुलफाम और जब्बरसिंह बुरी तरह गुंथे हुए थे। वे दोनों ही अपरिमित शक्ति के मालिक थे। उनका युद्ध बड़ा भयानक था जबकि दुनिया के दो महान जासूस पैंतरा बदल-बदलकर एक-दूसरे को परास्त करने का उचित अवसर देख रहे थे।

अचानक विजय ने देखा—

जेम्स बांड ने उस पर जम्प लगाई।

बड़ी तेजी से विजय ने खुद को बचाया, लेकिन उस समय विजय चौंक पड़ा, जब बांड की सिर की टक्कर उसके सिर में पड़ी। विजय का सिर घूम गया। अब उसकी समझ में आ गया कि बांड ने जम्प लगाने का केवल उपक्रम किया था। उसने जम्प लगाई नहीं थी और विजय के बचते ही बांड ने अवसर का लाभ उठाया था।

विजय अभी संभल भी नहीं पाया था कि—

बांड की एक फ्लाइंग किक उसके सीने पर पड़ी।

विजय एक डैस्क से उलझता हुआ पीछे जा गिरा। बांड ने उस पर जम्प लगाई लेकिन—यहां जेम्स बांड मात खा गया।

विजय फुर्ती के साथ अपना स्थान छोड़ चुका था।

जेम्स बांड डैस्क से उलझ गया।

विजय ने एक जोरदार ठोकर उसके चेहरे पर रसीद की—और बांड उछलकर दूर जा गिरा। इस एक ही ठोकर से उसके मुंह से खून बहने लगा था। अगले ही पल जेम्स बांड बड़ी फुर्ती के साथ उछलकर खड़ा हो गया।

विजय उसके सामने खड़ा था।

—"देखा बांड मियां! इसे कहते हैं पैंतरेबाजी!" विजय किसी भटियारिन की भांति हाथ नचाता हुआ बोला।

उसके बाद—

जेम्स बांड ने जो कुछ किया—उसे देखकर विजय चमत्कृत रह गया।

उसे पूरी उम्मीद थी कि जेम्स बांड उसका मुकाबला करेगा परन्तु उम्मीद के एकदम विपरीत बांड ने एक बेहद लम्बी जम्प ली और वह सीधा प्रयोगशाला के दरवाजे पर पहुंच गया।

बांड की इस हरकत पर विजय एकदम बौखला गया।

—"अबे···बाण्ड प्यारे···अबे सुनो तो···।" विजय ने कहा।

—"इस वक्त मेरे पास समय नहीं है विजय!" दरवाजे पर खड़ा बांड चीखा—"लेकिन तुमसे वादा करता हूं कि तुम्हें ये बताकर रहूंगा कि बांड किस हस्ती का नाम है।" कहने के साथ वह दरवाजे से बाहर हो गया।

विजय ने भी एक लम्बी जम्प ली और प्रयोगशाला से बाहर सुरंग में आया। उसने देखा—जेम्स बांड सुरंग में एक तरफ को भागा जा रहा था। विजय तेजी से उसके पीछे दौड़ता हुआ चीखा—

—"अबे ओ भाई ! अबे सुनो तो !"

मगर बांड को भला कुछ सुनने की फुर्सत कहां थी ? वह तो भागता ही चला गया। सुरंग में कुछ दूर तक विजय ने उसका पीछा किया परन्तु जल्दी ही उसे मालूम हो गया कि बांड उसके हाथ नहीं आएगा।

वह एकदम इस प्रकार रुक गया जैसे पूरी शक्ति से किसी ने ब्रेक लगा दिए हों।

—"साला निकल भागा !" विजय गुद्दी खुजाता हुआ बुद-बुदाया।

उधर—

प्रयोगशाला में जब्बर और गुलफाम खूंखार सांडों की भांति भिड़े हुए थे। दोनों के जिस्मों के अनेक भागों से खून बह रहा था। उनके इर्द-गिर्द की डैस्क उलट चुकी थीं। उन पर रखे अनेक वैज्ञानिक उपकरण टूट गए थे। गनीमत यह थी कि प्रयोग-शाला में रखा हुआ कोई खतरनाक पदार्थ उनके ऊपर नहीं गिरा था।

दोनों ही बेहद शक्तिशाली थे।

सांसें धौंकनी की भांति चल रही थीं परन्तु फिर भी एक-दूसरे से बुरी तरह उलझे हुए थे। अचानक जब्बरसिंह ने गुल-फाम के पैर में पैर फंसाया और उसे हवा में उछाल दिया।

गुलफाम फर्श पर जाकर गिरा किन्तु जितनी जल्दी वह गिरा था उससे कहीं अधिक तेजी के साथ उछलकर खड़ा हो गया। उसके बाद वे दोनों बिना किसी दांव का प्रयोग किए पुनः भिड़ गए।

इस बार दांव लगा गुलफाम का।

उसने जब्बर सिंह को अपने हाथों पर बिल्कुल ऊपर उठाया

और प्रयोगशाला के फर्श पर दे मारा।

जब्बरसिंह के कण्ठ से एक चीख निकल गई।

गुलफाम ने भी किसी दांव इत्यादि का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं समझी थी। वह फिर जब्बरसिंह पर झपट पड़ा। इस प्रकार वे पुनः एक-दूसरे से भिड़ गए। दोनों के घूंसों ने एक-दूसरे के चेहरे को खून से लथपथ कर दिया।

उसी समय—

प्रयोगशाला में विजय ने प्रवेश किया। उसने आपस में भिड़े हुए उन दो खूनी भेड़ियों को देखा और हल्की-सी मुस्कान उसके होंठों पर उभर आई। उसे याद था कि जेम्स बांड का रिवॉल्वर किसी डैस्क के पीछे गिरा था। वह उसी तरफ बढ़ा और रिवॉल्वर उठाकर उन दोनों के समीप आ गया। दोनों में से किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वे एक-दूसरे से भिड़ने में इतने व्यस्त थे कि अपने इर्द-गिर्द की स्थिति का उन्हें ध्यान ही नहीं था।

—"बस-बस—!" विजय किसी रैफरी की भांति हाथ उठाकर बोला—"तुम दोनों को 'बराबर' छोड़ा जाता है।"

एक पल के लिए दोनों के जिस्म ठिठके, किन्तु पुनः उसी वेग से हरकत में आ गए।

—"अबे छोड़ो।" विजय ने जोर से फर्श पर पैर पटककर कहा।

किन्तु—

दोनों में से किसी पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

विजय को ताव आ गया। अपने स्वर में गुर्राहट उत्पन्न करता हुआ वह बोला—"अबे ओ काने! बहुत हो लिया। अब छोड़कर अलग हट जा वरना मेरे हाथ में तमन्चा है—टांय-टांय

फिस्स करके तेरी दूसरी आंख फोड़ दूंगा।"

जब्बरसिंह का जिस्म एकदम शिथिल पड़ गया, जबकि गुलफाम अभी भी उलझा हुआ था।

—"बस, गुलफाम प्यारे! बहुत हो लिया—अब बन्द करो।"

सुनते ही गुलफाम उछलकर दूर जा खड़ा हुआ।

इसबार जब्बरसिंह भी खड़ा हो चुका था। परन्तु वह खड़ा हुआ अपनी इकलौती आंख से विजय को घूर रहा था। उसकी आंख खून की भांति लाल थी। क्रोध से उसका जिस्म कांप रहा था।

—"यूं न देख हसीना!" विजय एकदम थर्ड क्लास आशिक की भांति अपने सीने पर हाथ मारता हुआ बोला—"हमारा दिल धड़कता है—तुमसे प्यार करने को फड़कता है तेरी याद में चटकता है।"

—"लड़के—!" बुरी तरह क्रोधित होकर गुर्राया जब्बर—"तमीज से बातें करना सीखो। मैं तेरे बाप का मामा हूं। लगता पढ़ा-लिखा है लेकिन तमीज धेले की नहीं है। बुजुर्गों से बात तक करनी नहीं आती।"

—"अजी तमीज के बदले में तो हमने जलेबी चबा डाली।" विजय उसी प्रकार बोला—"हमने तो कभी अपने बाप को बाप नहीं समझा—फिर भला बाप का मामा क्या औकात रखता है?"

—"अगर तुम निर्भय के लड़के न होते तो फाड़कर डाल देता।" जब्बरसिंह क्रोध से गुर्रा उठा।

—"अजी जाओ भी मियां, क्यों काला झूठ बोल रहे हो?" विजय लापरवाही के साथ बुरा-सा मुंह बनाकर बोला—"ये

कहो कि अगर हमारे हाथ में तमन्चा न होता तो तुम हमारा आलूबुखारा बना देते।"

इससे पूर्व कि कोई कुछ बोलता— दरवाजे से आवाज आई—

—"इसे बन्दी बना लो बेटे !" अभयसिंह प्रविष्ट होते हुए बोले थे—"प्रतिशोध की आग ने इसके सोचने-समझने की बुद्धि छीन ली है। अपने ही हाथों से अपने देश को भट्ठी में झोंक रहा है।"

—"आप !" विजय बोला—"जब मैंने अलादीन का चिराग नहीं घिसा तो आप कहां से पैदा हो गए ? मेरा मतलब है कि आप तो दुम दबाकर भाग गए थे, फिर आप कहां से आ गए ?"

—"मैं कहीं नहीं भागा था बेटे, यहीं था। अभयसिंह बोले—"केवल इसलिए छिप गया था कि मैं उस विदेशी दरिन्दे के हाथ न लग जाऊं—वह मुझसे रहस्य उगलवाना चाहता था।"

—"गुलफाम मियां !" विजयने कहा—"पहले जरा हमारे बाप के मामा को कैद कर लो—इन्हें कुछ गुस्सा ज्यादा ही आता है। कहीं हमारी ही लुटिया न डुबो दें।"

—"विजय !" जब्बर गुर्राया—"तुम भी दुश्मनों से मिल गए हो ?"

—"हम जानते हैं प्यारे बाप के मामा कि दुश्मन कौन है और दोस्त कौन है।" विजय अपनी ही टोन में बोला —"अपने आपको चुपचाप बंधवा लो वरना कसम अपने बापू की, तुम्हारी खोपड़ी में हवा के आगमन हेतु रोशनदान बना दूंगा। चलो गुलफाम प्यारे, बांध दो।" विजय ने गुलफाम का आदेश दिया।

कुछ देर बाद—

गुलफाम ने तीन टाइयों से उसे कसकर बांध दिया था। अभयसिंह प्रयोगशाला के स्थान पर रखा क्लोरोफार्म उठा लाए और जब्बरसिंह को सुंघाकर बेहोश कर दिया।

—"अब जल्दी से चला जाए।" गुलफाम बोला—"संभव है, बांड कुछ सैनिकों के साथ फिर आ जाए।"

—"घबराओ मत नौजवान !" अभयसिंह बोले—"जिन रास्तों से मैं तुम्हें निकालकर ले जाऊंगा, उनमें तो ये विदेशी कुत्ते सपने में भी नहीं पहुंच सकते।"

विजय और गुलफाम अभयसिंह का चेहरा देखते रह गए।

▭ ▭

▭ ▭

भयंकर विनाश और प्रलय के बाद विकास को कुछ पता नहीं रहा कि वह कहां है ?

किस हाल में है ?

सागर में इतना तेज तूफान आया कि लहरें तीस-तीस फीट ऊंची उछलने लगीं। पानी की इन भंयकर दीवारों के आगे विकास की एक न चली और लहरें उसे सागर में एक स्थान से दूसरे स्थान पर फेंकती रहीं।

यहां तक कि वह बेहोश हो गया।

उसके बाद क्या हुआ, विकास को कुछ नहीं पता। उसे पता नहीं कि वह कितनी देर तक अचेतावस्था में रहा, परन्तु जब उसे होश आया तो खुद को उसने सागर के एक किनारे पर पड़ा पाया। कराहकर उसने आंखें खोलीं तो उसके ऊपर इतना तीव्रप्रकाश पड़ रहा था किआंखें पुनः बंद कर लेनी पड़ीं।

धीरे-धीरे जब उसने आंखें खोलीं तो उसने पाया कि सूर्य उसके सिर पर चमक रहा था। वह धूप में पड़ा था। सागर के किनारे का रेत चमक रहा था। सागर पूरी तरह शांत था।

उसने अनुमान लगाया—लहरों ने उसे किनारे पर ला पटका है।

रेत पर खड़ा होने का प्रयास करते ही उसके जिस्म का जोड़-जोड़ दुखने लगा। परन्तु इस पीड़ा की चिन्ता न करके वह खड़ा हो गया। उसने देखा सागर दूर-दूर तक शांत और रिक्त था। उसके बेहोश होने से पूर्व जो भीषण विनाश हुआ था, उसका कोई भी चिह्न वहां नहीं था।

उसने अपने चारों ओर देखा—यह सागर का ऐसा किनारा था जिसे वह पहचान नहीं सका। उसके पीछे घना जंगल था। इसका मतलब यह था कि लहरों ने उसे उस स्थान से काफी दूर ला पटका था जहां वह भीषण कांड हुआ था। सर्वप्रथम उसने हल्की-सी वर्जिश करके अपने हाथ-पैर खोले।

धूप में उसके कपड़े किसी हद तक सूख चुके थे। उसके एक तरफ सागर था और दूसरी ओर घनघोर जंगल परन्तु इस समय उसे आगे बढ़ने के लिए यह जंगल ही उचित लगा।

वह जंगल में घुस गया। वह जानता था कि जंगल खतरनाक है। कहीं भी किसी जंगली जानवर से टकराव हो सकता है। उसका मुकाबला करने के लिए विकास ने किसी शस्त्र की तलाश में अपनी जेबें देखीं—एक जेब में रिवॉल्वर था जो पानी में भीगकर बुरी तरह बीमार हो चुका था।

उस समय हथियार के नाम पर काम करने वाला उसके पास मात्र एक चाकू था और ,लड़का उस चाकू के बूते पर ही उस खतरनाक जगल में घुस गया।

उसे रास्ते का जरा भी ज्ञान नहीं था। वह बस सीधा ही जंगल में घुसता चला गया। जंगल इतना घनघोर था कि पेड़ों की बहुतायत के कारण धूप तक वहां नहीं आ रही थी।

पेड़ों की छांव में जंगल का वातावरण अजीब-सा भयानक लग रहा था। सारे जंगल में ऊंची-ऊंची पहाड़ियां थीं। वह लगभग तीन मिनट तक यूं ही बिना किसी उद्देश्य के जंगल में बढ़ता रहा।

गनीमत यह थी कि अभी तक उसका सामना किसी जंगली जानवर से नहीं हुआ था। परन्तु वह प्रत्येक पल किसी भी खतरे का सामना करने को तैयार था। उसने देखा—इस समय वह जिस रास्ते पर बढ़ रहा था, उसी पर आगे जाकर उसे पेड़ों की एक गुफा-सी नजर आई। उस स्थान पर दोनों ओर के पेड़ काफी समीप और नीचे थे। उनकी शाखाएं आपस में मिल गई थीं—जिनके कारण वह स्थान पेड़ों से घिरी गुफा के समान लग रहा था।

अचानक—

विकास एकदम ठिठक गया।

जंगल के एक मोड़ पर से एक इन्सान मुड़कर गुफा की ओर बढ़ रहा था। उस इन्सान ने विकास को नहीं देखा था। उस इन्सान पर नजर पड़ते ही विकास का जिस्म बुरी तरह तन गया। खुद-ब-खुद ही उसका चेहरा धधक उठा। आंखें जल उठीं; एक ही स्थान पर जहां-का-तहां विकास जड़वत्-सा खड़ा रह गया।

जंगल में सूखे पत्तों की चरमराहट गूंज रही थी।

विकास से रहा नहीं गया। वह अपनी शक्ति से चीखा—

—"माइक···ऽऽऽ···!" विकास अपनी सम्पूर्ण शक्ति से

चीखा था। उसकी आवाज जंगल की चारों दिशाओं से टकराकर जंगल में ही गूंजने लगी। बिजली की-सी गति से वह एकदम पलटा। वह माइक ही था। माइक ने देखा—उसके पीछे काफी दूर विकास खड़ा है।

विकास को देखते ही माइक के जिस्म में भयंकर तनाव आ गया। उसके रोंगटे खड़े हो गए।

इधर विकास की खूनी दृष्टि माइक पर टिकी हुई थी। लड़के की आंखों के सामने दृश्य तैर रहे थे—मंगल ग्रह पर घटा दृश्य। इसी माइक ने उसे मारने के लिए गोली चलाई थी—और ···और···वो मासूम लड़की···भोली-भाली गुड़िया जैसी पूजा ने उसे बचाने के लिए गोली अपनी छाती पर खाई थी।

पल भर में विकास की आंखों के सामने दृश्य घूम गए।

माइक का गोली चलाना···पूजा का चीखकर उसके सामने आना···गोली पूजा को लगना···पूजा का मार्मिक अन्त·· विकास ने एक कसम ली थी। अपनी पूजा की लाश से लिपटकर एक कसम ली थी— वह उस गुड़िया की मौत का बदला लेगा।

और अब···अब अवसर उसके सामने था।

माइक—पूजा का हत्यारा।

दोनों एक-दूसरे से काफी दूर खड़े थे। परन्तु दोनों के जिस्मों में भयंकर तनाव था। दोनों जांबाज प्रतिद्वन्द्वी एक-दूसरे को घूर रहे थे। एकाएक विकास ने माइक की ओर कदम बढ़ाए —लड़के का दिमाग इस समय ठिकाने पर नहीं था। उसके मस्तिष्क में एक भयानक शोर उठ रहा था—दिमाग में पूजा के अन्तिम शब्द गूंज रहे थे···उसकी कसम गूंज रही थी।

—'बदला···बदला···मेरे हत्यारे से बदला लो विकास!' पूजा की आत्मा जैसे उसके कान के समीप फुसफुसा उठी। विकास

का दिमाग जब ठिकाने पर नहीं रहता तो वह लड़का नहीं रहता —पागल जल्लाद बन जाता है। खूंखार दरिन्दा बन जाता है।

उस समय तो उसके सामने खून, गोश्त और चीखता हुआ दुश्मन रहता है।

भोला और मासूम-सा लड़का दुर्दान्त और बेरहम बन जाता है।

यह सब माइक भी भली भांति जानता था। माइक ने यह अनुमान भी लगा लिया था कि विकास आज पूजा की हत्या का बदला लेगा। यह सोचकर एक बार को माइक के जिस्म में झुर-झुरी-सी दौड़ गई थी। परन्तु जल्दी ही उसने खुदो क संभाला। असलियत तो यह थी कि विकास का सामना होते ही न जाने क्यों माइक का दिल कांप जाता था। न जाने क्यों एक भय-सा उसके जेहन पर हावी हो जाता था। परन्तु इस कमजोरी को वह प्रदर्शित नहीं करना चाहता था। सोचता, यह कल का लड़का भला उसका क्या बिगाड़ेगा। बस यही सोचकर वह अपने भय को छुपा जाता था।

अब भी उसने ऐसा ही किया। धीरे-धीरे उसने अपने कदम विकास की ओर बढ़ा दिए। वह जानता था कि विकास से अब टकराव होगा और इस टकराव के लिए वह पूरी तरह से तैयार था।

दोनों जांबाज एक-दूसरे की तरफ बढ़ रहे थे।

तब जबकि दोनों एक-दूसरे से ठीक पांच कदम की दूरी पर रह गए।

दोनों ठिठक गए।

एक-दूसरे की आंखों में झांका। विकास की आंखों मे खून उतर आया माइक का कलेजा दहल रहा था। विकास की

उंगलियों के बीच इस समय उसका आलपिन नृत्य कर रहा था।

—"आज तुम मेरे पंजे में फंसे हो माइक!" विकास गुर्राया, "पूजा के अन्त का बदला मैं तुमसे अवश्य लूंगा। सुना है माइक, कि तुम अमेरिका के सबसे बड़े जासूस हो। लेकिन लगता है, गलत सुना है मैंने। तुम तो नामर्द हो। मगर मैं तुम्हें इस तरह नहीं मारूंगा माइक! मैं तुम्हें जिन्दगी में ही मौत दूंगा।" गुर्राते हुए भी विकास के स्वर में संयम था।

—"तुमने यह कैसे समझ लिया कि तुम माइक को परास्त कर ही दोगे?" अपेक्षाकृत माइक मुस्कराता हुआ बोला।

—"ये शब्द कहते हुए तुम्हारी जुबान लड़खड़ा रही है कुत्ते—!" विकास गुर्राया—"अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा कर।" कहने के साथ ही विकास का आलपिन वाला हाथ बिजली की-सी गति से घूमा।

एक पल के लिए आलपिन हवा में सन्नाया—

और केवल हवा में सन्नाकर ही रह गया। माइक न केवल बेहद फुर्ती का परिचय देकर अपना स्थान छोड़ चुका था, बल्कि उसका एक जबरदस्त घूंसा विकास के जबड़े से टकराया।

उछलकर विकास दूर जा गिरा। माइक ने उस पर जम्प लगाई लेकिन—

लड़का आखिर विजय और अलफांसे जैसे पुरुषों का शिष्य था। माइक जंगल में बिछे सूखे पत्तों पर गिरा।

बड़ी फुर्ती के साथ वह खड़ा हुआ लेकिन—

बड़ी जोर से विकास की ठोकर उसके चेहरे पर पड़ी। एक चीख के साथ माइक दूसरी ओर उलट गया। उसके चेहरे से खून बहने लगा था। तभी विकास के हाथ में पत्तों पर पड़ी एक वृक्ष की हरी और पतली-सी सण्टी आ गई। सण्टी पर हरे-हरे

पत्ते लगे थे।

उधर माइक उछलकर खड़ा हो चुका था। दोनों की आंखें लाल हो गई थीं। विकास की दृष्टि उसी पर जमी हुई थी। अपने दूसरे हाथ से वह सण्टी पर लगे पत्ते तोड़-तोड़कर फेंक रहा था।

—"मासूम लड़कियों की जान लेना बहुत आसान है बेटे ! मर्द से टक्कर लो तो पता लगे।" विकास गुर्राया।

कुछ कहने के स्थान पर माइक ने गजब की फुर्ती के साथ उस पर जम्प लगाई।

सड़ाक !

सण्टी दनाक से माइक के चेहरे पर पड़ी। ताजी वह गांठ-दार सण्टी थी—मार बड़ी तगड़ी थी।

चीख पड़ा माइक।

चेहरे पर सण्टी की मार का निशान उभर आया।

अपने दोनों हाथों से माइक ने अपना चेहरा ढंक लिया लेकिन—

सड़ाक-सड़ाक…!

जैसे पागल हो गया विकास। सण्टी से उसके जिस्म को उधेड़ता ही चला गया। माइक को कुछ भी करने का अवसर नहीं मिला। विकास को लग रहा था—जैसे पूजा उसके कान में फुसफुसा रही है—

—'मारो, मारो ! मेरे विकास, इसे और मारो ! इससे बदला लो।'

और विकास मारता ही चला गया। माइक की चीखों से जंगल गूंज रहा था। उसके जिस्म पर सण्टी के निशान उभर आए थे किन्तु विकास मारता ही जा रहा था। सण्टी के सारे पत्ते

झड़ चुके थे।

अचानक…!

एक बार माइक ने सण्टी पकड़ ली। माइक का सारा चेहरा खून से लथपथ हो चुका था। माइक इस हद तक पिटा था कि उस पर खून सवार हो गया। अब वह मारने पर उतारू था। उसने कसकर सण्टी पकड़ी और एक तेज झटका दिया।

लेकिन—विकास भला ऐसा पूत कहां था ?

सण्टी उसके हाथ से नहीं छूटी। दोनों के हाथ में सण्टी का एक सिरा था। दोनों उसे अपनी ओर खींचने की शक्ति लगा रहे थे। उसी प्रकार शक्ति लगाता हुआ माइक चीखा—

—"अब मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा विकास ! माइक के हाथों अब नहीं बचोगे।" क्रोध में पागल होकर वह भयंकर लहजे में चीखा था। पिटते-पिटते वह अपने होशोहवास खो बैठा था।

—"पिटने के बाद ऐसा ही क्रोध आता है माइक बेटे !" विकास गुर्राया।

अभी माइक जवाब में कुछ कहना ही चाहता था कि सण्टी बीच में से टूट गई।

दोनों विपरीत दिशाओं में दूर जा गिरे।

किसी के हाथ में भी सण्टी का इतना बड़ा टुकड़ा नहीं था जिससे कुछ लाभ उठाया जा सकता। दोनों फुर्ती के साथ उछलकर खड़े हो गए। गिरते समय ही माइक ने बड़ी तेजी से अपनी जेब से चाकू निकाल लिया था—

'किर्र…र…र्र…र्र…!'

जंगल के सन्नाटे में गरारीदार चाकू की आवाज गूंजी। खुला हुआ लम्बा चमकदार चाकू माइक के हाथ में चमक उठा। चाकू देखते ही विकास के मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा।

माइक का दिमाग भिन्नाया हुआ था। खून से लिथड़ा चेहरा बड़ा भयानक लग रहा था। अगले ही पल विकास अपने गुलाबी अधरों पर हल्की-सी मुस्कान बिखेरता हुआ बोला—

—"सिद्ध कर दिया न कि हो नामर्द ही।"

परन्तु—माइक ने इस बात पर ध्यान न देकर तेजी से विकास पर जम्प लगा दी। विकास उससे भी अधिक फुर्ती का प्रदर्शन करके अपने स्थान से हट गया। झोंक में वह थोड़ा-सा लड़खड़ाया···तभी···

'क्लिक!'

उसके पीछे से हल्की-सी आवाज उभरी। एक झटके के साथ वह पलटा। सामने विकास खड़ा था—हाथ में एक चाकू लिए हुए। चाकू को बड़े अन्दाज के साथ घुमाते बोला—

—"जोड़ बराबर की होनी चाहिए माइक बेटे!" चाकू संभालकर वह बोला—"मजा तभी आता है।"

और फिर···

बिजली की-सी गति से एकसाथ दोनों एक-दूसरे पर झपटे।

चाकू वाली कलाइयां जिस्मों में घुसने के लिए तड़पी लेकिन दोनों की कलाइयां दोनों के दूसरे पंजे में फंस गईं। अब दोनों अपनी-अपनी चाकू वाली कलाइयां छुड़ाने के लिए जोर लगा रहे थे। दोनों के चेहरे इस समय आसपास थे। यह दूसरी बात है कि विकास माइक से लम्बा था। एकाएक माइक ने उछलकर अपने सिर की टक्कर विकास की नाक पर मारी।

टक्कर एकदम फिट बैठी और विकास का चेहरा उसी के खून से लथपथ हो गया। विकास चीखता हुआ पीछे जा गिरा। उसी पल माइक ने बाज की भांति झपटकर चाकू का वार उस पर किया। विकास ने बेहद फुर्ती के साथ करवट लेकर वह

स्थान खाली किया—माइक का चाकू जंगल की धरती से टकराया। विकास ने तेजी के साथ वापस करवट लेकर उस पर चाकू का वार किया। माइक ने उसकी चाकू वाली कलाई को अपने हाथ पर रोका।

परन्तु तभी—विकास के दूसरे हाथ का घूंसा माइक के चेहरे से टकराया। मगर इसी समय—माइक का चाकू विकास के पेट में धंस गया। गर्म और गाढ़े खून का तेज फव्वारा सीधा माइक के चेहरे पर पड़ा।

माइक बौखला गया और इस बौखलाहट का लाभ उठाया विकास ने। उसका चाकू बिजली की भांति एक बार वायु में लहराया और दनाक से माइक के एक बाजू में घुस गया।

माइक के कंठ से एक चीख निकली—किन्तु परास्त होना वह भी नहीं चाहता था।

उसकी लात बड़ी जोर से विकास की छाती में लगी। विकास उछलकर दूर जा गिरा। परन्तु अगले ही पल वह खड़ा हो गया, उधर माइक भी उसी फुर्ती के साथ खड़ा हो चुका था। दोनों के जिस्म खून से लथपथ हो चुके थे। दोनों के हाथ में खून से रंगे चाकू चमचमा रहे थे। एक-दूसरे के खून के प्यासे थे ये प्रतिद्वन्द्वी।

अचानक—एक बार फिर विद्युतगति से विकास का चाकू वाला हाथ चला। इससे पूर्व कि माइक कुछ समझ पाता—विकास के हाथ से निकला चाकू हवा में सन्नाकर सीधा माइक की चाकू वाली कलाई में धंस गया।

माइक ने इसकी तो कल्पना भी नहीं की थी।

माइक की चीख निकल गई। साथ ही उसका चाकू हाथ से गिर गया। उसी पल गोरिल्ले की भांति जम्प लगाकर विकास

उसके ऊपर आ गिरा। इस झपट में विकास ने माइक की कलाई में धंसा चाकू खींचा और पुनः माइक की पीठ में घुसेड़ दिया। माइक के कंठ से फिर चीख निकली।

लेकिन विकास तो कसाई था।

पीठ में घुसाकर वह शैतान चाकू को खींचता ही चला गया। माइक की मार्मिक चीख ने जंगल को दहलाकर रख दिया। इससे पूर्व कि विकास और कोई करामात दिखा पाए—एक झटके के साथ माइक उछलकर दूर जा गिरा। चाकू विकास के हाथ में था। अब वह माइक को बचाव का अवसर देना नहीं चाहता था। वह तेजी से चाकू संभालकर माइक पर झपटा।

किन्तु माइक भी कच्चा खिलाड़ी नहीं था।

वह भी लड़ने का तरीका अच्छी तरह जानता था। पूरी तरह से घायल होने के बावजूद भी माइक ने दो-तीन करवटें लेकर अपना स्थान छोड़ दिया। विकास खाली धरती पर गिरा, उछलकर खड़े होने में उसने भयानक फुर्ती दिखाई मगर माइक के बूट की ठोकर जो उसके चेहरे पर पड़ी थी, उसे उछालकर दूर फेंक दिया।

और फिर—माइक ने विकास पर जम्प लगाने के स्थान पर उसके विपरीत दिशा में जम्प लगाई। यह जम्प उसने वृक्षों के बीच बनी गुफा में लगाई थी। वह तेजी के साथ भागता हुआ गुफा के अंधेरे में गायब होता ही जा रहा था।

विकास ने खड़ा होते ही उसे भागते देखा।

लड़के का खून खौल उठा।

—"भागता कहां है बुजदिल ?" चीखते हुए विकास ने भागते हुए माइक पर चाकू ही खींच मारा। निशाना एकदम सही था, चाकू माइक की दायीं जांघ में नितम्ब से थोड़ा नीचे

गड़ा। मगर कमाल यह था कि माइक एक पल के लिए भी नहीं लड़खड़ाया। भागते-भागते ही उसने अपनी जांघ से चाकू निकाल लिया।

मगर उसने पलटकर वार करने का कोई प्रयास नहीं किया। उसी प्रकार अंधेरे की ओर भागता गया। हालांकि विकास ने भी उसके पीछे जम्प लगाई थी किन्तु माइक तब तक गुफा के अंधेरे में जा मिला था।

विकास की नजरों से वह ओझल हो गया।

—"थू!" विकास ने घृणा से थूक दिया—"बुजदिल! कायर! नामर्द!" लड़का बुदबुदाया। एक बार को तो उसके दिमाग में आया कि वह माइक को भागने न दे, उसके पीछे भागकर वह उसे पकड़ ले, किन्तु तभी उसके दिमाग में आया —माइक अंधेरी गुफा में गायब हुआ है। वह माइक की स्थिति देख नहीं पाएगा। उसके पास चाकू है—इस स्थिति में माइक उसके लिए घातक हो सकता है।

इसी विचार ने उसे रोक दिया। वह माइक को भागने से न रोक सका था।

और—इसी को वह अपनी पराजय मान रहा था।

▭ ▭

▭ ▭

—"विजय हमारे साथ बहुत बड़ी चाल खेल गया। क्रीमिया!" जेम्स बांड क्रीमिया के सामने बैठा हुआ कह रहा था। बांड इस समय बुरी तरह झल्लाया हुआ था। न केवल झल्लाया हुआ था बल्कि वह निरन्तर मात खाने के कारण बौखला भी गया था, वरना बांड एक ऐसा इन्सान था जो भयानक से

भयानक खतरे में होते हुए भी अपनी इश्कबाजी को नहीं भूलता था। क्रीमिया को देखते ही वह बाज की भांति झपट पड़ता था। मगर इस समय वह इस मूड में नजर नहीं आ रहा था।

—"लेकिन हुआ क्या ?" क्रीमिया ने पूछा।

—"विजय का राणाप्रताप बनना एक जबर्दस्त चाल थी।" जेम्स बांड ने थके स्वर में कहा—"मुझसे थोड़ी-सी चूक हो गई और मैं धोखा खा गया। आज मैं अपने इस उद्देश्य तक पहुंच गया था जिसके लिए मैं यहां आया था, परन्तु ऐन वक्त पर वहां विजय पहुंच गया और मैं मात खा गया।"

—"इसका मतलब, विजय का राणाप्रताप बनना एक चाल थी ?" क्रीमिया आश्चर्य के साथ बोली।

—"यही तो मेरे लिए सबसे बड़ी मात का कारण बना।" बांड पश्चात्ताप के से लहजे में बोला।

—"इसका मतलब तो यह हुआ कि वह भूत-प्रेत विशेषज्ञ भी विजय से मिला हुआ है ?" क्रीमिया ने कहा।

—"अरे !" बांड जैसे एकदम चौंका—"भैरोप्रसाद ! निश्चित रूप से वह कुत्ता विजय से मिला हुआ था। मैं उसकी खाल उधेड़कर डाल दूंगा। आओ क्रीमिया ! वह हमारी कैद में है। अब मैं अपने किसी दुश्मन को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा—एक-एक को चीर-फाड़कर सुखा दूंगा।"

—"चलो।" क्रीमिया ने कहा।

बांड तो भैरोप्रसाद को सजा देने के लिए उतावला था ही, वह एकदम खड़ा हो लिया—किन्तु तभी जैसे उसे कुछ ध्यान आया, बोला—"अरे···मेरा दिमाग भी पागल हो गया है। जो सबसे महत्त्वपूर्ण और आवश्यक बात थी, वह तो अभी तक नहीं पूछी। सागर में हिन्दुस्तानी जलपोत था, उसका क्या हुआ ?"

—"हमारे सैनिकों का उससे भयानक युद्ध हुआ। दुःख की बात यह है कि सागर में हमारी जितनी भी पनडुब्बियां थीं, सभी नष्ट हो गईं। दो विमान भी नष्ट हो गए। लेकिन अन्त में खुद माइक ने उसके एक नेट और जलपोत को नष्ट कर दिया।"

—"माइक कहां है ?"

—"माइक का अभी तक कुछ पता नहीं लगा है।" क्रीमिया ने बताया—"अन्तिम समय में माइक ने ट्रांसमीटर पर यही सूचना भेजी थी कि उसके विमान में आग लग गई है और अब वह विमान हिन्दुस्तानी जलपोत से टकराने जा रहा है। उसके बाद एक भयंकर धमाके की आवाज ट्रांसमीटर पर उभरी थी। मेरे विचार में तो माइक···"

—"नहीं···नहीं···क्रीमिया !" बाण्ड क्रीमिया के अधूरे वाक्य का पूरा मतलब समझकर जल्दी से बोला—"माइक इस तरह नहीं मर सकता। वह एक समझदार जासूस है। इतना मूर्ख वह कभी नहीं हो सकता कि हिन्दुस्तानी जलपोत को खत्म करने के लिए वह अपनी आहुति दे दे। ऐसे काम समझदार जासूस के नहीं, बल्कि मूर्ख बहादुर के होते हैं क्रीमिया ! माइक मूर्ख बहादुर नहीं है।"

—"तुम्हारा विचार एकदम ठीक है बाण्ड !" आवाज उस कक्ष के दरवाजे से आई थी—"मैं मूर्ख बहादुर नहीं हूं।"

एक झटके के साथ बाण्ड और क्रीमिया ने दरवाजे पर देखा, वहां माइक खड़ा था—खून से लथपथ, ऊपर से नीचे तक सारा जिस्म खून से लथा पड़ा था। उसके चेहरे पर जगह-जगह घाव थे। चेहरे पर सण्टियों के निशान थे। सारे कपड़े चीथड़ों में बदल चुके थे। किन्तु इतना सब कुछ होने के बाद भी माइक के होंठों पर मुस्कान थी।

बाण्ड और क्रीमिया तो उसे देखते रह गए।

—"माइक !" बाण्ड एकदम उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला —"क्या हुआ तुम्हें ? क्या हुआ मेरे यार ?" बाण्ड उसकी ओर उसे पकड़ने के लिए बढ़ा था, लेकिन माइक ने उसे हाथ के इशारे से रोका और बोला—

—"इतनी दूर से जब यहां तक आ गया तो अब क्या रखा है ?" मुस्कराकर कहता हुआ वह अन्दर दाखिल हो गया। क्रीमिया की आंखों में उसके प्रति सहानुभूति के भाव थे। नारी अगर अपने किसी साथी पुरुष को इस अवस्था में देखे तो करुणा से उसका हृदय भर ही उठता है। वह चुप थी।

—"लेकिन यह हुआ क्या ?"

—"यह सब विकास का किया-धरा है।" माइक ने जैसे विस्फोट किया।

—"विकास !" बाण्ड के मुख से निकला।

—"वि···का···स···!" न चाहते हुए भी क्रीमिया के मुख से यह नाम लड़खड़ाकर निकल गया। वार्तालाप में विकास का नाम आते ही उसका चेहरा हल्दी की भांति पीला पड़ गया था। उसके जिस्म का एक-एक हिस्सा कांपने लगा था। वह बुरी तरह भयभीत होकर दौड़ी और बाण्ड से लिपट गई।

—"अरे···!" बाण्ड उसे एकदम बांहों में समेटकर बोला —"क्या हुआ क्रीमिया ?"

—"बाण्ड !" क्रीमिया अपना भयभीत चेहरा ऊपर उठाती हुई बोली—"यह लड़का कितना बड़ा शैतान है—कितने निर्मम ढंग से मारता है ! सच बाण्ड, मैंने देखा है उसे। देखने में तो बड़ा मासूम और भोला लगता है—लेकिन कितना बड़ा जल्लाद है ! वह फूचिंग की हालत मैं नहीं भूल सकती और अब यह···"

माइक की ओर संकेत करके बोली—"और···और···बाण्ड, उसने मुझे उठाने के लिए भी तो कहा है···कहीं···कहीं···" कहती-कहती क्रीमिया भयभीत होकर बुरी तरह बाण्ड से लिपट गई।

—"क्रीमिया!" बाण्ड थोड़ा सख्त लहजे में बोला—"तुमसे पहले भी कहा था—विकास हव्वा नहीं है—मैं तुम्हें विश्वास दिला चुका हूं कि वह तुम तक नहीं पहुंच सकता।"

—"गलत!" अचानक सम्पूर्ण कक्ष में एक आवाज गूंजी—"एकदम गलत! तुम कुछ भी नहीं कर सकोगे जेम्स बाण्ड! विकास जब चाहे क्रीमिया को उठाकर ले जाएगा। कदाचित तुम यह सोच रहे हो कि मैं कौन हूं—तुम्हारी जानकारी के लिए तुम्हें बता दूं जेम्स बाण्ड, कि क्रांतिकारी लोग मुझे 'क्रान्ति का देवता' कहते हैं। विकास क्रीमिया को तो अपने हाथ से मारेगा ही, अब तुम्हारा भी अन्तिम समय आ गया है। गुलशनगढ़ की धरती पर अब तुम अधिक दिन तक नहीं ठहर सकोगे। गुलशनगढ़ का बच्चा-बच्चा मेरे साथ है। या तः तुम्हारे खून से इस देश की धरती लाल कर दी जाएगी या तुम्हें खदेड़कर यहां से बाहर फेंक दिया जाएगा। सुना है बाण्ड कि तुम इंग्लैंड के ऐसे जासूस हो जिससे आज तक जो भी काम लिया, उसमें पराजित नहीं हुआ, मगर यह मेरा दावा है बाण्ड कि इस बार तुम्हारा यह रिकॉर्ड टूट जाएगा। साथ ही यह भी बता दूं कि सम्भवतः यह तुम्हारे जीवन का अन्तिम अभियान होगा। एक बात तुम सोच सकते हो। इस समय मैं इसी महल में हूं लेकिन तुम मुझे खोज नहीं सकते। अच्छा, अब विदा!"

बस, इसके बाद एकदम सन्नाटा छा गया।

बाण्ड और माइक पागल से इधर-उधर देख रहे थे। इस

कक्ष की छत चुम्बक जैसी थी, इसी कारण क्रांति का देवता की आवाज चारों ओर से गूंजती-सी प्रतीत हो रही थी। क्रीमिया भयभीत-सी वाण्ड के कंधे से लिपटी हुई थी। भयभीत-सी निगाहों से वह भी आवाज के मालिक को खोजने की चेष्टा कर रही थी मगर जब आवाज की सही दिशा का ज्ञान बाण्ड और माइक जैसे दिग्गज जासूस नहीं लगा सके तो बेचारी क्रीमिया की क्या औकात थी ?

क्रीमिया के चेहरे पर घबराहट के भाव और भी अधिक बढ़ गए थे। उसने पहले से भी अधिक कसकर बाण्ड के कंधे को पकड़ लिया था।

बाण्ड ने उसके सिर पर सान्त्वना-भरा हाथ फेरा। फिर उस भोली-भाली मासूम-सी क्रीमिया के कपोलों को अपनी हथेली के बीच ले लिया और ऊपर उठाया। चरित्र क्रीमिया का चाहे जैसा रहा हो लेकिन रूप में वह अनुपम सुन्दरी थी। उसकी सुन्दरता का अनुमान तो इसी सरलता के साथ लगाया जा सकता है कि वह रैना की हमशक्ल थी। लेकिन इस समय क्रीमिया के चन्द्रमा-से मुखड़े पर भय की परछाइयां नृत्य कर रही थीं। गुलाब की पंखुड़ियों जैसे उसके गुलाबी होंठ थरथरा रहे थे। बाण्ड ने अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिए।

भावावेश में क्रीमिया ने बाण्ड को अपनी बांहों में समेटकर अपने से लिपटा लिया।

बाण्ड ने क्रीमिया के कठोर उरोज अपने सीने में चुभते अनुभव किए तो रोमांचित-सा हो उठा। उसका एक हाथ माइक की उपस्थिति की परवाह न करता हुआ गले से रेंगकर क्रीमिया के वक्ष तक आ गया। एक पल बाद ही वह अपनी हथेली से क्रीमिया के वक्ष को बुरी तरह मसल रहा था।

दीवानी-सी क्रीमिया बाण्ड के चेहरे को जगह-जगह से चूम रही थी।

जब माइक से रहा न गया तो उसने जोर से खांसकर उन दोनों को अपनी उपस्थिति का आभास कराया। एक-दूसरे के शरीर पर रेंगते हुए दोनों के हाथ एकदम ठिठक गए।

अगले ही पल वे अलग हो गए।

—"सॉरी माइक !" बाण्ड बोला।

क्रीमिया बाण्ड के समीप खड़ी बेहया-सी मुस्करा रही थी, बाण्ड के साथ गुजरे एक ही कामुक क्षण ने जैसे उसके दिल से विकास का भय एकदम निकाल दिया था। माइक ने क्रीमिया की ओर देखकर कहा—

—"विकास के भय को कम करने का यह बड़ा ही अच्छा तरीका है।"

सुनकर बाण्ड उन्मुक्त ढंग से हंस पड़ा। मुस्कराई क्रीमिया भी थी लेकिन उसकी हंसी कुछ धीमी-सी थी। कदाचित इसलिए क्योंकि उनके वार्तालाप के बीच पुनः विकास का नाम आ गया था।

—"जेम्स ! क्रीमिया हल्के-से स्वर में बोली।

—"हूं ?" बाण्ड ने उसकी ओर देखा।

—"तुमने मुझसे वायदा किया था कि तुम हमेशा मुझे अपने साथ रखकर विकास से सुरक्षित रखोगे लेकिन तुमने मुझे अकेला छोड़ दिया। अब मैं अकेली नहीं रहना चाहती, मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगी।"

—"तुम्हारे मुंह से अब भी विकास का भय बोल रहा है!" बाण्ड बोला।

—"चाहे जो समझो बाण्ड, मगर मैं अकेली नहीं रह

सकती।"

—"लेकिन मुझे बहुत काम हैं।" बाण्ड बोला—"तुम्हें कहां-कहां साथ रखूंगा?"

—"यकीन करो बाण्ड, मैं तुम्हारे किसी भी काम में बाधा नहीं बनूंगी, बल्कि जैसा भी कुछ बन पड़ेगा, मैं तुम्हारी सहायता ही करूंगी। मैंने अभी सुना है बाण्ड, क्रान्ति का देवता इसी महल में है। मैं अकेली नहीं रह सकती।"

—"अच्छा बाबा, तुम मेरे साथ रहना।" हारकर बाण्ड ने कहा।

—"अब जरा मुझे माइक से बातें करने दो।"

क्रीमिया चुप हो गई। बाण्ड ने माइक से कहा—"विकास तुम्हें कहां से टकरा गया?"

—"अपने जलते हुए विमान का रुख मैं हिन्दुस्तानी जल-पोत की ओर करके सागर में कूद पड़ा, लेकिन लहरें इस तेजी से उछली कि मैं बेहोश हो गया।" माइक ने बताया—"जब मुझे होश आया तो खुद को सागर के किनारे पर पाया। मैं शहर तक के रास्ते की खोज में जंगल में भटक रहा था कि सामना विकास से हो गया।" माइक ने संक्षिप्त में बाण्ड को अपने और विकास के टकराव के विषय में बता दिया और फिर बोला—"उसके बाद जंगल में भटकते-भटकते बड़ी कठिनाई से मुझे शहर का रास्ता मिला और यहां पहुंच गया।"

बाण्ड और क्रीमिया शान्ति के साथ सुनते रहे।

उसके पश्चात् जेम्स बाण्ड ने भी अपने साथ घटित घटना संक्षेप में माइक को बताई और अभी जेम्स बाण्ड अपनी घटना के अन्तिम शब्द कह ही रहा था कि एक चीनी सैनिक अधिकारी ने उस कमरे में प्रवेश किया—माइक और जेम्स बाण्ड ने प्रश्न-

वाचक निगाहों से उसकी ओर देखा।

—"सर !" वह खुद को संभालता हुआ बोला—"ग्रीफित साहब का जिस्म उसी पेड़ पर लटका हुआ है, जहां कामरेड फूचिंग का जिस्म लटका पाया गया था।"

—"क्या ?" एकदम तीनों के मुख से निकला।

क्रीमिया तो खैर यह सूचना सुनकर बुरी तरह कांप ही गई, खुद माइक और बाण्ड के जिस्मों में झुरझुरी-सी दौड़ गई परन्तु जल्दी ही उन्होंने खुद को संभाल लिया। जेम्स बाण्ड ने कहा—"पेड़ से उतारकर उसे अन्दर लाओ।"

आदेश प्राप्त होते ही सैनिक जिस तरह आया था, उसी तरह वापस लौट गया। सैनिक अधिकारी चला गया किन्तु उन्हें यह सूचना देकर वह कक्ष में गहन सन्नाटा फैला गया। रह-रहकर तीनों की नजरें मिल रही थीं किन्तु कोई कुछ नहीं बोल रहा था। कोई बोलता भी क्या ? वे लगातार मात खा रहे थे।

तब जबकि ग्रीफित के बेहोश जिस्म को चार सैनिक उठाकर लाए। उन्होंने ग्रीफित को देखा—और खोपड़ियां हवा में चकराने लगी। ग्रीफित का हुलिया बड़ा विचित्र बना दिया गया था। उसके सिर के सम्पूर्ण बाल किसी ने उस्तरे से मूंड दिए थे। गाढ़ी स्याही से मुंह काला कर दिया गया था और···ग्रीफित के दायें हाथ की उंगलियां गायब थीं। दुश्मन ने वे उंगलियां किसी तेज हथियार से काट डाली थीं। ग्रीफित की यह दशा देखकर तीनों के रोंगटे खड़े हो गए। सैनिक माइक का आदेश पाकर कक्ष से बाहर जा चुके थे। वहां मौत जैसा सन्नाटा था। माइक ग्रीफित के जिस्म के करीब बैठा और उसके कपड़ों की तलाशी लेने लगा।

कोट की जेब में ग्रीफित के बाल मौजूद थे। उन्हीं बालों के

बीच में उलझा हुआ एक कागज माइक ने बाहर निकाला। कागज को खोला गया, माइक ने उसे उंची आवाज में पढ़ा—

—'विदेशी कुत्ते !

देखा, अपने-आपको कुत्ता कह दिया न ! अभी तो तुम अपने-आपको सुअर भी कहोगे। अपने सामने पड़े हुए श्रीफित को तुम देख सकते हो। यह तुम्हारे साथी की दावत की गई है। वह दावत फूचिंग की थी। तुम देख रहे हो कि इसकी हालत फूचिंग से बेहतर है। इसका एकमात्र कारण यह है कि विकास के हाथ नहीं लग सका। अगर विकास के हाथ लग जाता तो बात ही कुछ और होती। खैर, जैसी भी टूटी-फूटी खातिर हो सकी है, हम आपकी कर रहे हैं। साथ ही हम यह भी वादा करते हैं कि हम निस्वार्थ आपकी इस तरह खातिर करते रहेंगे। इस बार नम्बर क्रीमिया का है। सुना है कि फूचिंग के नाक-कान क्रीमिया के पल्ले में पाए गए थे। हम यहां यह कहेंगे, विकास थोड़ा चूक गया है। बेचारी क्रीमिया क्या है, अगर नाक-कान रखने ही थे तो जेम्स बाण्ड की जेब में रखता। खैर, कोई बात नहीं। जो काम विकास ने नहीं किया, वह काम हम कर देते हैं। जेम्स बांड महोदय, जरा अपने कोट की जेब टटोलकर देखो। अच्छा अब विदा !

देश को आजाद कराने का इच्छुक

—क्रांति का देवता'

अन्तिम शब्दों के साथ तीनों ही चौंक पड़े। बांड ने तेजी से अपनी जेब में हाथ दिया और जब वापस लाया तो उसके हाथ में श्रीफित की कटी हुई दो उंगलियां थीं।

बांड और माइक जैसे व्यक्ति का कलेजा दहल गया। क्रीमिया की घबराहट और बौखलाहट को तो शब्दों में व्यक्त

ही नहीं किया जा सकता।

बांड की खोपड़ी तो जैसे हवा में चकरा रही थी।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या बला है ? क्रान्ति का देवता क्या चीज है ? उसने खुद पर संयम पाया और साइक से बोला—"तुम डॉक्टर से अपनी पट्टी करवाकर ग्रीफित की भी पट्टी करवाओ और इसे होश में लाओ। इसका हुलिया भी ठीक करो।"

इस कदर घायल होने के बावजूद भी साइक ने ग्रीफित को कन्धे पर डाला और कक्ष से बाहर निकल गया। बांड ने घूमकर कीमिया की ओर देखा—अभी तक उसके चेहरे पर हल्के से भय की परछाइँ थी। बांड उसकी ओर देखकर मुस्कराया और एक चुम्बन उसके होंठों पर अंकित करता हुआ बोला—"तुम डर रही हो ?"

—"डरने की तो बात ही है बाण्ड !" कीमिया उसी प्रकार बोली—"इस बार तो इस कमीने क्रान्ति के देवता ने ग्रीफित की उंगलियां तुम्हारी ही जेब में पहुंचा दीं। समझ में नहीं आता कि यह आदमी है या भूत ! यह भी समझ में नहीं आता कि मेरी साड़ी के पल्ले में फूचिंग के नाक-कान कहां से आए और अब तुम्हारी जेब में···"

—"यह कोई खास बात नहीं कीमिया !" बांड ने कहा—"मेरे कोट की जेब में किसी ने उस समय डाले होंगे जब यह मैंने पहन नहीं रखा होगा।"

—"लेकिन इसका मतलब यह है कि इनकी पहुंच महल तक भी है ?"

—"तुमने शायद कुछ देर पूर्व गूंजने वाली क्रांति के देवता की आवाज नहीं सुनी ?" जेम्स बांड मुस्कराया, फिर बोला—

"उसने साफ कहा था कि वह इस महल में उपस्थित है।"

—"मेरे विचार से सबसे पहले उसे ही खोजना चाहिए बांड !" क्रीमिया ने कहा—"कहीं वह मुझे..."

बस—इससे आगे क्रीमिया कुछ न कह सकी। शब्द कांपकर रह गए।

—"अब तुम मेरे साथ हो, ऐसा नहीं होगा।" बांड ने कहा —"यह तो ठीक है क्रीमिया कि सबसे पहले हमें क्रांति के देवता की खोज करनी चाहिए, लेकिन उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण काम वह है जिसकी वजह से मैं यहां आया हूं।

—"मुझे लगता है कि क्रान्ति का देवता नामक यह व्यक्ति मुझे मेरे वास्तविक लक्ष्य से भटकाना चाहता है। मेरा वास्तविक लक्ष्य कुछ और है और यह क्रांति का देवता ऐसी-ऐसी अजीब हरकतें करके मुझे इनमें उलझाना चाहता है। शायद वह सोच रहा है कि मैं इस बात में उलझ जाऊं कि मेरी जेब में ग्रीफित की उंगलियां कहां से आईं ? उसकी चाल यह है कि मैं अपना वास्तविक लक्ष्य भूलकर क्रान्ति के देवता की खोज में लग जाऊं। तुम्हें उठाने की धमकी भी केवल इसलिए दी गई है क्रीमिया कि मैं वास्तविक लक्ष्य से भटक जाऊं और वह अपना काम कर जाए —लेकिन मैं इतना मूर्ख नहीं हूं। मुझे याद है कि मैं यहां क्यों आया हूं। वह चीज मैं प्राप्त करके ही रहूंगा।"

—"लेकिन अभी तक हम यह भी पता नहीं लगा पाए कि गुलशनगढ़ के नीचे वह सोने का महल है कहां ?" क्रीमिया ने कहा।

—"असली चक्कर वह नहीं है क्रीमिया !" बांड ने कहा।

—"क्या मतलब ?" क्रीमिया चौंक पड़ी।

—"समझने की कोशिश करो क्रीमिया !" जेम्स बांड ने

रहस्यमय स्वर में कहा—"वास्तव में मैं यहां उस सोने के महल के चक्कर में नहीं आया हूं।"

—"लेकिन···।" कीमिया बुरी तरह उछलकर बोली—"तुमने तो मेरे सामने माइक और फूचिंग से यही कहा था ?"

—"कहा था कीमिया, उनकी हां-में-हां मिलाई थी।" जेम्स बांड ने कहा—"जब हम यहां आए तो हमें मालूम हुआ कि चीन और अमेरिका भी गुलशनगढ़ में दिलचस्पी ले रहे हैं। तब—मेरे सामने सबसे पहला प्रश्न यह उठा था कि ये लोग इसमें दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं? ये सब बातें तुम्हारे सामने की हैं, परन्तु इस समय इसलिए दोहरा रहा हूं ताकि तुम कुछ अच्छी तरह समझ सको। जब माइक और फूचिंग ने देखा कि मैं अर्थात् मेरा देश भी गुलशनगढ़ में दिलचस्पी ले रहा है तो वे समझे कि मैं यहां इसलिए आया हूं जिसके लिए वे आए थे। चीन और अमेरिका के बीच पहले ही यह बात खुल चुकी थी कि वे दोनों ही गुलशनगढ़ से नीचे छुपे सोने के महल में दिलचस्पी ले रहे हैं। अब इन दोनों देशों ने देखा कि दोनों का लक्ष्य एक ही है तो दोनों को एक-दूसरे से टकराने का भय हो गया और टकराव में किसी भी देश को अपना लाभ नजर नहीं आया। टकराव से बात खुल जाती और किसी के हाथ कुछ नहीं लगता—बस, इसी बात को सोचते हुए उन्होंने यह फैसला कर लिया कि गुलशनगढ़ पर दोनों देश मिलकर कब्जा करेंगे और जो प्राप्त होगा, उसका आधा-आधा भाग दोनों रख लेंगे, परन्तु बीच में टपक गए हम। चीन और अमेरिका के जासूस यानी माइक और फूचिंग ने सहज ही यह अनुमान लगा लिया कि मैं भी उसी सोने के महल के चक्कर में यहां आया हूं। परिस्थितियां पुनः वही थीं—यानी इस अभियान में तीसरा पार्टनर हमारा

देश बना—लेकिन वास्तविकता यह नहीं थी कीमिया, वास्तविकता कुछ और थी।"

—"क्या ?" कीमिया आश्चर्य के साथ बांड को देख रही थी।

—"वास्तविकता यह थी कि मैं यहां उस स्वर्ण-महल की नहीं, बल्कि कुछ ग्रन्थों की तलाश में आया था।" बांड ने बताया —"ये वेद से भी प्राचीन पांच ग्रन्थ हैं। मेरा मुख्य उद्देश्य उन ग्रन्थों तक पहुंचना है। चीन और अमेरिका को इन ग्रन्थों की भनक तक नहीं है। ये लोग केवल उस स्वर्ण-महल के चक्कर में हैं, जबकि मेरा उद्देश्य उन ग्रंथों को प्राप्त करना है। माना कि स्वर्ण-महल इनके बताए अनुसार बहुत कीमती है, लेकिन उन ग्रन्थों से अधिक कीमती नहीं है। अगर ये लोग उस महल का पता लगा भी लेते हैं तो उस महल का एक तिहाई हिस्सा हमारा खुद-ब-खुद होगा।"

—"तो फिर क्रांति का देवता क्या जाने कि तुम्हारा वास्तविक लक्ष्य क्या है ?"

—"मेरे ख्याल से क्रांति का देवता जो कोई भी है, इस इस्टेट का खानदानी होगा और अभयसिंह से क्योंकि मैं बार-बार ग्रन्थों के विषय में पूछता रहा हूं, इसलिए उसे मालूम होगा।"

—"ओह !" कीमिया ने कहा—"लेकिन आज से पहले तुमने मुझे भी कभी नहीं बताया कि तुम्हारा मुख्य उद्देश्य उन ग्रन्थों को प्राप्त करना है ?"

—"क्योंकि आज से पहले मैंने तुम्हें बताने की जरूरत महसूस ही नहीं की थी।"

—"तो फिर आज···।"

—"हां, आज मैं यह जरूरत महसूस कर रहा हूं।" बांड ने

कहा—"फिलहाल मैं यहां अकेला हूं···अधिक समझो तो ग्रीफित मेरे साथ है, लेकिन अभी तक मैंने ग्रीफित को माइकऔर फूचिंग के साथ रखा था—केवल इसलिए कि कहीं ये दोनों मिलकर स्वर्ण-महल का पता लगा लें, और हमें पता भी नहीं लग सके। अगर ऐसा होता तो यह भी हो सकता था कि ये दोनों स्वर्ण-महल की दौलत गुप्त रूप से बाहर निकाल देते और हमें कुछ भी पता न लग पाता।"

—"यानी तुम्हें आपस में ही एक-दूसरे पर विश्वास नहीं था ?" क्रीमिया बोली।

सुनकर मुस्कराया बांड, बोला—"तुम अभी जासूसी के पैंतरे नहीं जानतीं क्रीमिया ! एक देश का जासूस दूसरे देश के जासूस पर कभी विश्वास नहीं कर सकता। खैर, तुम इन जासूसी के पैंतरों को नहीं समझोगी। तुम केवल इतना बताओ कि क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो ?"

—"बांड !" जैसे दुःख से क्रीमिया एकदम कराह उठी—"तुम बार-बार मुझसे ऐसी बात पूछते हो कि मेरे दिल को चोट लगती है। क्या तुम्हें अब भी विश्वास नहीं कि क्रीमिया तुम्हारे लिए अपनी जान भी दे सकती है ?"

—"तो सुनो।"

और जेम्स बांड क्रीमिया को धीरे-धीरे कुछ समझाने लगा।

▭ ▭

▭ ▭

जेम्स बांड ने क्रीमिया को क्या समझाया ?

जंगल में माइक के साथ युद्ध में जख्मी होने के बाद विकास का क्या हुआ ?

स्वर्णमहल से विजय को जो पत्र मिला उसमें क्या लिखा था ?

विजय स्वर्णमहल से वापिस आते समय अपनी टॉर्च उसी मौत के कुएं में भूल आया था, जिसमें भयानक सर्प थे, उस टॉर्च ने बाद में क्या गुल खिलाया ?

क्या अभयसिंह स्वर्ण-लेख को पढ़ने में सफल हो सका ?

आखिर क्या रहस्य छुपा हुआ था उस स्वर्ण-लेख में जिसकी हिफाजत शासक वंश की पीढ़ी-दर-पीढ़ी करती आ रही थी ?

बाण्ड को सन्देह था कि भूत-प्रेत विद्या का जानकार भैरोप्रसाद विजय से मिला हुआ था। क्या सचमुच ही भैरोप्रसाद विजय से मिला हुआ था, या वह भी शातिरों के शातिर विजय दी ग्रेट की चाल का शिकार हो गया था ?

जेम्स बांड ने भैरोप्रसाद का क्या किया ?

जेम्स बांड जो कि चीन व अमेरिका के जासूस फूचिंग व माइक को डबल क्रास कर रहा था, क्या वह अपनी चाल में सफल हो सका ?

वह क्या रहस्य था, जिसकी वजह से विजय सीक्रेट सर्विस के जांबाजों के बजाय गुलफाम जैसे गुण्डे को अपने साथ लेकर गुलशनगढ़ आया था ?

ऐसे ही अनेक सवालों के साथ-साथ प्रत्येक पाठक के मस्तिष्क में शुरू से अन्त तक रहस्य बने दो महत्वपूर्ण सवाल—

इस क्रांति का अन्त क्या हुआ ?

और कौन था वह देशभक्त रहस्यमय जांबाज जिसका चेहरा किसी ने नहीं देखा था जिसे 'क्रांति का देवता' कहा जाता था ?

पृष्ठों की कमी के कारण ऐसे सभी प्रश्नों का जवाब यहां नहीं दिया जा सका है। ऐसे सभी प्रश्नों का उत्तर विस्तारपूर्वक जानने के लिए 'राज पॉकेट बुक्स' से प्रकाशित वेदप्रकाश शर्मा

का क्रांति सीरीज का महान एवं अन्तिम भाग 'क्रांति का देवता' पढ़ना न भूलें।

□ □

□ □

पारो के होंठों के मध्य से एक कराह निकली।

सुरंग में बने उस बड़े-से कमरे में उपस्थित सभी का ध्यान उस तरफ आकर्षित हो गया। सबसे पहले अपनी कुर्सी छोड़कर उठने वाले विजय के पिता ठाकुर निर्भयसिंह थे। वे लपककर पारो अर्थात् अपनी मां की ओर लपके। विजय ने अलफांसे की ओर देखा और आंख मारता हुआ बोला—

—"देखा लूमड़ मियां इसे कहते हैं मां और पुत्र का प्रेम!"

ये शब्द विजय ने इतने धीमे से कहे थे कि उसके बराबर में बैठे अलफांसे के अतिरिक्त कोई नहीं सुन सका। रैना रघुनाथ और ब्लैक ब्वॉय का ध्यान पारो और निर्भयसिंह की ओर था। धनुषटंकार अपने में ही मस्त होकर पौवा पी रहा था। अलफांसे विजय की बात पर केवल मुस्कराकर रह गया। उसके बाद वे दोनों भी उसी ओर आकर्षित हो गए। पारो धीरे-धीरे कांप रही थी। निर्भयसिंह घुटनों के बल उसके समीप बैठे और अपनी मां के गोरे किन्तु बूढ़े मस्तिष्क पर हाथ रखकर धीरे से बोले—

—"मां···मां···आंखें खोलो मां!"

और एकदम ही पुत्र की आवाज सुनते ही मां ने आंखें खोल दीं। कुछ पल वह ध्यान से फर्श पर पड़ी हुई अपने ऊपर झुके हुए व्यक्ति को देखती रही। फिर धीरे-धीरे पारो की बूढ़ी आंखों में एक चमक-सी उत्पन्न होने लगी।

—"निर्भय!" उसके होंठों से मर्दाना किन्तु मार्मिक स्वर

निकला—"मेरे बेटे !"

—"हां मां···यह मैं हूं—निर्भयसिंह।" ठाकुर साहब प्यार-भरे स्वर में बोले।

—"मेरे बेटे !" भावावेश में पारो के कंठ से निकला और वह पागलों की भांति अपने पुत्र के सीने से लिपट गई। ठाकुर साहब ने भी अपनी मां के वक्ष में अपना चेहरा छुपा लिया।

—"लूमड़ मियां !" विजय अलफांसे के कान में धीमे से बुदबुदाया—"ऐसा धांसू सीन तुमने किसी पिक्चर में भी नहीं देखा होगा। आओ, हम रिहर्सल करें।"

—"तुम कभी सीरियस नहीं रह सकते विजय !" अलफांसे मुस्कराता हुआ बोला—"तुम्हारे जीवन में कितना जबरदस्त परिवर्तन आया है। तुम इस इस्टेट के वारिस हो। पारो तुम्हारी दादी है, लेकिन तुममें कोई परिवर्तन नहीं आया, मानो तुम्हें अपने जीवन में होने वाली इन घटनाओं का कुछ पता ही न हो।"

—"प्यारे लूमड़ भाई !" विजय किसी बुजुर्ग की भांति बोला—"ये तो साले जिन्दगी के चक्कर हैं—चलते हैं, चलने दो। आओ, हम किसी प्यारी-सी झकझकी की रचना करें।"

—"गुरु !" उसके दायें कान में धीमे से झुककर विकास बोला—"आपको यह बात तो माननी पड़ेगी कि यहां सीन फिल्मी बन गया है लेकिन गुरु, फार्मूले के अनुसार ऐसे सीन में मजा नहीं आता जब तक गाना न हो, इसलिए पेशे खिदमत है मौका-ए-वारदात पर असली घी में तली हुई एक दिलजली।"

पलटकर विजय ने विकास को देखा—फिर ऐसा चेहरा बनाया मानो हलक में कुनैन की गोली पड़ी हो, बोला—"प्यारे दिलजले, मैं तुमसे बात नहीं कर रहा हूं।"

—"लेकिन मैं आपसे ही बात कर रहा हूं गुरु !" विकास

शरारत के साथ मुस्कराया।

—"देखो लूमड़ मियां!" विजय अलफांसे की ओर झुककर बोला—"डालडा युग में शिष्टाचार तो किसी चिड़िया का नाम ही नहीं है—यानी कि शिष्टाचार जरा भी नहीं जानते।"

—"जो बात गुरु नहीं जानते, वो चेला कैसे जानेगा?" अलफांसे ने मुस्कराकर विकास का पक्ष लिया।

एक बार तो विजय कटकर रह गया, फिर बोला—"बेटा लूमड़ खान! तुम इस लड़के···"

लेकिन—

विजय को अपनी बात बीच में ही रोक देनी पड़ी। उधर ठाकुर साहब पारो को खड़ी कर चुके थे। इस समय वे विजय की ओर संकेत करके पारो से कह रहे थे—"ये सूअर है मां—तुम्हारा पोता।"

—"विजय!" पारो के मुंह से प्रसन्नता में डूबा स्वर निकला—"यह है मेरा बेटा—मेरा विजय!" कहती हुई वह पागलों की भांति विजय की ओर दौड़ी और उसने भावावेश में विजय को अपने वक्ष से चिपटा लिया।

जबकि—विजय के चेहरे पर सम्पूर्ण संसार की मूर्खता नृत्य कर रही थी। पारो की इस हरकत पर वह बुरी तरह बौखला गया और अभी तक उसके चेहरे पर बौखलाहट के ही भाव थे। अन्य लोगों पर तो विजय की इस हरकत की जो प्रतिक्रिया हो रही थी—वह तो दूसरी बात है, परन्तु ठाकुर साहब के होंठों पर क्रोध के भाव अवश्य थे। वे विजय की इसी नालायकी से परेशान थे और विजय यही नहीं छोड़ता था लेकिन इस समय वे कुछ बोलने की स्थिति में नहीं थे।

—"मैं तुम्हारी बदनसीब दादी हूं बेटे! तुम्हें आज पहली

बार देखा है !" पारो भावावेश में बोली।

—"मैं तुम्हारा बदनसीब पोता हूं दादी मां !" विजय बौखलाकर पारो जैसी टोन में बोला—"तुम्हें आज मैं पहली बार देख रहा हूं।"

अभी पारो कुछ कहना ही चाहती थी कि ठाकुर साहब पारो के समीप पहुंचे और प्यार से अपनी मां की पीठ पर हाथ रखकर बोले—"ये अजय है मां !" उनका संकेत ब्लैक ब्वॉय की ओर था—"अभय का लड़का।"

पारो ने ब्लैक ब्वॉय को भी गले से लगाया और उसके बाद ठाकुर साहब ने कहा—"ये विकास है—रैना का लड़का। ये सुपर रघुनाथ है—हमारा दामाद।"

ठाकुर निर्भयसिंह ने सबका परिचय दिया। पारो सबसे लिपट-लिपटकर खूब रोई। कदाचित प्रसन्नता के कारण वह खूब रोई थी। वातावण गम्भीर बन गया था। केवल विजय एक ऐसा आदमी था, जो जल्दी-से-जल्दी इस माहौल से छुटकारा पाना चाहता था। अलफांसे सोच रहा था, पारिवारिक सुख भी क्या है? जो उसे कभी नसीब नहीं हुआ। अलफांसे की आंखें हल्के से डबडबाकर रह गईं।

सबने पारो को चुप किया। तब पारो बोली—"जीवन में शायद आज पहली बार मैंने खुशी देखी है। मेरे जिगर के कितने टुकड़े न जाने कहां-कहां भटक रहे थे ! आज पहली बार मैंने सबको इकट्ठा देखा है। लेकिन मेरा अभय मुझको नजर नहीं आ रहा है ! कहां है मेरा बेटा ?"

—"मैं यहां हूं मां !" दरवाजे से आवाज आई।

सबने पलटकर उधर देखा, दरवाजे पर अभयसिंह खड़े थे।

उसके बाद झपटकर पारो और अभयसिंह मिले।

अभी वे मिल ही रहे थे कि—

—"फांरो !" वहां एक प्रभावशाली आवाज गूंजी।

सबने झटके के साथ पलटकर देखा, दरवाजे पर सुनहरा नकाबपोश खड़ा अपना घुटना खुजा रहा था। क्रांति के देवता पर दृष्टि पड़ते ही सब सतर्क हो गए। एक ही पल में वहां सन्नाटा छा गया।

—"यह समय भावनाओं में बहने का नहीं है।" क्रान्ति के देवता की प्रभावशाली आवाज गूंजी—"आप लोगों को यहां एक ही स्थान पर मैंने इसलिए इकट्ठा किया है ताकि आप आगे का प्रोग्राम बना सकें। हमारा वतन खतरे में है। अभयसिंह, हमें भावनाओं में नहीं बहना है। कोई यह न समझे कि कोई किसी का पुत्र है, मां है, पोता है। आप सबके लिए यह मेरा आदेश है कि आपके बीच वतन से हटकर एक बात भी नहीं होगी।"

सब चुपचाप 'क्रान्ति का देवता' की आवाज सुन रहे थे।

—"मिस्टर विकास, जो जलपोत के नष्ट होने में हमसे बिछड़ गए थे, हमें पता लगा कि माइक से टकराने के बाद जंगल में भटक रहे थे। यहां तुम्हें नम्बर चालीस छोड़ गया है। मिस्टर अभयसिंह विजय और गुलफाम को यहां लाए। मुझे अभयसिंह से कुछ विशेष बातें करनी थीं जिनके कारण इन्हें यहां लौटने में ही कुछ देर लगी। अलफांसे, रैना, निर्भयसिंह इत्यादि को ग्रीफित के मेकअप में गुलफाम उड़ाकर लाया था। कुछ देर पश्चात् गुलफाम भी यहां आने वाला है। आप लोगों के दिमाग में जो गुत्थियां हों, वे एक-दूसरे से बात करके सुलझा लें। फिलहाल हम यहां से प्रस्थान करते हैं।" कहने के पश्चात क्रान्ति का देवता वहां एक पल भी नहीं ठहरा।

कानवीन